Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

२०३८ [मासिक] फरवरी मार्च १६८२

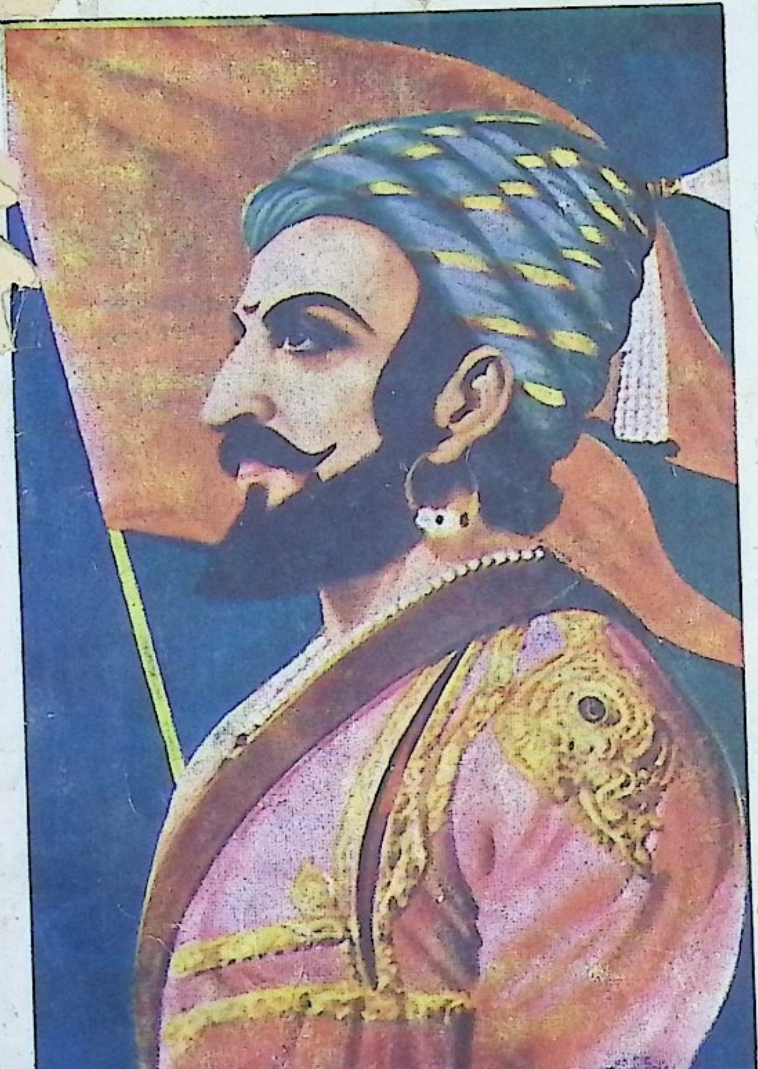

जागी है भवानी वीर शिवा की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज शांताक्रूज़ बम्बई के उत्सव में स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रवचन दे रहे हैं। अधिकारी गण समीप बैठे हैं।

कु० दिव्या कक्षा-५
जिसकी कविता ने भारत सरकार को भी हिला दिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादक
राकेशरानी

दूरभाष : ५६२६३९
५६४७४१
८०१२११
पता :
करौलबाग, नईदिल्ली-११०००५
वार्षिक शुल्क २५ रुपए
विदेश में ६ पौंड : विमान से
३ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन : ५०१ रुपये
यह प्रति : २)२५ रुपये
फाल्गुन संवत् २०३८
वर्ष १३ : अंक १०

अब शंख बजाओ !

वीणा-शहनायी बन्द करो,
अब शंख बजाओ।
भारत माँ के वीर सपूतो,
अब तो जागो, देश बचाओ।
अर्घ्य चढ़ाओ, माँ मन्दिर में,
शीष पुष्प का, रक्त तिलक से,
चन्दन सिर पर आज लगाओ !
शंख बजाओ !!

जीवन के चर्चित स्वप्नों में,
अग्नि दहकती फैल रही है।
प्राणों की सस्मित भाषा में,
विष कटुता का भरा हुआ है।
तुम जीवन की बगिया के स्वर,
कब तक प्रहरी बचा सकोगे ?
माँ का मन्दिर टूट गया यदि,
कैसे मस्तक उठा सकोगे ?

शैतानी पंजों को तोड़ो, छोड़ो
आज विनय का कंपन।
प्राण ! मिटा दो उन हाथों को,
बाँध रहे जो माँ को बन्धन !
नवल प्रभाती, सूर्य किरण से,
नयी उषा का अभिनन्दन कर।
विजय वरण की करो तैयारी,
शीश सजा कर, प्राण दीप्त कर !

माँ के बेटो, शत्रु दलन का
एक नया इतिहास लिखो अब,
विजय गुंजाती है रण भेरी,
माँ के वीर सपूतो जागो।

खंड-खंड जो मूर्ति हुयी है,
उसको एक बनाना होगा।
जो भी पथ में रोड़ा आए,
उसको स्वयं हटाना होगा।
माँ का मन्दिर प्राण दीप से
अभिनव गान सजाना होगा।
दुश्मन चाहे जो भी होगा
उसको तुम्हें मिटाना होगा
बल से शंख बजाना होगा।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये !

१. अब शंख बजाओ (कविता)—राकेशरानी ३
२. उपदेश मां का ५
३. सम्पादकीय ७
४. मैं हृदयमन्दिर से लिख रहा हूं १३
५. उस महान् ब्रह्म को प्रणाम (वेदोपदेश)—सुरेशचन्द्र वेदालंकार १७
६. देश की रक्षा के लिए—ब्रह्मचारी सत्यदेव "अनन्तांशु" २२
७. मंगलप्रभात—सुरेशचन्द्र वेदालंकार २५
८. दिग्भ्रमित धर्मनिरपेक्षता—बुद्धिप्रकाश आर्य २८
९. सामयिक विचार—सत्यपाल शास्त्री ३३
१०. हैदराबाद को मिनी-पाकिस्तान बनाने के नापाक इरादे ३७
११. अब तक तेरी नींद न टूटी (कविता)—राजेश्वर ४०
१२. पाकिस्तानी मुसलमान दरिन्दों द्वारा
अमानवीयता का नंगा नाच—करतारसिंह दुग्गल ४१
१३. हृदयरोग : बचने का उपाय—डा० राजन ४३
१४. बाल संसार ४६
१५. विश्व का आठवां आश्चर्य !—विनम्र सेवक ४७
१६. सन् १९५७ की क्रान्ति और स्वामी दयानन्द—हंसराज खादिम ४९
१७. खांसी का प्राकृतिक इलाज (स्वास्थ्य)—महात्मा जगदीश्वरानन्द ५८
१८. उपनिषदों की कथाएं (आध्यात्मिक सत्संग) महात्मा नारायण स्वामी ६५
१९. आयुर्वेदसम्मत हेमन्त ऋतुचर्या ७८
२०. नशीली रसीली लहर (सोमसरोवर)—स्व० पंडित चमूपति ८०
२१. आपही के पत्र ८१
२२. इथियोपिया में मुसलमानों ने क्या किया !—"विनम्र सेवक" ८८
२३. मिशनस्कूल या बूचड़खाना—जहीर नियाजी ९२
२४. यदि मैं भारत का प्रधानमन्त्री होगा ?—प्रो० रामसिंह ९७
२५. हिन्दू रक्षा समिति के नेताओं की हैदराबाद यात्रा १०१
२६. या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्त्ति संयमी—डा० कृष्णलाल १०७
२७. महात्मा वेदभिक्षुः का वक्तव्य १०९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाग उठी है आज हिन्द में, फिर से शिवा भवानी,
देश धर्म की रक्षा करनी, शपथ यही है ठानी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनता की बेहद मांग पर

जन-ज्ञान का

आजीवन शुल्क ३१-३-८२ तक
३०१) स्वीकार किया जाएगा

साथ में ५१) का साहित्य
उपहार में मिलेगा

५ सदस्य बनाकर आप
उनका धन १००) भी
३१ मार्च तक भेज सकते हैं
शीघ्रता करें—आगे बढ़ें

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपदेश : माँ का...

प्रभु के चरणों में बैठना सब के भाग्य में नहीं होता। जो आत्माएं अपने दुर्गुण दूर कर पवित्र शुद्ध होकर—आत्म तत्व का दर्शन करती हैं उन्हें ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

वेद कहता है—

मधु वार्ता ऋतायते मधुँ क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्न सन्त्वोषधोः ॥ ऋ० १ । ९० । ६ ॥

(ऋतायते) सत्याचरण वाले पुरुष के लिए (वाताः) वायु (मधु क्षरन्ति) मधुवर्षण करती हैं (सिन्धवः) सब नदियां (मधु क्षरन्ति) मधु वरसाती हैं, (नः) हम उपासकों के लिए (ओषधीः) गेहूं, चावल, चना आदि सब अन्न (माध्वीः सन्तु) मधुरतायुक्त होवें।

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ १ । ९० । ७ ॥

(नक्तम् मधु) हमारे लिए रात्रि मधु हो (उत) और (उषसः) प्रातःकाल मधु हो (पार्थिवम् रजः) पृथिवी के ग्राम नगरादि (मधुमत्) माधुर्ययुक्त हों (नः) हमारे लिये (पिता) वरसात करने से हमारा सब का पालन करने वाला (द्यौः) द्युलोक (मधु अस्तु) मधुवत् सुखप्रद हो।

इन दोनों मंत्रों को यदि आप ध्यान देकर पढ़ेंगे तो आप को ज्ञात होगा कि कि मधु की वर्षा, जीवन को सब गुणों से युक्त करती है। जो आत्मा सत्य पर आचरण करता है वह मधु मय हो जाता है और संसार के सब पदार्थ उसे प्रिय लगते हैं और वह संसार के पदार्थों को प्रिय लगता है।

जीवन का प्रत्येक क्षण, वह दिन हो या रात, उसके लिए प्रिय होता है। वह जीवन से भागता नहीं अपितु जीवन के क्षणों को वह आनन्द से जीता है।

आपका जीवन कैसा है, स्वयं देखिए और सोचिए क्या खोया क्या पाया आप ने, आपको जीवन प्रिय होगा, सब को आप प्रिय होंगे तो प्रभु का सामीप्य आपको मिलेगा।

और उस प्रिय का दर्शन कर जीवन में सब अभाव शून्य हो जाते हैं। आनन्द ही आनन्द चारों और वरसता है। प्राण सजते हैं।······वह मिलता है जिसे आप ईश्वर कहते हैं।

मधु मय आनन्द की तीव्र गंध,
मेरे मानस में भर प्रकाश,
देती है गति प्राण सुधा को,
नव जीवन दे चिरदुलार।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरा संकल्प

मैं जन-ज्ञान के विचारों से सहमत हूं।

धर्म युद्ध में विजय के लिए रु० प्रतिमाह तारीख को तीन वर्ष तक नियमित रूप से भेजने का संकल्प लेता हूं।

दिनांक हस्ताक्षर ……

नाम व पूरा पता……………………

……………………

……………………

इसे भरकर भेजें

सेवा में,

श्री आचार्य

दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

हम सिर देंगे–पर............
मां का मस्तक नहीं झुकने देंगे

हमारा संघर्ष न ईसाई से है, न मुसलमान से है। वस्तुतः हमारा संघर्ष उनकी उस विचारधारा से है जिसने उनको मानवता के नैतिक मूल्यों से वंचित कर रखा है।

मनुष्य का निर्माण उसकी शिक्षा ही करती है और जब बचपन से ही किसी को यह सिखाया जाए कि जो तुमसे विचार भेद रखे, उसे जीवित न रहने दो, तो आप ही बताइए संसार में शान्ति कैसे स्थापित रह सकती है?

मुसलमानों के महज़बी ग्रन्थ कुरान में (मं० ७। सि० २८ सू० ६६ आ० ९) लिखा है कि—ऐ नबी! झगड़ा कर काफिरों और गुप्त शत्रुओं से और सख्ती कर ऊपर उनके।

आप ही सोचिए यह शिक्षा जिन्हें उनका ईश्वर देता हो तो वे इसे मानकर क्या किसी से प्रेम कर सकते हैं? इस पर टिप्पणी करते हुए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि—

परमात्मा मुसलमानों पर कृपा दृष्टि करे, जिससे ये लोग उपद्रव करना छोड़ के सब से मित्रता से वर्तें। यही हमारी भी कामना है कि संसार के मुसलमान भाई ऐसी शिक्षा ग्रहण करें जो प्यार, समानता, और नैतिकता के ऊंचे आदर्शों पर आधारित हो।

ऐसे ही ईसाईयों की बाइबिल भी कहती है कि—परमेश्वर तुम्हारे लिए युद्ध करेगा?

जिनका ईश्वर भी पक्षपाती हो युद्ध करे, जो पुस्तक चोरी-व्यभिचार और बेईमानी की प्रेरणा करे, जिसमें अध्यात्म, प्रेम-नैतिकता का नाम भी न हो, उस पुस्तक के अनुयायियों से क्या आप कोई अच्छी आशा कर सकते हैं।

इसलिए आज आवश्यकता है कि संपूर्ण हिन्दू समाज अपने पूरे बल से मुसलमान और ईसाइयों को यह समझाने का प्रयत्न करे कि तुम्हारा मजहब ईश्वर कृत नहीं, इसलिए आओ उस पवित्र ज्ञान की शरण में, जो अमृत की पावन गंगा का प्रसाद बाँटती है।

हम सदा से एक हाथ में प्यार और एक हाथ में दुष्ट दलन की शक्ति लेकर बढ़े हैं। हमने रावण की आसुरी भावना को मिटाया है, रावण से द्वेष नहीं किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज भी हमारा संघर्ष उस पशुता के विरुद्ध है जो धन बल से भारत की आजादी और धर्म को मिटाने का निश्चय कर अपने षड़यन्त्रों में लगे हैं।

क्या हमें यह अधिकार नहीं कि हम अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकें ?

क्या हमें यह अधिकार नहीं कि देश को विघटित करने वाली शक्तियों को हम मिटा सकें।

क्या हमें यह अधिकार नहीं कि हम वेद—उपनिषद, गीता-गायत्री, गौ, गंगा की रक्षा कर सकें—

कोई कुछ भी कहे पर हमें इन सब की रक्षा का अधिकार है। यह कर्तव्य था भारत सरकार का,—कि वह इन सब की रक्षा करे किन्तु सरकार यदि विवश है तो हम राम-कृष्ण के अनुयायी घोषणा पूर्वक कहते हैं कि—

जो भी वेद-शास्त्र-उपनिषद-गीता की परम्परा को नष्ट करना चाहेगा हम उसे क्षमा नहीं करेंगे और उसके षड्यन्त्र समाप्त करने के लिए हम प्रत्येक सम्भव पग उठाएंगे।

—हम भारत की आजादी, एकता पर प्रहार करने वालों को समूल नष्ट करेंगे।

भारत हमारा है, हम भारत के हैं—इसकी स्वतन्त्रता मानवता के स्वर्णिम मूल्यों की प्रखर किरण है। भारत की राष्ट्रीयता का स्वर अब जाग रहा है। हिन्दू की वीणा अब शंख ध्वनि के रूप में प्रगटी है। इसलिए कल उन का नहीं होगा, जो हमें मिटाने आए हैं, उनके पाशविक मूल्यों को मिटना होगा और कल हमारा होगा यही सत्य है, यही सत्य है, यही धर्म है।

जो भी इन पंक्तियों को पढ़े वह सोचे और शंखध्वनि में हमारे साथ आए। जो हमारे साथ आएगा, भारत पर उसको अभिमान होगा। ध्वजा हमारी हिमालय पर—देवस्थानों पर लहराएगी, आसुरी प्रवृत्तियों को मिटाएंगे, देशद्रोही समाप्त करेंगे, और माँ की पावन माटी की शपथ—

हम सिर देंगे—पर
मां का मस्तक नहीं झुकने देंगे।

अंग्रेजियत का साम्राज्य

अंग्रेजों का साम्राज्य तो हमने हटा दिया, पर अंग्रेजियत के प्रभाव को हमने स्वयं अपने ऊपर लाद लिया।

पैंट-कोट-टाई और बोल-चाल में अंग्रेजी भाषा हमारी प्रतिष्ठा का मापदंड बन गयी है। बड़े से बड़ा व्यक्ति भी आज टाई बांधने में गौरव अनुभव करता है।

हमारी दृष्टि में यह पतन की पराकाष्ठा है। विदेशी वेश भूषा अपनाकर हम अपने स्वाभिमान को जला रहे हैं। राष्ट्रीय गौरव की उदात्त भावनाएं नष्ट हो रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राण ! एक बार फिर उस क्रांति की अलख जगानी होगी जिसमें अंग्रेजियत के प्रतीक धू-धू कर जल उठें। पर प्रश्न उठता है कि कौन जलाएगा वह अग्नि, क्योंकि समय के प्रभाव से अछूता तो कोई भी दिखायी नहीं पड़ रहा !

क्या माँ भारती के पुत्र अंग्रेजियत का कफन उतार फेंक कर पवित्र होना चाहेंगे ?

अब मस्जिदें बनेंगी

मन्दिर नहीं बनेगा, अब मस्जिदें बनेंगी,
गीता के गान रूठे, अब महफिलें सजेंगी।
तुम भूल जाओ सब कुछ, लुटता वतन न देखो,
जो आग लग रही है, उस को भी तुम न देखो,

जब घर घिरेगा सारा, सब कुछ समाप्त होगा,
तब हाय, हाय करना, किस काम आएगा तब,
मेरे वतन के नेता, गद्दी को चूमते हैं।
मदिरा में मस्त होकर, दिन रात झूमते हैं।

वह पूर्व की दिशा में, क्या क्रास लग रहे हैं।
माता के भाल को वे सब त्रास दे रहे हैं
हर घर में, अब गली में, कुछ साँप पल रहे हैं
जिन्दा हैं हम सभी पर, कैसी है यह कहानी,
जो देश भक्त हैं वे सब आज मर रहे हैं।

वोटों की राजनीति विघटन बढ़ा रही है।
निर्धन को, हरिजनों को, नीचे चला रही है।
मंदिर पै आँच आयी, गिरजा में दीप जलते,
मस्जिद में रौनकें हैं घर-घर चिराग जलते,

हम तुम से पूछते हैं क्या देश का बनेगा,
जल जाएगा सभी जब, क्या वेश का बनेगा ?
ओ वेद के पहरुओ, ओ राम के उपासक,
गंगा के गीत गायक, ओ धर्म के विधायक,
कैसी है यह विषमता, तुम को पता नहीं है।
क्या आज हो रहा है, तुम को पता नहीं है।

है जागरण की वेला, अब शंख फूंक दो तुम
भगवान कृष्ण वंशज, तुम चक्र को उठाओ,
सत्य को बचालो, तुम पाप को मिटा दो।
सोना तो छोड़ दो अब, तुम देश को बचा लो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू मुर्दाबाद ! इस्लाम जिन्दाबाद !

स्वतंत्रता की प्रथम किरण के साथ आशा का संकल्प जागा था, इस कामना के साथ कि अब भारत का गौरव ध्वज भू मंडल पर फहराएगा। किन्तु आज ३५ वर्ष के बाद भी हम गुलामी के जीवन से भी अधिक नीचे की सीमा रेखा पर जी रहे हैं।

हमें मिटाने की तैयारियां हो रही हैं। हमारे वेद-शास्त्र-उपनिषद् अध्यात्म के स्वरों को समाप्त करने के षड़यन्त्र, धन बल पर चलाए जा रहे हैं।

हम अपने घर में, अपने देश में अपने उत्सव नहीं मना सकते ! अपने मन्दिरों में कीर्तन नहीं कर सकते, विवाह की वेला में बारात निकालना भी उनकी दया पर ही आश्रित है, जो मां के टुकड़े करा कर अपना भाग ले चुके हैं।

हम एक साथ नहीं रह सकते, इस नारे के साथ अलग घर—पाकिस्तान ले लेने के बाद भी उन्हें हर प्रकार की स्वतन्त्रता है। शिक्षा देने की, विवाह की, नमाज की, जलूस की, दंगे करने की, देशद्रोह की, गुंडागर्दी की, हिन्दुओं को कत्ल करने की इन को खुली छूट है। और अगर हिन्दू जरा सी भी शिकायत करे तो···उसके लिए तो यह भी अपराध है।

वे तिरंगा जला सकते हैं, पाकिस्तान की जीत पर खुशियां मना सकते हैं। मूर्तियों के टुकड़े कर सकते हैं। धर्म स्थानों का अपमान कर सकते हैं और हिन्दू केवल पिटने के लिए ही पैदा हुआ है।

हमारे राजनैतिक नेता हिन्दू हैं, पर मुसलमानों-ईसाइयों के चरण चुंबन की कला में निष्णात, गो हत्या के लिए रोक नहीं, वे अज़ान की बांग दें, और हम अपना शंख मौन रखें, वे छुरा चलाएं और हम मुस्करा कर कत्ल हो जाएं, कूच कर जाएं इस जमीं से, वे जलाएं हमारे घर, हम भी जलें और घर भी जले पर शिकायत भी करना हमारा अपराध······

अब तो एक ही रास्ता है—कि हम भी नारा लगाएं···

इस्लाम जिन्दाबाद।
इस्लामिस्तान जिन्दाबाद !
भारत माता मुर्दाबाद,
हिन्दू धर्म मुर्दाबाद !!

तस्वीर का यह एक पक्ष है। यह पक्ष शासन का है। आज के बड़े सैक्यूलर हिन्दू का है। नेताओं का है। और जिसे जिन्दा रहना है उस···को भी यही पक्ष लेना होगा।

पर मैं एक सवाल आप के दरवाजे पर लेकर आयी हूं कि क्या हमें भी इसी हवा में बहना होगा ? क्या यह सब कुछ सेक्यूलरिज्म के नाम पर सहना होगा।······ मैं नहीं जानती कि आप का उत्तर क्या होगा, पर मेरा उत्तर साफ है···खुला है, हम इस हवा में—इन नारों में जीने से मरना अच्छा समझते हैं और आज शासन के शर्मनाक रवैये के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राम-कृष्ण-शिवा-प्रताप की धरती पर अकबर-औरंगजेब का झंडा हम नहीं फहरने देंगे। भारत माता के टुकड़े जब होने थे हो गए, अब मां के सिन्दूर और चरणों की शपथ, हम देश की अखंडता को नष्ट नहीं होने देंगे।

कायरों की बोली कोई बोलता रहे, इस्लाम के आगे घुटने टेकता रहे, पर मेरा मन ओ३म् के झंडे को लेकर बढ़ता हुआ, भगवान कृष्ण के सुदर्शन चक्र के बल से बली है। गांडीव की टंकार से मेरी वाणी सबल स्वर का उद्घोष कर रही है और परमात्मा की वाणी के स्वर में मैं कहती हूं वयं जयेम्—हम जीतेंगे—सत्य जीतेगा, धर्म, हिन्दू धर्म जीतेगा और भारत में हिन्दू अब दबकर नहीं, उभर कर रहेगा और बहुत शीघ्र निकट भविष्य में हम भारत को "हिन्दू राष्ट्र" घोषित करेंगे।

नमाज के लिए शंख ध्वनि अब नहीं रुकेगी ? मस्जिद के आगे बाजे शान से बजेंगे। भारत माता की जय का स्वर अब गूंजेगा और भारत को ईसालैंड और इस्लामिस्तान बनाने का सपना देखने वालों को कठोरतम दण्ड दिया जाएगा।

धधक उठी है अग्नि आज फिर ज्ञान-धर्म की शक्ति साथ ले, और समझ लें सब ही नेता, वे दिन गए जब मियां फाक्ता उड़ाया करते थे, अब तो धर्म का डंका बजेगा, जहरीले मजहब की आंधी, जो तलवार और खून के बल से बली थी, भारत के लौह लाड़ले उसे गंगा की गहरी धार में डुबा कर अमृत बना देने का संकल्प ले चुके हैं।

देश का हिन्दू जाग गया है। वह उठ रहा है, और वह समय दूर नहीं जब २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस पर राष्ट्र हिन्दू राष्ट्रपति को सैनिक अभिनन्दन अर्पित करेगा।

नेताओ ! आंखें खोलो और ईसाई-मुस्लिम परस्ती बन्द करो ! कहीं ऐसा न हो कि उनके हिमायती भी समय के प्रवाह में भेंट चढ़ जाएं।

बहुत सह लिए अत्याचार, बहुत मिट लिए हिन्दू, अब नया युग, नयी अंगड़ायी लेकर आया है······और हम घोषणा करते हैं कि जहां किसी हिन्दू का पसीना गिरेगा, वहां हमारा खून बहेगा। हम भारत में अब हिन्दू को दलित, अपमानित, पीड़ित नहीं होने देंगे। क्रान्ति का नया दौर हिन्दू विजय का घोष है। आने वाला युग हिन्दू की जय का होगा भारत के हर नागरिक को यहां प्यार से, समानता से रहने का अधिकार होगा पर कोई तलवार दिखाकर हिन्दू को, हिन्द को अपमानित कर भारत में न रह सकेगा। यह सत्य सभी जितना शीघ्र समझ लें, उतना ही उत्तम है।

मुझे आप की शाब्दिक सहानुभूति नहीं, व्यावहारिक सहयोग चाहिए। जिस लक्ष्य को लेकर मैं चल रही हूं उसे आप मेरे बाद भी चलाते रहें। धमकियां और विरोध में खड़ी आप सबसे मैं काम करने की प्रार्थना कर रही हूं—सुनेंगे ?

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस माह के विशेष समाचार

१. पंडिता राकेशरानी को पुनः गिरफ्तार किया गया। ४ हजार की जमानत व ४०००) के मुचल के पर रिहा किया गया।

२. हैदराबाद में १० जनवरी को कार्यकर्ता सम्मेलन ! रात्रि को विशाल सार्वजनिक सभा।

३. २४ जनवरी को अखिल भारतीय कार्यकारिणी की बैठक।

४. ३० जनवरी को दिल्ली में धर्मवीर हकीकत राय का बलिदान दिवस मनाया गया। हिन्दू रक्षा सम्मेलन महात्मा वेदभिक्षु: की अध्यक्षता में सम्पन्न।

५. ३१ जनवरी : मकराना में हिन्दू कार्यकर्त्ताओं की बैठक : स्टेशन पर स्वागत व मार्च में हिन्दू सम्मेलन का निश्चय।

६. शाहगंज (जौनपुर) में मुसललानों का जलूस ७ मार्च को विशाल सम्मेलन। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के प्रयत्नों से रुका।

. २ फरवरी : ३० जनवरी के उर्दू ब्लिटज में दयानन्द संस्थान के विरोध में २ पृष्ठों का एक चुनौती पूर्ण लेख छपा ! जिसके परिणाम स्वरूप धमकियां मिलनी आरंभ। उसे देखिए !

भाइयो और बहनो

क्या आप जानते हैं कि हमारे देश पर इतना भयकर संकट आया हुआ है। शायद आपने जनज्ञान का अक्टूबर अंक पढ़ा हो। उसमें एक दिव्या नाम की लड़की की कविता थी, जिस पर सरकार ने केस चला दिया है। एक छोटी सी मेरी कविता से जब सरकार हिल सकती है तो आप ही सोचिए कि जब आप लोग जायेंगे तब देश देशद्रोहियों की मनोवृति का क्या होगा ? क्या वह अपनी मातृभूमि भारत से भाग नहीं जायेंगे ? अन्यथा हमें दुबारा गुलाम बनना पड़ेगा धिक्कार है उनके ऊपर जो मां के साथ गद्दारी कर रहे हैं। क्या भूल गए उन वीरों की कुर्बानी जिन्होंने अपनी भारत माँ के लिए जान तक देने में हिचकिचाहट नहीं की। अगर आप भी सो रहे हैं तो जागिए, हम भी आपके साथ हैं। यह मेरी प्रार्थना है।

वन्देमातरम्

—**दिव्या**

(१० वर्ष)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

—वेदभिक्षुः

मैं ह[illegible]न्दिर से [illegible] लिख रहा हूँ~

हम मरने के लिए तैयार हैं, पर हमारा "विजय शंख" जीवन के अंतिम श्वास तक बजता ही रहेगा

हिन्दू रक्षा समिति के कार्यों से देशद्रोही मुसलमान तत्त्व बौखला उठे हैं। ३० जनवरी के उर्दू ब्लिट्ज में उन्होंने हमारे द्वारा प्रसारित साहित्य के विरुद्ध विष उगला है। उनका हम हृदय से धन्यवाद करते हैं।

हमें प्रसन्नता है कि हमारे कार्यों का प्रभाव सामने आने लगा है। एक ओर जन-ज्ञान पर आक्रमण, दूसरी ओर दयानन्द संस्थान को मिटाने का षड्यन्त्र, हम इन प्रहारों का स्वागत करते हैं।

हम विश्वास दिलाते हैं कि—हम झुकेंगे नहीं, टूट भले ही जाएं, हमारा अभियान जारी रहेगा और हम भारत मां की स्वतन्त्रता, एकता, अखंडता के लिए गौ-गंगा-गायत्री, वेद-शास्त्र और सत्य सनातन वैदिक-हिन्दू धर्म की रक्षा अपना सर्वस्व देकर भी करेंगे।

हमें अपने परमात्मा का विश्वास है, और देश के लौह लाड़लों पर भरोसा। स्वतन्त्रता के लिए यदि हमारे वीर फांसी के फंदों को चूम सकते हैं तो स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए भी बलिदान परम्परा जारी रहेगी।

हमारा नारा है—कि हम—
देशद्रोही तत्वों को कुचलेंगे।
ईसालैंड व इस्लामिस्तान का सपना जलाएंगे।
सांप्रदायिक शक्तियों को मिटाएंगे!

हमें खूब धमकियां मिल रही हैं पर हमें यह कहना है कि अभी ऐसा कोई अस्त्र नहीं बना जो हमें मार सके। हम अमर हैं। हमारी अमरता ही हमारी विजय शक्ति है।

अपने सदस्यों-प्रशंसकों—और सहयोगियों से हमें कहना है कि जो चुनौती हमने स्वीकार की है उसे आप भी स्वीकार कीजिए और संकटों को ठुकराते हुए 'ओ३म्' ध्वज उठा कर आगे बढ़िए।

विजय हमारी होगी।
सत्य की होगी।
धर्म की होगी।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मकराना यात्रा

सारे देश के मन्दिरों, महलों को अपने संगमरमर से चमकाने वाला मकराना आज मुस्लिम सांप्रदायिकता और पाक समर्थक देशद्रोही तत्वों का गढ़ बन गया है। वहां ८० प्रतिशत मुसलमान हैं और उनमें से अनेक करोड़पति हैं।

वहां के समाचार सुनकर हम वहां पहुंचे। समिति के प्रधानमन्त्री प्रो० धर्मवीर और उत्साही युवक शशिकान्त आर्य हमारे साथ थे। हमारी गाड़ी १-३० पर मकराना पहुंची। सारा स्टेशन ओ३म् ध्वजाओं से भरा था। नारे लगाते हुए हमें वे जन-सभा स्थल तक ले गए। पुष्प मालाओं का बोझ उतना ही था जितना जनमानस का उत्साह।

३ बजे से रात्रि १० बजे तक सभाएं—बैठकें चलती रहीं। भय की छाया धीरे-धीरे हट रही थी, और जाग रहा था उत्साह का सूरज······हिन्दू रक्षा समिति वहां मार्च के अंतिम सप्ताह में गायत्री महायज्ञ व विशाल हिन्दू रक्षा सम्मेलन का आयोजन कर रही है। उत्साह उभर रहा है और संगठन के स्वर गूंजने लगे हैं। हम जहां भी हिन्दू पीड़ित हैं वहीं पर शक्ति लगा रहे हैं और उनमें निर्भयता की भावना आ रही है, यही हमारी विजय है।

परमात्मा हमें शक्ति दे कि हम भारत मां पर मंडराते बिखराव को समाप्त करने में अपने प्राणों की अंतिम सांस तक कार्य कर सकें।

अजमेर में कुछ घंटे

अजमेर एक ऐसा गढ़ है जहां से सदा धर्म की रक्षा के लिए प्रेरणा मिलती रही है। देव दयानन्द की अंतिम श्वासों ने वहां के कण-कण में प्रेरणा भर दी है और यही प्रेरणा आज केसरगंज आर्यसमाज के प्रधान श्री दत्तात्रेय वाब्ले के रूप में प्रगट हो रही है।

वे अनेकों शिक्षण संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं। ७५ वर्ष के युवा हैं—उन में कर्मठता, सूझ बूझ और सजगता है। आर्यसमाज के प्रचार की उद्दाम कामना उनका आलोक है। उनसे मिल कर एक नयी शक्ति—दिशा मिलती है। इस बार भी उनसे अनेक गम्भीर विषयों पर विचार विमर्श हुआ।

हमें विश्वास है कि उनका नेतृत्व आर्यसमाज को नया जीवन दे सकेगा।

कमर कस कर तैयार हो जायें

देश के देशद्रोही तत्वों द्वारा जो चुनौती देश भक्तों को मिली है उसका सामना करने के लिए आज हमें कमर कस कर तैयार हो जाना चाहिये। सभी कार्यकर्त्ता अपने क्षेत्र में हिन्दू रक्षा समिति का संगठन बनायें और इस बात का ध्यान रखें कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी वर्ग का क्यों न हो भारत की स्वतन्त्रता को हानि न पहुंचा सके। यदि कभी बाहर से विदेशी आक्रमण होता है और भीतर के सांप्रदायिक तत्व विधि द्वारा निर्मित शासन को उलटने का षडयन्त्र रचते हैं तो उनका सामना देश की देशभक्त जनता को करना होगा, और इसके लिए हमें अभी से तैयारी करनी होगी। सभी यह अच्छी तरह समझ लें कि भारत के वे मुसलमान और ईसाई जो भारत के प्रति निष्ठावान हैं और भारत को अपना मातृभूमि स्वीकार करते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं भारत के नागरिक होने के नाते सभी के साथ समानता के आधार पर रहने को तैयार हैं, उनके साथ हमारा कोई झगड़ा नहीं है। किन्तु जो आज भी मिस्टर जिन्ना और मुस्लिम लीग की नीति पर चलते हुए अपने रीति रिवाज और धर्म के नाम पर झगड़ करने की मनोवृत्ति के आदी हैं हमारा उनसे ही संघर्ष है और हम यह भी अनेक बार घोषणापूर्वक कह चुके हैं कि ऐसे देशद्रोही तत्वों को हम जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए कृतसंकल्प हैं।

भारत का हिन्दू सांप को भी दूध पिलाता रहा है किन्तु यह भी सच है कि वह सांप दूध पिलाने वाले को-अगर काटने के लिए सिर उठाता है तो उसका फुंकारता फन हमने सदा कुचला है और आज भी कुचलेंगे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि काश्मीर से कन्याकुमारी तक, द्वारिका से त्रिपुरा तक, नागालैंड से मिजोरम तक भारत के सभी नागरिकों के समान स्तर, अधिकार और कर्त्तव्य हैं। जन्म, जाति के आधार पर उनमें किसी प्रकार का भेद करना हम उचित नहीं समझते और जो भी ऐसी भेद की अग्नि को हवा देता है उसे हम देश का शत्रु समझते हैं और किसी भी देश के शत्रु को देश में ज़िंदा रहने का अधिकार देने के लिए हम तैयार नहीं हैं। आज मुसलमान बौखलाकर हम पर आक्रमण करने की योजनाएं भी बना रहे हैं और जगह-जगह जहर भी घोल रहे हैं लेकिन वे यह भलीभांति समझ लें कि आज भारत में अंग्रेजों का शासन नहीं है "फूट डालो और शासन करो" की नीति के कारण १९४७ में भारत माता के टुकड़े हो सकते हैं लेकिन आज हमें विश्वास है कि हमारा शासन इतना सशक्त है कि जो भी भारत माता के टुकड़े करने का यत्न करेगा उसे समूल नष्ट कर दिया जायेगा। अल्पसंख्यक होने के नाते जिन्हें विशेष स्थान चाहिए उनका स्थान भारत में नहीं है। क्योंकि इस नीति के अनुसार वे अपना भाग ले चुके हैं। मुसलमानों को उनका हिस्सा पाकिस्तान के रूप में दिया जा चुका है। आज भारतवर्ष में रहने का अधिकार केवल उनको है जो सांप्रदायिक मनोवृत्ति के शत्रु हों और देश की एकता और अखंडता के लिए प्राणों की आहुति दें। भारत एक है और एक रहेगा। पाकिस्तान तीन बार हमला करके देख चुका है। आज अरब देशों की शह पर वे भारत को फिर से इस्लामिस्तान बनाने का सपना भले ही देख लें लेकिन उन्हें यह समझ लेना चाहिये कि जिस पवित्र धारा को अकबर और औरंगजेब का शासन नहीं मिटा सका उसे मिटाने की शक्ति बड़े से बड़े शैतान में भी नहीं है। भारत के समस्त नागरिक एक हैं। उनकी एकता, मातृभूमि के प्रति भक्ति में निहित है। यहीं हमारी अजेय शक्ति है और इसी अजेय शक्ति को अपना कर गौ, गंगा और गायत्री की रक्षा के लिए हिन्दू रक्षा समिति संघर्ष कर रही है और करती रहेगी। मुसलमान भाई जो भलीभांति समझ लें कि "यह चिराग फूंकों से बुझाया न जायेगा।"

आप से पूछता हूं !

क्या आप अपने २० मित्र बना सकते हैं? यदि आपका उत्तर हां में हो तो हमारी प्रार्थना है कि आप अपने नगर, क्षत्र या मोहल्ले में २० सदस्य बनाकर उनका शुल्क और फार्म हमें भेज दें और विधिवत् हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना करें। हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं :—

१. भारत राष्ट्र की स्वतंत्रता, सुरक्षा, एकता और संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले तत्वों का।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२. मजहब के आधार पर आरक्षण, विशेष अधिकार व विधि-नियम मांगने की विघटनकारी प्रवृत्ति का।
३. विदेशी देशद्रोही शक्तियों के राष्ट्रघातक षड्यंत्रों का।
४. भारत के नागरिकों के लिए पृथक-पृथक राजनियम और अधिकारों का विरोध करना हमारा मुख्य उद्देश्य है।
५. साम्प्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता व चरित्र भ्रष्ट करने वाली विदेशी विचारधाराओं का।

इन उद्देश्यों को ध्यान से पढ़ लीजिए। यदि आप इनसे सहमत हों तो सदस्यता फार्म मंगवाकर स्वयं सदस्य बनिये और अपने मित्रों को भी बनाइये। हमारा कार्य स्वयं सुदृढ़ बनना है। किसी पर आक्रमण करने के लिए नहीं। अगर हम पर हमारे देश की आजादी पर कोई आक्रमण करता है तो उसका मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए हम पत्पर हैं।

जिस दिन हर गली, ग्राम और नगर में हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना हो जायेगी उस दिन किसी देशद्रोही में यह साहस नहीं होगा कि वह हमारी ओर टेढ़ी आंख से देख सके। इसलिए हमारा सबसे प्रथम कर्त्तव्य है संगठित होना। आप अपने दैनिक कार्यों को करते हुए भी अगर किसी संकट के समय एक आवाज पर इकट्ठे होने का स्वभाव बना लें तो फिर कोई भी शक्ति हमारे सामने खड़ी नहीं हो सकेगी।

सिद्धान्त रूप से सांप्रदायिकता का जहर किसी वर्ग में नहीं होना चाहिये। हिन्दू तो सांप्रदायिता से कोसों दूर रहता है फिर भले आज प्रान्तीयता, भाषावाद, क्षेत्रवाद के नाम पर जितनी सांप्रदायिक शक्तियों का उदय हो रहा है उन सभी की दुष्ट मनोवृत्ति को बदलकर उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर समानता के अधिकार के लिए प्रेरित करना हमारा कर्त्तय है। मुसलमान भी भारतीय धारा के साथ मिलकर रहें तो हमें सबसे अधिक प्रसन्नता होगी। इसी प्रकार ईसाई भी भारतीय परम्पराओं के अनुसार रहें और पूजा पद्धति में पूर्ण स्वतंत्रता रखते हुए भी राष्ट्रीय उन्नति के समस्त कार्यों में देश के साथ मिलकर चलने का संकल्प लें तो सारी समस्यायें हल हो जायें। हम मूलतः मुसलमान और ईसाईयों के विचार और चिन्तन में आमूल परिवर्तन चाहते हैं। अरब देशों के प्रति उनकी आस्था जब तक रहेंगी तब तक वे भारत के प्रति कभी भी वफादार नहीं बन सकेंगे। हमारी समस्या बनी रहेगी, संघर्ष जारी रहेगा, किन्तु फिर भी हम प्रयत्न करते रहेंगे।

धन दीजिए !

कार्य की दृष्टि अब किसी किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं कि एकमात्र हिन्दू रक्षा समिति ने ही प्रभावपूर्ण कार्य किया है। हमने धन संग्रह नहीं, कार्य किया है, जिसके कारण आज हमारे पास कार्य के लिए भी धन नहीं है। आप उदारतापूर्वक अधिकाधिक धन भेजें। ताकि हम लक्ष्य की ओर बढ़ सकें।

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस महान् ब्रह्म को मेरा प्रणाम

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम० ए०, एल० टी०

यो भूतं च भव्यञ्च
सर्वं यश्चाधितिष्ठति,
स्वर्यस्य च केवलम्
तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः । अथर्व १०-८-१

(यः) जो प्रभु [भूतम्] भूतकाल [च] और [भव्यम्] भविष्यत् काल का [अधितिष्ठति] स्वामी है [यश्च] और जो [सर्वमधितिष्ठति] सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वामी है अर्थात जो नित्य और सर्वव्यापक है। [यस्य च स्वः] और जिसका आनन्द [केवलम्] विशुद्ध अर्थात् द्वन्द्वातीत है [तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः] उस सर्वतो महान् ब्रह्म को नमस्कार है।

इस मंत्र में ब्रह्म को, प्रभु को समय का अधिष्ठाता माना गया है। प्रभु भूतकाल का संचालन कर रहा था, प्रभु भविष्यत्काल का संचालन कर रहा है। संसार की सभी गतिविधियां उसी के नियन्त्रण में रहकर अपना काम कर रही हैं। इसलिए अथर्ववेद ११।७।२० में कहा गया है—

अर्धमासाश्च मासाश्चार्तवा ऋतुभिः सह।
उच्छिष्टे घोषिणीरापः स्तनयित्नुः श्रुतिर्मही।

अर्थात् अर्धमास, मास, ऋतुओं के साथ ऋतु सम्बन्धी पदार्थ, शब्द करने वाला जल, मेघ गर्जना, सुनाई देने वाली वाणी, पृथ्वी अथवा पवित्र वाणी ये सब परमात्मा के अन्दर हैं।

अथर्ववेद के स्कम्भ सूक्त के १०।७।९ मंत्र में इसी प्रकार के प्रश्न करते हुए पूछा गया है—

कियता स्कम्भः प्रविवेश भूतं
कियद् भविष्यदन्वाशयेस्य।
एकं यदङ्गमकृणोत् सहस्रधा,
कियता स्कम्भः प्रविवेश तत्र।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् भूतकाल में परमात्मा का जो प्रकाश होता था वैसा ही भवि काल में होगा या नहीं ? एक ही पदार्थ को सहस्र भागों में विभक्त करने उसके प्रत्येक अंश में वह परमात्मा प्रविष्ट होता है या नहीं ? इन प्र के उत्तर में कहा गया है कि वह सर्वत्र और सर्वकालों में एक जैसा व्या है। कहने का भाव यह है कि वह परमेश्वर काल का स्वामी है, नियन्त है। उसे भूत, भविष्यत् और वर्तमान का पूरा-पूरा ज्ञान है।

भूतकाल का स्वामी होने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर अनन्तक से है और उसने भूतकाल में इस संसार का निर्माण किया। इसे उसने बना पालन किया और इसका संचालन किया। ब्रह्माण्ड की सूक्ष्म अवस्थ पूर्व ब्रह्माण्ड अव्याकृत अवस्था में होता है अर्थात् प्रकृति की अपनी कार वस्था में होता है। इस अव्याकृत अवस्था का नियामक होने के का परमात्मा का नाम ईश्वर है। परमात्मा अपना ईशर[ईश + वर] अ नियमन का कार्य मुख्य रूप से इस अव्याकृत अवस्था द्वारा करता जगत् के मूल कारण में लगी हुई परमात्मा की ईशन शक्ति ही मूल का की परिणत अवस्थाओं में भी ईशन का काम दे रही है। जिस प्र मशीन के मुख्य पुर्जे में गति देने से समग्र मशीन गति में हो जाती है, प्रकार मूल कारण में प्रेरणा देने वाली ईशन शक्ति ही सूक्ष्म तथा स जगत् में भी ईशन का काम कर रही है। इस प्रकार ईशन शक्ति सम्वन्ध चूंकि मूल कारण का नियामक होने के कारण परमात्मा को ई [ईशन शक्तिवाला] कहा जाता है और इसी कारण वह भूतकाल अधिष्ठाता है। उसने अपनी इसी शक्ति से विशाल विश्व का निर्माण हि है। उसका विश्व कितना विशाल और कितना अद्भुत है ?

आकाश में जरा नजर उठाकर देखिए। रात को स्वच्छ आका दौड़ती और भागती-सी जो आकाशगंगा दिखाई देती है, उसमें डेढ़ सितारे चमक रहे हैं। इस समय तक हजारों सौरमंडल देखे जा चु और प्रत्येक सौरमंडल में वैसे ही सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, अन्य नक्षत्र भरे प जैसे हमारे सूर्य के परिवार में। यह पृथ्वी जो हमसे वहुत वड़ी है— १३ लाख पृथ्वियां इस चमकते सूर्य में समा सकती हैं और ऐसे एक क सूर्य अगस्त्य नामक तारा में आराम से रखे जा सकते हैं। ज्येष्ठा नाम तारा अगस्त्य से कई करोड़ गुना वड़ा है। महाज्येष्ठा, परमज्येष्ठा न जाने कितने नक्षत्र और ग्रह इस ब्रह्माण्ड में हैं। आकाशगंगा की प और उसका व्यास जानने के लिए १७६३ के आगे १६ विन्दु लगाने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिनकी गणना नहीं हो सकती। केवल हमारी ही सृष्टि तो नहीं है। ऐसी न जाने कितनी सृष्टियां रोज बनती और बिगड़ती होंगी। आजकल के वैज्ञानिकों ने हमारी पृथ्वी से १४७ के आगे १६ बिन्दु मील दूर प्रकृति की वह अवस्था देखी है जो विकृत होकर रूप धारण करने लगती है। इन सब भूत और भविष्यत् सृष्टियों का अधिष्ठाता वह ब्रह्म है, जिसकी नन्ही सामर्थ्य यह सब काम करा रही है और उसके शेष तीन चरणों का तो अभी पता ही नहीं। प्रभु के इस विशाल संसार को देखकर गरीबदास के मुख से निकल पड़ा—

साहब तेरी साहिबी,
कहा कहूं करतार।
पलक पलक की दीठि
में पूरण ब्रह्म हमार।

मेरे पूर्ण ब्रह्म स्वामी, क्या कहूं तेरी महिमा को! तू धन्य है! हर पलक और हर नजर में तेरा दर्शन मिल रहा है।

कबीर ने कहा है—

खालिक खलक, खलक में खालिक
सब घट रहया समाइ

अजब रहस्य है—खालिक में यह सारा खलक समाया हुआ है और खलक मैं में मेरा खालिक! हमें तो हर घट में यही लीला नजर आ रही है।

परमेश्वर नित्य है, सर्वव्यापक है और आनन्दस्वरूप है। उसके आनन्दमय स्वरूप का वर्णन उपनिषदों में किया है।

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति। भूमैव सुखम्।
भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्यः। छान्दोग्य ७।२३।१

अर्थात् जो 'भूमा' है, असीम है। निरतिशय है, फैला हुआ है, व्यापक है, वही सुख है; 'न अल्पे सुखमस्ति' जो अल्प है, ससीम है, परिमित है, क्षुद्र है, उसमें सुख नहीं है। 'भूमा ही सुख है।' इसलिए भूमा को जानने की इच्छा करनी चाहिए। 'भूमा' क्या है? ऋषि ने छान्दोग्योपनिषद् में बताया है "जिस परम शुद्ध अवस्था में आत्मा अन्य वस्तु को न देखता है, न सुनता है, न जानता है वही भूमा है। जहां आत्मा अन्य वस्तु को देखता है, सुनता है, जानता है, वही अल्प है। जो भूमा है वह 'अमृत' है, जो अल्प है वह 'मर्त्य' है—मरणधर्मा है।" ऋषि ने आगे कह "भूमा किसी में प्रतिष्ठित नहीं, वही नीचे है,—वही ऊपर है, वह पीछे है, सामने है, दायें है, बायें है—'स एवेदं सर्वम्'—वही यह सब कुछ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथर्ववेद में उस प्रभु को आनन्द का स्रोत कहा गया है—

शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदमसंख्येयं स्वस्मिन् निविष्टम् ।
तदस्य घ्नन्त्यभिपश्यत एव तस्माद् देवो रोचत एष
एतत् ।। अथर्व १०-८-२४

सैकड़ों, सहस्रों, दश सहस्र, दस करोड़ और इससे भी अधि असंख्य 'स्वम्' आनन्द इस प्रभु में सन्निविष्ट है। जो योगी उस प्रभु साक्षात्कार करते हैं वे ही इस आनन्द को प्राप्त करते हैं। अपने उसी आन मय रूप के कारण परमात्मा इस संसार को आनन्द धाराओं से पूर्ण रहा है। यजुर्वेद में कहा गया है:—

कस्त्वा सत्यो मदानां मं हिष्ठो मत्सदन्धसः
दृढा चिदा रुजे वसु यजुः ३६।५

अर्थात् आनन्द वालों में अत्यन्त पूजनीय (सत्यः) सज्जन, हित त्रिकालवाधातीत सत्स्वरूप (कः) आनन्दस्वरूप परमेश्वर (त्वा) तुझ (मत्सत्) आनन्द युक्त करता है। वह (चित्) चित्स्वरूप ज्ञानी परमेश (आरुजे) दुःख पाने वाले जीव को (दृढा) दृढ़ अर्थात् शीघ्र लुप्त न हो वाला (वसु) मोक्ष रूप धन देता है।

इस प्रकार वह प्रभु आनन्द का भंडार है, भूत, भविष्यत् और वर्तम का निर्माता और नियन्त्रक है तथा उसका जानने वाला है, वह सर्वव्याप है। इसलिये तीनों कालों के स्वामी भगवन्, "सृष्टि और प्रलय का च तुम्हारे हाथों में संचालित है। प्रलय के विनाश के बाद तुम फिर विरा विश्व की रचना करते हो। बिखरे पड़े हुए परमाणुओं को एकत्र कर उन रंग-विरंगे रंग भरते हो। रात के अन्धकार के बाद फिर चमकते हुए सू का प्रकाश है। पतझड़ के पश्चात् पत्र-पुष्पों का उपहार लिए वसन्त पहुंचता है। सूखे पड़े खेत, तुम्हारी कृपा दृष्टि की दो बूँद पड़ते ही धन धान्य से मुस्कराने लगते हैं, मुरझाए हुए पेड़-पौधे फिर से लहलहा उठते हैं हे विश्वविधाता ! सृष्टि की प्रलय और उत्पत्ति की ये घटनायें हमा हृदयों में आश्वासन और सान्त्वना की वृद्धि करें। आशा जमे, हिम्मत बंधे उत्साह उमड़े, उच्च भावना पनपे, कल्याण के पंख दृढ़ हों, पराजय क विजय में परिणत करने वाले विश्वास के चरण बढ़ें।"

हे प्रभो ! हमें आशीर्वाद दो कि हम अभिमान और अवमान क भावनाओं को दूर कर तुम्हारे चरणों में अपने को समर्पित कर दें। तुम्हा लिए समर्पण के बाद हममें अभिमान कहां ? हममें अवमान कहाँ ?

भूत भविष्यत् वर्तमान का जो प्रभु है अन्तर्यामी ।
विश्वव्योम में व्याप्त हो रहा है जो त्रिकाल का है स्वामी ।
निर्विकार आनन्दकन्द है जो कैवल्यरूप सुखधाम ।
उस महान् जगदीश्वर को है अर्पित मेरा नम्र प्रणाम ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश को बचाने के लिए सहयोग दीजिए

अपने सदस्यों को आज यह समझाने की आवश्यकता नहीं कि आपकी हिन्दू रक्षा समिति ने जागरण का जो शंख फूंका, उस से सारा देश जाग गया है।

पर मंजिल अभी दूर है—

जिन्हें हमारे काम पर विश्वास हो वे हिन्दू धर्म की
भारत माँ की]
रक्षा के लिए अधिक से अधिक धन भेजें।

एक रीम कागज या १११) रु. तो प्रत्येक हिन्दू भेजे। व्रत रख कर भी देश-धर्म को बचाइए — यह मेरा निवेदन है — २८.२.८२ तक शिवरात्रि पर... ५० हजार रु. चाहिए — आप देंगे विश्वास है आपका वेदभिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश की रक्षा के लिए

—ब्रह्मचारी सत्यदेव "अनन्तांशु"

सर्वप्रथम हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त था। क्योंकि यहां पर तिब्बत में सृष्टि उत्पन्न हुई और वे सब आर्य ही थे। तत्पश्चात् भरत के नाम पर इसका नाम-भारत हुआ, मुसलमानों ने हमारा नाम हिन्दू दे दिया, इसलिए हमारे देश का नाम हिन्दुस्तान हो गया। अंग्रेजों ने इसका नाम इन्डिया दिया किन्तु मुसलमानों का अधिक दिन राज्य होने के कारण इसका नाम हिन्दुस्तान प्रसिद्ध हुआ।

इस देश पर कितने विदेशियों ने राज्य किया, यह हमें इतिहास से ज्ञात होता है। महमूद गज़नवी जैसे खूंखवार ने सोमनाथ जैसे स्वर्णमन्दिर को तोड़ा, औरंगजेब जैसे ने न जाने कितने धर्म परिवर्तन किये, लार्ड मैकाले जैसे कूटनीतिज्ञ ने हिन्दुस्तान को बदलने के लिए यहां की शिक्षा को बदला और अपने पिता को पत्र लिखा कि "मैं हिन्दुस्तान में एक ऐसा कार्य कर रहा हूँ जिससे भारतीय व्यक्ति शरीर से भारतीय होते हुए भी दिल और दिमाग से अभारतीय होगा। उसकी शिक्षा प्रचलित हुई, भारत में अंग्रेजियत का खूब प्रचार हुआ, धर्म परिवर्तन किये गये, माताओं की लाज लूटी गयी, न जाने कितने अत्याचार हुए, किन्तु हमारा भारत अपने स्थान पर अडिग रहा। जैसा कि इकबाल ने कहा है—

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।।

इतने कष्ट आने पर भी हिन्दू धर्म की आर्य संस्कृति का अस्तित्व विद्यमान रहा। धर्मान्धों द्वारा इसको समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु अपने उद्देश्य में असफल रहे। उसका मुख्य कारण है कि गीता के वचन अनुसार—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगेयुगे।

किसी न किसी महापुरुष के द्वारा हमारा मार्ग निष्कंटक होता गया और हम अब तक जीवित हैं। इस बात का प्रमाण आधुनिक इतिहास है। यदि रावण जैसा अत्याचारी हुआ तो राम जैसा मर्यादापालक उसको मारने के लिए उत्पन्न हुआ। यदि कंस और जरासंध जैसे क्रूर हुए तो श्रीकृष्ण जैसा षोडश कला व्यक्ति हुआ, यदि कौरव जैसे अत्याचारी हुए तो पाण्डवों जैसे धर्मरक्षक उनको समाप्त करने वाले हुए, यदि बौद्धों का वेद खण्डन चला तो शंकर जैसा आचार्य हुआ, यदि पुराणों के गपोड़े चले तो दयानन्द जैसा सत्यवक्ता हुआ, यदि मुसलमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

औरंगजेब जैसे अत्याचारी हुए तो राणा एवं शिवा जैसे वीर उत्पन्न हुए, र अंग्रेजों ने शासन द्वारा दबाया तो बिस्मिल, सुभाष, भगतसिंह एवं चन्द्रशेखर े शेर उत्पन्न हुए जिन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा की और उसके अस्तित्व को न टने दिया। ऐसी यह हमारी पुण्यभूमि भारत है जिस पर जन्म लेने के लिए ता भी उत्सुक थे। जैसा कि—

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्ग्यं च हेतुभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

भारत भारती में भी मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है कि—

हैं धन्य भारतवर्षवासी, धन्य भारतवर्ष है।
सुरलोक से भी सर्वथा उसका अधिक उत्कर्ष है॥

जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश को मेघ कुछ समय के लिए रोक सकते हैं, किन्तु का अस्तित्व समाप्त नहीं कर सकते, ठीक इसी प्रकार हिन्दू धर्म को बहुतों मिटाना चाहा परन्तु यह अक्षुण्ण बना रहा।

आज हम अपनी ओर देखते हैं तो चारों दिशाएं अज्ञान एवं अन्धकार से रपूर्ण दीखती हैं, सब तरफ निराशा छाई हुई है, हिन्दू धर्म का नाम मिटता जा होता है, रोज गौएं काटी जा रही हैं, चारों तरफ कुहराम मचा हुआ है। हमारा गजेसन होते हुए भी धर्मपरिवर्तन हो रहा है। किन्तु हम आंख बन्द करके ने घर में मौज उड़ा रहे है। कौन ऐसा बुद्धिमान् होगा जो घर में घुसा चोर देखकर भी खाट पर मौन पड़ा रहे? आज हमारे धर्म को क्या हो तीा? हमने क्या सोचा था और अब हम क्या बन गये?

हतभाग्य हिन्दू जाति, तेरा पूर्वदर्शन है कहां?
वह शील शुद्धाचार वैभव देख अब क्या है यहां?

आज भारतवर्ष पर अनेक देश गिद्ध दृष्टि लगाये बैठे हैं। हमारे समाज में का अभाव है। हम धन के कारण जपना धर्म बेच रहे हैं। हमने अपने पूर्वजों भुला दिया है। दिन प्रतिदिन हिन्दू धर्म का ह्रास होता जा रहा है। जिस त का विचार न था वह हो रही है। जिस भारत में कभी गोमाता पूजी जाती आज लाखों की संख्या में नरबलि के लिए दी जा रही है। जिसको हम माता ़झते थे आज उसी का मांस खाकर अपने को कृतार्थ समझ रहे हैं। गोरक्षा एवं वृद्धि के लिए स्वामी दयानन्द जी सतत प्रयत्नशील थे। रात को नींद नहीं रही थी, करवट बदल रहे थे। शिष्य बलदेव ने पूछा, स्वामी जी, डाक्टर बुलाऊं? स्वामी जी बोले, इसकी दवा डाक्टरों के पास नहीं है। भारत की दशा देखकर मेरा मन तड़प रहा है। भारत का पूर्ण हित कैसे होगा? पूछे जाने पर स्वामी जी ने उत्तर दिया, "एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जाति की उन्नति होना कठिन है। मैं चाहता हूं कि देश के राजे-महाराजे अपने शासन में सुधार करें और राज-धर्म, भाषा और भावों में एकता उत्पन्न करें। फिर भारतवर्ष में आप सुधार हो जाएगा।" एक संन्यासी के हृदय में देश के प्रति क्या भाव थे—इन उद्गारों से पता चलता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज हमारे अन्दर की शक्ति हम स्वयं नष्ट कर रहे हैं। जो शक्ति राष्ट्र सुधारकों ने देश हितार्थ लगाई आज उसे हम अपने भाइयों का खून चूसने में—उनको धोखा देने में लगा रहे हैं। हमें सोचना चाहिए कि क्या हम उन्हीं की सन्तान हैं जो दूसरों के हित के लिए अपना सर्वस्व दान दे देते थे।

भाइयो ! अब भी समय है। सोचो और उठकर अपने पौरुष से सनातन धर्म की रक्षा में अपना जीवन लगा दो। इतिहास कहता है कि—

नौजवान उठ करवट बदले तो इतिहास बदल सकता है।
केवल भुजा उठाने से युग का विश्वास बदल सकता है।
तेरी आशाओं में जग की आशा जगती और सोती है।
एक साथ मिल सांस सभी लो तो आकाश बदल सकता है॥

अतः युवको ! इस सूत्र को याद कर लो। अब समय आ गया है, अपनी छिपी हुई शक्ति को प्रकट करने का। आज देश को पुनः उस शक्ति की आवश्यकता है जिसने समय-समय पर आने वाली अधर्मरूपी आंधियों को समाप्त किया था। अपने राष्ट्र को फिर एक बार जगद्गुरु के पद पर अलंकृत कर दो। तभी हम बोल सकेंगे—

भारतमाता की जय।
वन्दे मातरम्॥

प्रबन्धक चाहिए

रिटायर्ड—धार्मिक सेवा भावना युक्त विद्वान प्रबन्धक चाहिए।

लेखक—(क्लर्क) चाहिएं। दिल्ली की लड़कियां भी आवेदन कर सकती हैं।

प्रान्तीय स्तर पर कार्य करने के लिए संचालक चाहिएं। निर्वाह योग्य सभी प्रकार की व्यवस्था संभव। ईमानदारी कर्मठता अनिवार्य आवेदन सहित मिलें।

अध्यक्ष :— **दयानन्द संस्थान**

१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग, करोल बाग, नई-दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंगल प्रभात

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार

प्रातः काल का समय दिन का वह भाग है, जब मनुष्य में सद्भावनाओं और सात्त्विक प्रवृत्तियों का जोर रहता है। सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणों से संसार की सभी वस्तुओं की उत्पत्ति होती है। मनुष्य की भावनाओं की उत्पत्ति भी इन्हीं तीन गुणों से होती है। भावनाओं के आधार पर समय या काल का विभाजन भी होता है। साहित्य में सत्त्वगुण का रंग उज्ज्वल और जानवरों में गाय इसका प्रतीक मानी गयी है। रजोगुण का रंग लाल और घोड़ा इसका प्रतीक माना गया है। तमोगुण का रंग काला और भैंस इसकी प्रतीक मानी गयी है। सत्त्वगुण शान्ति, सहिष्णुता, धैर्य, उदारता आदि का परिचायक है। रजोगुण चंचलता, भोगविलास, दौड़धूप तथा उग्रता का परिचायक है। तमोगुण आलस्य, निद्रा और मस्ती का सूचक है। प्रातःकाल जब ऊषा सुन्दरी अपनी किरणों को बिखेर रही होती है वह दृश्य अत्यन्त सुन्दर और दिव्य होता है। रात्रि के अन्धकार के पश्चात् प्रातःकाल पूर्वाकाश में अपनी दिव्य छटा छिटकाते हुए, रश्मिजाल से नभोमण्डल को लालिमामय बनाते हुए तथा दिग्दिगन्त को अपने अपूर्व तेज से आलोकित करते हुए सूर्यदेव अपनी सहस्रों सुनहली रश्मियों के साथ पहाड़ों की शुभ्र और श्यामवर्ण की चोटियों के पीछे से उदय होते हुए देखकर सहृदय भगवान् की लीला पर मुग्ध हो उठता है। श्री जयशंकर प्रसाद के 'ऊषा' के वर्णन में एक सखी दूसरी को जगाते हुए कहती है—

बीती विभावरी जाग री,
अम्बर पनघट में डुबो रही।
तारा घट ऊषा नागरी,
खग कुल-कुल-सा बोल रहा।
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई।
मधु मुकुल नवल-रस भामरी,
अधरों में राग अमन्द पिए।
अलकों में मलयज बन्द किए,
तू अब तक सोई है आली।
आंखों में भरे विहाग री।

अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने प्रभात के मनोरम रूप की छटा का वर्णन, इस रूप में किया है—

पहने कंचन कलित किरीट,
मुक्तावलि माला।
विकच कुसुम का हार,
विभाकर कर का पाला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राची के कमनीय अंक में,
लसित दिखाया।
लिए करों में कमल प्रभात,
विहँसता आया।

प्रभात की यह वेला सात्त्विक भावों से भरी होती है। यही कारण है कि संसार के महत्त्वशाली व्यक्ति इस समय को सोने में नहीं व्यतीत करते। जब दुनिया सोती है तब जो लोग जागते हैं समझो वही महापुरुष हैं, वही जीवन में आगे बढ़ते हैं। इसलिए कि अकर्मण्य निश्चिन्तता से सोते हैं, जो कर्मशील हैं वे कर्म करते हैं, जागते हैं। कर्म से ही तो मनुष्य महान् बनता है। इसीलिए अथर्ववेद ७।१३।२ मन्त्र में कहा गया है—

उद्यन्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे।

अर्थात् जिस प्रकार उदय होता हुआ सूर्य सोने वाले व्यक्तियों के वर्च या तेज को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार मैं भी अपने प्रतिपक्षियों या शत्रुओं के तेज को नष्ट कर देता हूं।

किसी ने कहा है :

'ब्राह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी'

जो मनुष्य ब्राह्ममुहूर्त में सोता है उसके पुण्य नष्ट हो जाते हैं।

चाणक्यनीति १४।४ में तो यहां तक लिख दिया गया है कि मैले, फटे-पुराने चीथड़ों को धारण करने वाले, दांतों में मैल रखने वाले, बहुत खाने वाले, कटुभाषी और सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सोने वाले व्यक्ति यदि विष्णु के समान पराक्रमी हों तो भी उन्हें लक्ष्मी छोड़कर चल देती है। इसलिए वेद कहता है कि यदि तुम मंगल चाहते हो, जीवन में सफल होना चाहते हो, आगे बढ़ना चाहते हो तो प्रातःकाल उठो। याद रखो 'प्रातारत्नं प्रातरित्वा दधाति।" ऋ. १।१२५।१) प्रातःकाल उठने वाला रत्नों को धारण करता है।

ऋग्वेद में एक पूरा का पूरा सूक्त ही ऊषा सूक्त है। वहां बताया गया है कि यह ऊषादेवी जब प्रभात की पहली ज्योति के साथ किरणों के रथ पर आरूढ़ होकर आगे बढ़ती है तो अपने साथ चार वस्तुएं—बुद्धि, बल, धन और यश—साथ लेकर चलती है और उन्हें लुटाते हुए, वांटते हुए चलती है। परन्तु ये वस्तुएं वे ही तो पाएंगे जो जागे होंगे। सोए हुओं को ये कैसे मिलेंगी? तो मेरे बन्धुओ! यदि इन वस्तुओं की आवश्यकता है तो प्रातःकाल उठो। ऊषा के आगमन से पहले उठो। उसका स्वागत करो। उसकी दी हुई वस्तुओं को बटोर कर रखो।

हर रात के पिछले पहरे में इक दौलत लुटती रहती है।
जो जागते हैं वो पाते हैं, जो सोते हैं वो खोते हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण इतने महान् क्यों हुए? वे उस समय उठते थे जब आकाश में तारे होते थे। उठ कर शुद्ध जल से स्नान करते थे। तब शुद्ध वस्त्र पहन कर यज्ञ करते थे। गायत्री का जप करते थे। ऋग्वेद के प्रथम मंडल के १२३वें सूक्त के एक मंत्र में कहा है "देखो" ऊषा का विशाल रथ जुड़ गया। अजर और अमर देवता इसमें सवार हो गए हैं। ऊषादेवी देवताओं को साथ लेकर मनुष्यों के रोगों को दूर करने के लिए आगे बढ़ रही है।"

महर्षि दयानन्द सूर्योदय से दो घंटे पूर्व उठते थे। घर से बाहर निकल कर आठ-आठ दस-दस मील तक दौड़ते चले जाते थे। एक बार मित्रों से वार्तालाप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते हुए उन्होंने कहा "आठ वर्ष हो गए मुझे इस प्रकार प्रातःकाल दौड़ते हुए। इतने प्रातः कोई भारतीय मुझे कभी दिखाई नहीं दिया। पहले कुछ अंग्रेज स्त्री-पुरुष दिखाई देते थे। अब वे भी नहीं दिखाई देते। इससे मैंने समझा है कि अंग्रेजों के पतन के दिन निकट आ गए हैं।"

स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द सवेरे उठते थे। पाश्चात्य देशों के महापुरुष भी सवेरे उठते थे। एक व्यक्ति ने लिखा है कि प्रातः उठने से स्वास्थ्य, सौन्दर्य, मेधा-बुद्धि, तेज, ओजबल और ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं।

श्री कोल्टन कहते हैं "प्रातः उठने से हमें न केवल स्वास्थ्य की ही प्राप्ति होती है अपितु दीर्घायु भी मिलती है।"

लार्ड चेथम का कहना है "मैं तुम्हारे सोने के कमरों के परदों और दीवारों पर स्थान-स्थान पर यह लिख देना चाहता हूं कि यदि तुम प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में न उठोगे तो जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते।"

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती लिखते हैं "प्रातःकाल ऊषादेवी अपने दोनों हाथों से स्वास्थ्य सौन्दर्य, मेधा-बुद्धि तेज और ओज की संपत्ति लुटाती है, परन्तु इस संपत्ति को प्राप्त वे ही कर सकते हैं जो ब्राह्म मुहूर्त में उठ जाते हैं। जो सोए रहते हैं वे इस संपत्ति से वंचित ही रहते हैं। यदि आप भी इस संपत्ति को प्राप्त करना चाहते हैं तो ब्राह्म मुहूर्त में उठो।"

मनु का विचार है—

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर धर्म, अर्थ, शरीर के क्लेश तथा उनके कारण और वेदों के तत्त्वार्थ का चिन्तन करें।

आयुर्वेद में कहा है—

ब्राह्मे मुहूर्त्ते चोत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुषः।
शरीरचिन्तां निर्वृत्य कृतशौचविधिस्ततः॥

अष्टा० सू० अ० २

मनुष्य को अपनी आयु की रक्षा के लिए ब्राह्म मुहूर्त में उठना चाहिए, नित्य कर्म जो शरीर के लिए आवश्यक हैं, उनसे निवृत्त होकर स्नानादि से शरीर को स्वच्छ कर और संध्यादि से मन को पवित्र कर कार्य करें।

प्रातःकाल उठकर चिन्तन, मनन करना चाहिए। दिनभर के कार्य की योजना बनानी चाहिए और दिन में उन योजनाओं को पूरा करना चाहिए। वेद में प्रभात सूक्त तथा प्रभातविषयक मन्त्रों में जीवन निर्माण के सूत्र बताये हुए हैं। उनका चिन्तन, मनन, निदिध्यासन करना चाहिए।

ऋग्वेद के सप्तम मण्डल का ४१वां सूक्त, अथर्ववेद के तृतीय कांड का १६वां सूक्त और यजुर्वेद में प्रातःकाल गाने योग्य मंत्रों का प्रतिपादन है। हम यदि प्रातःकाल उठते ही ईश प्रार्थना के बाद उन मंत्रों का मनन करें तो जीवन निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिग्भ्रमित धर्मनिरपेक्षता

--बुद्धिप्रकाश आर्य,

भारत जैसे विशाल देश के लिये हमारे संविधान निर्माताओं ने बड़ी सूझ-बूझ के साथ लोकतंत्रीय ढांचे का निर्माण किया। समानता पर आधारित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा प्रजातंत्र जैसे सुदृढ़ स्तम्भों पर शासनतंत्र का भवन खड़ा करना सैद्धान्तिक रूप से बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रयास है। हमारा देश भाषा, धर्मों, संस्कृतियों तथा मान्यताओं की सीमा रेखाओं में बँटा हुआ एक विशाल संकुल क्षेत्र है जिसके लिये उक्त व्यवस्था ही सर्वाधिक उपयुक्त हो सकती थी। सदियों से दासता की घुटन ने तथा अंग्रेजों की विभेदक नीतियों ने भारतीयों के मानस को हीन भावनाओं से युक्त बना दिया। साथ ही भेदभाव की नीतियों को इतना दृढ़ बना दिया कि आज सद्भावना, बन्धुत्व तथा समता के सभी प्रयास हवा में उड़कर प्रभावहीन हो रहे हैं। दलित एवं अविकसित जातियों को ईसाइयत का घूंट पिलाना ही अंग्रेज शासकों ने दलितोद्धार का मंत्र मान लिया था। यही मंत्र आज भी धर्मनिरपेक्षता की ओट में क्रियाशील है। दुर्बल मान्यता उन्हें इस कार्य में मदद कर रही है। धर्मनिरपेक्षता का दुरुपयोग राजनीतिक छल के रूप में आज खुल कर किया जा रहा है। वोट की राजनीति, सत्ता की ललक तथा स्वार्थों की होड़ ने धर्मनिरपेक्षता की पवित्रता को कलंकित कर दिया है। सब धर्मों के अनुयायी बिना किसी राजनीतिक स्वार्थ के अपने धर्मों का स्वतंत्रापूर्वक पालन करें, कोई किसी के धर्मकार्यों में हस्तक्षेप न करे तथा धर्म के पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर देश व समाज की उन्नति में तत्पर रहे। इन पवित्र स्वतंत्रताओं में लालच देकर धर्मान्तरण कराना, घृणा और विद्वेष का सहारा लेकर धर्मपरिवर्तन कराना एवं पर्सन लॉ जैसे अविवेकपूर्ण नियमों को धर्मनिरपेक्षता की ओट में, मानकर जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों को चुनौती देने आदि की स्वतंत्रतायें भी शामिल कर ली गई हैं। धर्मनिरपेक्षता के तथाकथित समर्थक इन पर प्रतिबन्ध भी तो नहीं लगा सकते क्योंकि वे समझ रहे हैं कि इन अल्पसंख्यकों की मांगे एवं इच्छायें पूरी करने से इनके वोट उनकी गद्दियों को स्थायी बनाने में मदद करेंगे। बहुसंख्यक लोग तो विभाजित हैं अतः उनके बँटे-कटे वोटों से उनकी गद्दी किसी भी दशा में नहीं हिल सकेगी। देश की अखण्डता, भारतीय संस्कृति की सुरक्षा आदि की इन नेताओं को कोई चिन्ता नहीं है। वोटलोलुप नेता विदेशी धन द्वारा धर्मपरिवर्तन करने के षड्यंत्र को भी धर्मनिरपेक्षता का ही एक अंग मानते हैं। संसद् के दोनों सदनों में इस विषय पर चिन्ता प्रकट करने वालों के मुंह उन्हें साम्प्रदायिक कहकर बंद कर दिये जाते हैं। साधनहीन किन्तु शान्त बहुसंख्यक वर्ग इस सब विनाशकारी लीला को मन मसोस कर देखते रहने के लिये ही विवश हो रहा है। हरिजन धर्म बदल रहे हैं। उन्हें पैसा दिया जा रहा है और दोष यह लगाया जा रहा है कि सवर्ण उनके साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं। यह सत्य है कि सवर्ण छुआछूत की भावना से अभी पूर्ण रूप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं परन्तु इस दुर्बलता को तूल देकर अपराधियों के अपराध को छिपाने से क्या राष्ट्र का कल्याण हो जायेगा ? आश्चर्य है कि ये मदान्ध और सत्ता में आसक्त नेता गण दूसरे पक्ष पर विचार ही नहीं करते । भारतीयता की स्वस्थ भावना में, देश प्रेम के गीतों में, हिन्दी-संस्कृत भाषाओं के उत्थान की चर्चा में तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार की चेष्टाओं में इन स्वार्थी नेताओं को साम्प्रदायिकता की दुर्गन्ध आती है। दुर्भाग्य है देश का ! धर्मनिरपेक्षता की ओट में देश को विदेशियों की झोली में ढकेलने का यह प्रपंच कब तक बर्दाशत किया जाता रहेगा ? एक ओर वर्गविशेष को बहुपत्नी प्रथा की छूट है। उनकी जनसंख्या दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है जबकि दूसरी ओर बहुसंख्यकों पर परिवार नियोजन का अंकुश लगाया जा रहा है। क्या यह भयावह स्थिति भारतमाता के पुनः टुकड़े नहीं कर देगी ? क्या यहां नये देश की मांग की झंझा १९४७ की हिंसा की पुनरावृत्ति नहीं करेगी ? आज राजनीति विनाशोन्मुखी मोड़ ले रही है। अदूरदर्शिता के अभिशाप से ग्रस्त वर्तमान शासन के घटक ये नेतागण धर्मनिरपेक्षता की वेदी पर देश की गौरवपूर्ण शान को स्वाहा करने पर तुले हुए हैं।

पाकिस्तान बना। भूल हुई। इस भूल के शूल से गांधी व नेहरू विचलित हुए थे। परन्तु आज का नेता इस भूल को स्वीकारने को तैयार नहीं। ऐसे लोगों से क्या आशा की जा सकती है कि वे एक और पाकिस्तान बना देने की गलती पर पश्चात्ताप करेंगे ? आखिर देश का बहुसंख्यक वर्ग जो इस विनाशलीला को टुकुर-टुकुर देख रहा है, कब तक शान्त रहेगा ? कब तक वह (तथाकथित) अल्पसंख्यक वर्ग को मनमानी करने का मौका देता रहेगा ? आज अजमेर को केवल इसलिये ख्वाजा की नगरी या इस्लामी नगरी घोषित करने की आवाज उठाई जा रही है कि वोट की भूखी सरकार इसे अवश्य मंजूर कर लेगी, क्योंकि उसे आखिरकार मुस्लिमों के वोट जो लेने हैं। अलीगढ़ विश्वविद्यालय भी, जिस पर भारत के मुस्लिमों की आस्थायें टिकी हुई हैं, इसी कारण अपनी मनमानी शर्तें पूरी कराता रहता है। समानता का सिद्धान्त ऐसी मांगों और शर्तों को पूरा करने के अवसर पर न जाने कहां तिरोहित हो जाता है ?

आज आवश्यकता है एकता की, आवाज उठाने की तथा शासनतंत्र की व्यवस्थाओं व नियमों को देश के अनुकूल बनाने की। प्रत्येक भारतवासी एकविवाही परिवार वाला ही होगा। धर्म की ओट में विदेशी धन का दुरुपयोग कर धर्मान्तरण करना भयंकर अपराध होगा। अल्पसंख्यक के नाम पर भारी एवं पक्षपातपूर्ण सुविधायें वापस लेनी होंगी। विदेशों को जिंदाबाद कहने वालों को इस देश में रहने का कोई अधिकार नहीं होगा। अनुसूचित जातियों, जनजातियों को अवसर और सहायता देकर ऊंचा उठाना ठीक है और सरकार इस दिशा में बहुत कुछ कर रही है परन्तु जिस नीयत से कर रही है वह शुभ नहीं। एक सम्पन्न और उच्चाधिकारी अनुसूचित जाति वाले के अयोग्य पुत्र को सेवा सुविधायें केवल इसलिये देना कि वह अछूत है, न्यायसंगत नहीं। और एक निर्धन किन्तु सवर्ण को इसलिये सेवा सुविधाओं से वंचित रखना कि वह अछूत नहीं, सरासर पक्षपात और सत्तालोलुपता का छल है। यह सब कुछ समाप्त होना चाहिये। सम्पन्न अछूत को आगे बढ़ने का योग्यता के आधार पर अवसर देना चाहिये। सरकार एक ओर तो जातिवाद और बिरादरीवाद के खिलाफ आवाज उठाती है, दूसरी ओर जाति, उपजाति, अनुसूचित, पिछड़ी, जनजाति, धर्म आदि का उल्लेख सरकारी फार्मों में, आवेदनपत्रों में करके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्गवाद को बढ़ावा दे रही है। जाति के आधार पर टिकट बांटना और जातिविशेष-बहुल क्षेत्र में उसी जाति को इस दिशा में प्रेरित करना भेदभाव, हिंसा, दंगे तथा फूट को बढ़ावा देना है। होना यह चाहिये कि जाति के स्थान पर व्यवसाय, योग्यता तथा सेवा कार्य का विभाजन स्वीकार करने का नियम बनाया जाये। एक राष्ट्र-भाषा स्वीकार करके उसकी साख को बढ़ाने की दिशा में कठोर नियम बनाये जायें। भाषा भेदभाव को मिटाती है। अतः एक राष्ट्रभाषा होनी परमावश्यक है। आज हिन्दी भाषा ही इस पद की अधिकारिणी हो सकती है। धर्मनिरपेक्षता की दुर्बलता यहां भी आड़े आ खड़ी होती है। अतः कठोर और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है, जिसे लोकतन्त्र की दुर्बल मान्यता समाप्त करती रहती है। इसी धर्म-निरपेक्षता की ओट में कहीं उर्दू, कहीं अंग्रेजी आदि भाषायें संविधान की राष्ट्र-भाषा सम्बन्धी सुस्पष्ट नीति को झकझोरती रहती हैं। फलतः भीरु नेता गण राष्ट्रैक्य की निर्मात्री राष्ट्रभाषा विषयक ऊलजलूल वक्तव्य प्रसारित करके अपनी तुष्टी-करण की भावना प्रदर्शित करते रहते हैं।

ज्ञातव्य है कि इस्लामी धर्मपुस्तक के आदेशों के अनुसार भारत में धर्म-निरपेक्षता के सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप देना उतना ही कठिन है जितना कि बन्दूक से छूटी हुई गोली को वापस लेना। जहां इस्लाम की मान्यतायें न मानने वाला हर व्यक्ति काफिर है, वहां विश्वबन्धुत्व की कल्पना, सौहार्द की स्थापना का प्रयास भुलावा है, प्रवंचना है। पाठक इस पर गंभीरता से विचार करें। काफिर का वध जन्नत देता है। काफिर से हाथ का मिलाना दोजख। फिर भला कौन जन्नत के सुख से वंचित होना चाहेगा? कौन तुम्हारी धर्मनिरपेक्षता पर ईमान लायेगा? वह तो इस दुर्बलता का भरपूर लाभ लेगा। हमें अपनी आंखों में धूल झुंकवाना ही अच्छा लगता है तो दूसरों को क्यों दोष दिया जाये? यही हाल ईसाइयों का है। "शासन गया तो मूल पर प्रहार करो" की नीति से भारत को ईसाई बनाने का संकल्प इसी दुर्बल एवं घातक धर्मनिरपेक्षता की ओट में सफल हो रहा है और हम देश के कर्णधार सत्तालोभ में इस घातक विष को पिये चले जा रहे हैं। पीढ़ियों के लिये धन इकठ्ठा हो जाये। देश, संस्कृति, भाषा जायें भाड़ में। उन्हें क्या लेना देना है?

धर्मनिरपेक्षता को धर्महीनता मान कर इधर हमारी युवा पीढ़ी नास्तिक और सुखवादी होती चली जा रही है। राम, कृष्ण, बुद्ध, नानक, दयानन्द आदि को बकवास मानने लगी है। क्या होगा इस देश का? धर्म के नाम पर होने वाले व्यवसाय, धर्म के नाम पर खूनी क्रान्तियां, धर्म के नाम पर सेक्सवाद का साहित्य आज युवकों को पढ़ने के लिये उपलब्ध है किन्तु धर्म की शाश्वत व जीवनोत्थान एवं सही अवधारणा वाला साहित्य पढ़ने में न उनकी रुचि रह गई है और न सरकार व संस्थाओं द्वारा इधर प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

वास्तव में आज धर्मनिरपेक्षता दिग्भ्रमित हो गई है। धर्मनिरपेक्षता के मूल को परखना होगा। धर्मग्रन्थों की अविवेकपूर्ण आज्ञाओं में संशोधन करना होगा। दण्ड प्रक्रिया कठोर बनानी होगी। सभी भारतवासियों को एक भाषा, एक राष्ट्र भावना तथा समानता की आचार संहिता अपनानी होगी। तभी देश की संस्कृति सुरक्षित रह सकेगी, अखण्डता बनी रहेगी और विश्वराष्ट्रों की होड़ में हम आगे बढ़कर अभावों से मुक्ति पा सकेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रचार साहित्य

१. चुनौती : इस्लामी साम्राज्यवाद को	६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?	४० ,,
३. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	४० ,,
४. हिन्दुओं को चेतावनी	४० ,,
५. मोपला (उपन्यास)	५ रुपये
६. हम सब हिन्दू हैं	४० पैसे
७. पोस्टर : दो प्रकार के	८० ,,
८. इस्लाम में क्या है ?	४० ,,
९. शुद्धि का डंका फिर बजे	८० ,,
१०. इस्लाम क्या है ?	४० ,,
११. इस्लामिस्तान बनाने के षड्यन्त्र	४० ,,
१२. हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	४० ,,
१३. Bible in the Balance	६० ,,
१४. A Challenge to the Christian Faith	२५ ,,
१५. पोप की सेना का भारत पर हमला	४० ,,
१६. पादरियों को चुनौती	२५ ,,
१७. बाईबिल को चुनौती	४० ,,
१८. ईसाई मत खण्डन	४० ,,
१९. क्या ईसा खुदा बेटा था ?	४० ,,
२०. और पादरी भाग गया	४० ,,

१००० पुस्तक मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन

३०० से ५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मंदिर, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्यपाल शास्त्री

सामयिक विचार

खालिस्तान की मांग

गुरु नानकदेव ने हिन्दुओं को मुसलमान होने से बचाने के लिए एक आध्यात्मिक धारा प्रवाहित की, जिसे आगे चलकर गुरुगोविन्द सिंह ने सैनिक रूप दिया। स्वर्गीय डाक्टर गोकुलचन्द नारंग ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Transformation of Sikhism from Spiritualism to Militarism (सिखों का परिवर्तन—अध्यात्मवाद से सैन्यवाद) में इस परिवर्त्तन का विस्तार से चित्रण किया है। सिख मत अथवा खालसा पन्थ का रूप कुछ भी रहा हो, उसकी स्थापना हिन्दुओं की रक्षा के लिए हुई थी। अभी उन दिनों को वीते वहुत समय नहीं हुआ, जब हिन्दुओं और सिखों में वैवाहिक सम्बन्ध होते थे—इतना ही नहीं, अनेक हिन्दू परिवारों का एक वच्चा सिख मत में दीक्षित किया जाता था। गुरु गोविन्दसिंह अपने पूर्ववर्त्ती गुरुओं की तरह जीवनभर राष्ट्रीय व धार्मिक एकता के लिए संघर्ष करते रहे। किन्तु आज मुट्ठीभर कट्टरपन्थी, उग्रवादी और आतंकवादी सिख पृथक्तावादी प्रवृत्ति के शिकार होकर हिन्दुओं से अलग होने का एक ऐसा खतरनाक आन्दोलन चला रहे हैं, जिसे ३५ वर्ष पूर्व अकाली नेता मास्टर तारासिंह सदृश घोर साम्प्रदायिक नेता भी छोड़ चुके थे।

हाल ही में फ्रांस में भारत के भूतपूर्व राजदूत सरदार हरदित सिंह मलिक का एक संस्मरण प्रकाशित हुआ है। वे लिखते हैं कि सन् १९४६ में जव देश के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण से सम्बन्धित वातचीत प्रथम दौर में थी, तब मुस्लिम लीग के तत्कालीन अध्यक्ष स्वर्गीय मुहम्मदअली जिन्ना ने सिखों के लिए अलग राज्य की सम्भावनाओं पर आखिरी फैसले के लिए महाराजा पटियाला को नई दिल्ली आने का निमन्त्रण भेजा था। उन दिनों सभी सिख रियासतों और सिख राजनीति पर महाराजा पटियाला का वहुत प्रभाव था।

सरदार हरदितसिंह मलिक उन दिनों पटियाला रियासत के प्रधानमन्त्री थे। महाराजा पटियाला कुछ गलतफहमियों के डर से नई दिल्ली नहीं आना चाहते थे और जिन्ना पटियाला जाने को राजी न थे। इस पर सरदार हरदितसिंह मलिक ने व्यवस्था की कि दोनों की मुलाकात नई दिल्ली में मलिक साहव के भाई तेजसिंह मलिक के निवास स्थान नम्वर ४, भगवान्दास रोड (मंडी हाउस के समीप) पर रख ली जाये। सिखों की ओर से महाराजा पटियाला, मास्टर तारासिंह, ज्ञानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करतारसिंह और मलिक साहब थे। दूसरे पक्ष की ओर से अकेले जिन्ना थे। क्योंकि जिन्ना अंग्रेजी में बोलने के अभ्यस्त थे और सिख प्रतिनिधिमंडल में सबसे अधिक अंग्रेजी जानने वाले मलिक साहब ही थे, इसलिए उन्हें ही सिख पक्ष प्रस्तुत करना पड़ा। लम्बी बहस और विचार-विमर्श के बाद जिन्ना ने न केवल पृथक् सिख राज्य की पेशकश की, अपितु 'कोरा चैक' ही पेश कर दिया। लेकिन सिख प्रतिनिधिमंडल तो घर से ही यह फैसला करके चला था कि सिख किसी भी हालत में भारत से अलग न होंगे। वे मानते थे कि सिख अपने अधिकारों की रक्षा भारत में रहकर ही कर सकते हैं। उन्हें जिन्ना के 'कोरे चैक' के जाल में फंसाने का बहुत प्रयत्न किया गया। लेकिन सिख प्रतिनिधिमंडल यह कहकर वहां से उठ आया कि वे अपने साथियों से सलाह-मशविरा करके एक-दो दिन में अपने आखिरी फैसले की सूचना दे देंगे। मलिक साहब ने अपने मित्र सर उषानाथ सेन की सहायता ली। (याद रहे कि सर उषानाथ सेन उन दिनों असोशियेटिड प्रेस ऑफ इंडिया नामक समाचार समिति के संचालक थे।) सेन साहब ने अगले ही दिन नई दिल्ली के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक स्टेट्समैन में यह समाचार प्रकाशित करवा दिया कि सिख राज्य के प्रश्न पर सिख नेताओं और जिन्ना की बातचीत टूट गई है। इसके बाद जिन्ना से इस विषय पर फिर कोई बातचीत न हुई।

खालिस्तान के नाम पर बमविस्फोट सदृश आतंकजनक कार्रवाइयां करने वालों को अपनी मांग रखने से पूर्व सिख इतिहास का अध्ययन करना चाहिए।

हम इस स्तम्भ में अनेक बार लिख चुके हैं कि पंजाब की स्थिति बिगड़ रही है। इस बीच जो सबसे अधिक क्षोभजनक घटना हुई है, वह यह कि २१ जनवरी को दल खालसा के एक सदस्य ने जालन्धर से ४५ किलोमीटर दूर एक गांव में मुख्य मन्त्री सरदार दरबारा सिंह की गर्दन पर कसकर मुक्का लगाया, जिससे वे गिर पड़े। इस घटना से अनुमान लगाया जा सकता है कि आतंकवादियों के हौसले कितने बढ़ चुके हैं।

अब तो सरदार दरबारासिंह भुक्तभोगियों की श्रेणी में आ चुके हैं। क्या आशा की जाये कि अब वे उपेक्षा की नीति छोड़कर पूरी शक्ति से इस देशद्रोहपूर्ण आन्दोलन का दमन करेंगे ?

ब्लिट्ज का विषवमन

बम्बई का साप्ताहिक ब्लिट्ज कुल मिलाकर एक बदनाम अखबार है। कहने को वह कम्युनिस्ट है, लेकिन कम्युनिस्ट नेता भी उस पर विश्वास नहीं करते और निजी बातचीत में मानते हैं कि इस अखबार का लक्ष्य झूठे-सच्चे समाचार छापकर पैसा बटोरना है। हमारे एक मित्र ने ब्लिट्ज (उर्दू संस्करण) का ३० जनवरी का अंक हमें लाकर दिया। इसे पढ़कर हमारे आश्चर्य की सीमा न रही। यह अखबार खुल्लम-खुल्ला मुसलमानों और हरिजनों को भड़का रहा है। अखबार का अधिकांश मुसलमानों की वकालत करने वाले फीचरों से भरा पड़ा है। कुछ शीर्षक देखिये — अमरीका की दोग़ली पालिसी का भरम खुल गया—सलामती कौंसिल में अरब तजवीज़ का वीटो। केरल—मुसलमानों और हरिजनों के लिए जहन्नुम। अक़लियत को लहू-लहू करने वाले फ़िरक़ापरस्तों के ये किताबचे। तबदीलिये मज़हब को रोकने के पसपर्दा बुनियादपरस्तों के खूनी मन्सूबे—रामनाम बोलो या हिन्दुस्तान छोड़ो। अलीगढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम यूनिवर्सिटी—अक़लियती करदार की बहाली मुसलमानाने हिन्द की आज़माइश। शहीद अब्दुल हमीद के ख़ानदान के साथ देश क्या कर रहा है? ये तो रहे शीर्षक। अब ज़रा देखिये कि शीर्षकों के नीचे क्या लिखा है? "अक़लियत को लहू-लहू करने वाले फ़िरकापरस्तों के ये किताबचे" शीर्षक वाले लेख में दयानन्द संस्थान की चार पुस्तिकाओं के मुखपृष्ठों के फोटो प्रकाशित करके संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी के बारे में लिखा गया है कि "उनके द्वारा प्रकाशित-इन पुस्तिकाओं में विषवमन किया गया है।" जिन चार पुस्तिकाओं को लेकर यह टिप्पणी की गई है, वे हैं—भारत के मुसलमानों का क्या किया जाये? इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां, हिन्दुओं को चेतावनी और इस्लाम में क्या है? समाचार के अनुसार उत्तरप्रदेश की गृहमन्त्री रानी स्वरूप कुमारी बख्शी को सूचित कर दिया गया है और उनसे मांग की गई है कि तुरन्त जांच करके अपराधियों को गिरफ्तार किया जाये। यहीं पर बस नहीं, गोरखपुर डेटलाइन से प्रकाशित इस समाचार में नगर युवक कांग्रेस (इन्दिरा) के अल्पसंख्यक सैल के अध्यक्ष ख्वाजा वजीहुद्दीन के हवाले से लिखा गया है कि न केवल गोरखपुर अपितु सारे भारत के मुसलमानों की मजहबी भावनाओं को ठेस पहुंचाई गई है और क़ुरान शरीफ़ का अपमान किया गया है। ख्वाजा का विचार है कि इसके पीछे एक संगठित षड्यन्त्र है, जिससे देश में साम्प्रदायिक दंगे होने की आशंका है। ख्वाजा ने यह सूचना भी दी है कि वे इस सिलसिले में शीघ्र उ० प्र० के मुख्यमंत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह, केन्द्रीय गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह और प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के पास शिष्टमंडल ले जायेंगे।

(याद रहे कि ब्लिट्ज के उर्दू संस्करण के सम्पादक हसन कमाल नामक एक मुस्लिम सज्जन हैं। मुख्य सम्पादक का नाम तो हमारे पाठक जानते ही होंगे—आर० के० करंजिया। करंजिया साहब पारसी हैं।)

सरकार हिन्दू पत्र-पत्रिकाओं पर तो ज़रा-ज़रा-सी बात पर धारा १५३ए, २९५ व २९५ए के अधीन मुकद्दमे दायर कर देती है, क्या उसका ध्यान ब्लिट्ज के उर्दू संस्करण की ओर नहीं गया? क्या इन बातों से हिन्दू-मुस्लिम सौमनस्य बढ़ेगा? इन्दिरा कांग्रेस एक ओर तो धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देती है और दूसरी ओर अल्पसंख्यकों के वोट बटोरने के लिए उनकी हर उचित-अनुचित मांग का समर्थन करती है। इन दोनों बातों का आपस में मेल कैसे बैठ सकता है? क्या बहुसंख्यकों को दबाने और बदनाम करने का ही नाम धर्मनिरपेक्षता है? ब्लिट्ज की चतुराई देखिये कि क्योंकि उर्दू संस्करण के अधिकतर पाठक मुसलमान होने की सम्भावना है, इसलिए यह समाचार केवल उर्दू संस्करण में प्रकाशित किया गया है। यदि सरकार हिन्दू-मुस्लिम सौमनस्य की इच्छुक है, तो उसे ऐसे प्रचार पर रोक लगानी चाहिए। ब्लिट्ज के अतिरिक्त बाबू जगजीवनराम और उनके पुत्र सुरेश राम खुल्लमखुल्ला मुसलमानों और हरिजनों को भड़का रहे हैं। इस घटाटोप अन्धकार में आशा की किरण है, तो यह कि आम जनता इन्दिरा कांग्रेस, ब्लिट्ज और जगजीवनराम-सुरेश की पैंतरेबाजियों से भलीभांति परिचित है और इनके धोखे में नहीं आयेगी। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जगजीवनराम मुसलमानों और हरिजनों को भड़काने के लिए कितना भी जोर लगालें, जनता उन्हें घास नहीं डालेगी। ब्लिट्ज पहले से ही बदनाम है और इन्दिरा कांग्रेस का मुलम्मा उतर रहा है। साम्प्रदायिक मुसलमानों को तो इस नारे पर भी आपत्ति है कि "वन्दे मातरम् गाना होगा या भारत से जाना होगा।" ऐसे लोगों का तुष्टीकरण कैसे सम्भव है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम युवा सम्मेलन

नई दिल्ली के रामलीला मैदान में ३० दिसम्बर से पहली जनवरी तक मुस्लिम युवा सम्मेलन हुआ। उपस्थिति १५० से ऊपर न जा पाई। वक्ताओं ने कम उपस्थिति की कसर जोशीले, गरमागरम और क्रोधपूर्ण भाषणों से पूरी करनी चाही। मुसलमानों से अपील की गई कि वे इस सरकार को उखाड़ फेंकें। मजलिसे इत्तहादुल्मुस्लिमीन, हैदराबाद के अध्यक्ष ओवेसी एम०एल०ए० ने कहा कि हमें यह भावना वापस लानी है कि हम शासक हैं।

इन्हीं भावनाओं को दोहराते हुए अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यलय छात्र संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष जावेद हबीब ने कहा कि शताब्दियों पूर्व मुहम्मद बिन कासिम नाम के मुसलमान नौजवान ने सिन्धु नदी के तट पर उतरकर राम की भूमि अर्थात् भारत को जीता था। "आज फिर हम उसी यात्रा पर निकले हैं। हममें वही भावना है और हम मुहम्मद बिन कासिम के इतिहास को दोहराने के लिये जामा मस्जिद से चलकर रामलीला मैदान में जमा हुए हैं।"

मुसलमान अभी उस समय को भूले नहीं, जब वे शासक थे और पुनः शासक बनने के लिए बेचैन हैं। राजधानी में जो कुछ हुआ, वह आपने ऊपर की पंक्तियों में पढ़ा। लेकिन यहीं पर बस नहीं। मुसलमानों ने विदेशों में भी मोर्चे संभाल लिये हैं। न्यूयार्क की पत्रिका 'इन्डिया ऐब्राड' के १५ जनवरी के अंक में जनता पार्टी के संसत्-सदस्य सय्यद शहाबुद्दीन का वह भाषण प्रकाशित हुआ है, जो उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (लास एंजलिस) में दिया। जिस बैठक में वे बोले, उसका आयोजन अमरीका और कनाडा में भारतीय मुसलमानों की सलाहकार समिति ने किया था।

सय्यद शहाबुद्दीन ने कहा कि "भारत में मुसलमानों के भौगोलिक विभाजन, उनकी आबादी और भारत के अनेक पड़ोसी देशों के समतुल्य उनकी नस्ल के कारण उनमें (भारत के मुसलमानों में) जिस शक्ति का जन्म हुआ है, वे उसका इस्तेमाल भारत में राजनैतिक सन्तुलन को अपने पक्ष में झुकाने के लिए कर सकते हैं। भारत के मुसलमानों को चाहिये कि वे एक ही राजनैतिक दल को वोट न दें, अपितु सब राजनैतिक दलों से सम्बन्धित रहें। यदि आप बुद्धिमान् हैं, तो आप सब राजनैतिक दलों को खुश रखें, ताकि वे सब आपकी कीमत डालें।"

लेकिन श्रोता इतना सुनकर भी सन्तुष्ट न हुए। कुछ श्रोताओं ने सय्यद शहाबुद्दीन से कहा कि "अभी आप ने भुगता नहीं, अभी आप शिकार नहीं हुए, इसलिए आप ऐसी बातें करते हैं। आप तो ऐसे वस्तुनिष्ठ (निष्पक्ष) बन रहे हैं, जैसे किसी कार्पोरेशन का कोई उच्च अधिकारी होता है।"

पिछले दिनों मुस्लम लीगी नेता मुहम्मद सुलेमान सेठ ने भी कहा था कि "हम एक ऐसी स्थिति पैदा कर देना चाहते हैं, जिसमें कोई भी राजनैतिक दल हमारी सहायता के बिना सरकार न बना सके।"

मुसलमानों के इरादे स्पष्ट हैं। वे इस देश को दारुल हरब (शत्रुदेश) समझते हैं और इसे पहले दारुल अमन (ऐसा देश, जहां शान्तिपूर्वक इस्लाम की शक्ति बढ़ाई जाये) और उसके बाद दारुल इस्लाम (इस्लामी देश) बनाना चाहते हैं।

क्या अब भी हमारी आंखें नहीं खुलेंगी?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैदराबाद को मिनी-पाकिस्तान बनाने के नापाक इरादे

नई दिल्ली। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि कुख्यात तस्कर हाजी मस्तान व फिल्म अभिनेता दिलीपकुमार ने, जिसका असली नाम यूसुफखां है, १० करोड़ रुपये हैदराबाद क्षेत्र को मिनी-पाकिस्तान बनाने के लिए दिये हैं। यह भी पता चला है कि २ करोड़ रुपये हैदराबाद के मुख्यमन्त्री को भी भेंट में दिए गये हैं, जिससे वे उनके नापाक इरादों में कोई रुकावट न पैदा करें।

हैदराबाद हिन्दू रक्षा समिति के प्रधान श्री गोविन्दनारायण विजयवर्गीय ने यहां संवाददाताओं को बताया कि हैदराबाद और आंध्रप्रदेश में सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने में ये दोनों व्यक्ति विशेष रुचि ले रहे हैं। बंजारा हिल की ४०० एकड़ भूमि एक बदनाम मुस्लिम संस्था द्वारा खरीदी गयी है, जो देश में झगड़े कराने के लिए उत्तरदायी बताई जाती है। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु: ने मांग की है कि भारत सरकार तुरन्त कदम उठाकर विदेशी धन के प्रभाव से देश की आजादी को खतरे में पड़ने से बचाये "अगर विदेशी धन का प्रयोग इसी तरह बढ़ता चला गया तो देश की आजादी खतरे में पड़ जायेगी।" आपने कहा कि यह भी पता चला है कि दिल्ली में जो मुस्लिम युवा सम्मेलन हुआ था, उसमें भारत सरकार को उलटने के षड्यन्त्र रचे गये । सी० आई० डी० इन देशद्रोही तत्त्वों पर अंकुश रखे अन्यथा देश की स्वतंत्रता खतरे में पड़ जायेगी।

ब्लिट्ज (उर्दू संस्करण) की बौखलाहट

नई दिल्ली। अपने देशद्रोही हथकंडों को प्रकट होते देखकर विदेशी तत्त्वों से प्रेरणाप्राप्त मुसलमानों ने ३० जनवरी १९८२ के ब्लिट्ज में सुप्रसिद्ध वैदिक संगठन दयानन्द संस्थान के विरुद्ध विषवमन किया है।

हिन्दू रक्षा समिति मे इन सांप्रदायिक तत्त्वों के विरुद्ध कठोर पग उठाने की मांग की है।

चिड़ियाघर में एक शेर ने इतनी जोर से दहाड़ मारी कि एक व्यक्ति को छोड़कर शेष सभी दर्शक बेहोश हो गए। चिड़ियाघर का एक अधिकारी उस व्यक्ति की ओर प्रशंसाभरी दृष्टि से देखता हुआ बोला—"लगता है आप बहुत निडर हैं।"

उस व्यक्ति ने जवाब दिया—"जी नहीं, दरअसल मैं तो हर रोज ऐसो दाहड़ें सुनने का आदी बन चुका हूं।"

"क्या आप किसी चिड़ियाघर में काम करते हैं?", अधिकारी ने पूछा।

"जी नहीं, मैं शादीशुदा हूं।" बेहोश न होने वाले व्यक्ति का उत्तर था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आक्रोश जनता का

महोदय !

बड़े अफसोस की बात है कि जो सरकार हमेशा हिन्दुओं के वोट व समस्त सहयोग द्वारा खड़ी की जाती है, वही सरकार श्रीमती राकेशरानी पर धारा २९५ व २९५ ए के अन्तंगत अभियोग स्थापित करके हिन्दुओं पर इस प्रकार का प्रहार कर रही है। शासन द्वारा हमेशा हिन्दू संस्थाओं पर प्रहार किये जाते हैं, क्योंकि शासन हिन्दुओं के वोटों को अपनी झोली में समझता है और अन्य समुदायों के वोटों को प्राप्त करने के लिए यह गद्दार शासन हिन्दू संस्थाओं पर प्रहार करता है। इस तरह के प्रहार को समस्त हिन्दू समाज चुनौती समझेगा और उसे स्वीकार करेगा। शासन को यह भी दिखा देगा कि अगर हजारों राकेशरानियों पर अभियोग तो क्या उन्हें फाँसी भी दे दी जाये तब भी हिन्दू समाज की मर्यादा कम नहीं की जा सकती। मैं समस्त हिन्दू संस्थाओं से निवेदन करता हूं कि वह शासन की इस चुनौती को स्वीकार करें और इसके खिलाफ आवाज उठाकर शासन को दिखा दें कि जिन हिन्दुओं से मांगी गयी भीख के टुकड़ों पर तुम पल रहे हो, उन्हीं पर प्रहार कर रहे हो जो कि कभी सहन नहीं किया जा सकता। उनसे यह भी पूछा जाय कि देश में अनेक ईसाई व इस्लामी संस्थायें भी हैं; उनके खिलाफ अभियोग क्यों नहीं स्थापित किए जाते ?

मैं समस्त हिन्दुओं से प्रार्थना करता हूं कि इस अभियोग का शक्ति के साथ विरोध करें और आर्यसमाज व हिन्दुत्व की रक्षक श्रीमती राकेशरानी जी के साहस को वनाये रखने में अपना सहयोग दें।

अजीतसिंह वर्मा
मुजफ्फरनगर

आधी रात के समय एक सज्जन ने डाक्टर साहब के घर का दरवाजा खटखटाया। डाक्टर साहब ने आकर पूछा, 'क्या बात है ?

केस सीरियस है। आपको अभी पालम चलना है; आगन्तुक ने कहा।

डाक्टर साहब शीघ्र तैयार हुए और सज्जन को साथ ले कार स्टार्ट कर चल दिये। पालम पहुंचने पर सज्जन ने डाक्टर से पूछा, 'आपकी फीस कितनी है ?'

सामान्यतः १० रुपये, घर जाने के बीस रुपये और रात्रि में किसी के यहां जाने के तीस रुपये, डाक्टर ने उत्तर दिया।

सज्जन ने तीस रुपये निकल कर दे दिये। लेकिन मरीज कहां है ? डाक्टर ने पूछा।

'मैंने मरीज की बात कहाँ कही थी। आज रात टैक्सियों की हड़ताल है और मुझे प्लेन जरूर पकड़ना है। अच्छा...।' यह कह सज्जन चलते बने।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुर्ग के निकट १४ निर्धन ग्रामीणों की नृशंस हत्या

जिला दुर्ग के कैसतरा गांव में एक निर्धन परिवार के १४ सदस्यों की घर जलाकर एवं लोहे के तेज हथियारों से हमला कर हत्या कर दी गई है। इस हत्या में घर के मुखिया केदार के चार लड़के और केदार की पत्नी एवं पांच पुत्र, बहुएं एवं चार छोटे बच्चे मारे गये हैं। स्वयं केदार एवं दो महिलायें बच्चे को लेकर बाहर काम पर गयें थे, जो बच रहे हैं।

पता चला है कि गांव दुर्ग मुख्यालय से लगभग १०० किलोमीटर दूर है। इस गांव में १०० परिवार रहते हैं। ग्रांव की आवादी लगभग ४०० है। इस गांव में हरिजनों, यादवों, तेलियों एवं कुछ ब्राह्मणों के घर हैं।

इतनी बड़ी घटना घटित हुई किन्तु ग्राम का कोई भी व्यक्ति डर के मारे घटना का विवरण देने को तैयार नहीं था।

उपरोक्त घटना के संदर्भ में बारीकी से देखने पर तो स्पष्ट ही पता चल रहा है कि पुलिस प्रशासन की शिथिलता सर्वोपरि है।

घटना के तारतम्य में जब दुर्ग जिला आर्यसमाज के पदाधिकारियों को सूचना मिली तब दुर्ग आर्यसमाज के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य श्री गुलावचंद वंसल, मंत्री श्री मृत्युंजय शर्मा, प्रचारमंत्री श्री अविनाश गुप्त, समाज के पुरोहित श्री शालिगराम शास्त्री एवं जिले के वरिष्ठ पत्रकार श्री कृष्णकांत मिश्र अध्यक्ष की जीप द्वारा घटना स्थल पर पहुंचे। घटना स्थल पर कलैक्टर दुर्ग एवं पुलिस अधीक्षक दुर्ग सहित कुछ पुलिस के सिपाही उपस्थित थे। ग्राम का दृश्य अत्यन्त ही भयावह था। उन्होंने वास्तविक घटना घटित होने के स्थान पर जाकर जब देखा तो मकान जला हुआ था एवं उसमें से जले हुए मांस की दुर्गन्ध आ रही थी। प्रतिनिधिमंडल के साथ वहीं पर उपस्थित भूतपूर्व संसद् सदस्य श्री मोहनलाल जैन तथा भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रान्तीय सचिव प्रभुनाथ मिश्र ने भी उनके साथ सूचना एवं घटना से सम्बन्धित तथ्यों पर सहयोग दिया। पुलिस अधीक्षक ने प्रश्नों के उत्तर में बताया कि यह मामला पुरानी रंजिश से संवन्ध रखता है। घटना स्थल का निरीक्षण करने के पश्चात् सभी लोग उक्त ग्राम से ३० किलोमीटर पहले वैमैतरा आये, जहां उन मृतकों का सामूहिक दाह संस्कार स्थल पर किया गया। प्रतिनिधि मंडल ने डी०आई० जी० पुलिस रायपुर संभाग, भिलाई से विधान सभा सदस्य श्री फूलचन्द बाफना से भी मुलाकात की। सभी व्यक्तियों द्वारा घटना के प्रति क्षोभ व्यक्त किया गया। श्मशान में प्रथम बार सामूहिक दाह संस्कार होते देख हृदय को भयंकर दु:ख हुआ। वहां समाचार मिला कि वैमैतरा गांव के एक चौक में कुछ राजनैतिक दलों द्वारा एक शोक-सभा आमंत्रित की गई है। उसमें सम्मिलित होकर आर्यसमाज के सचिव महोदय द्वारा शोक संतप्त परिवार के प्रति गहन संवेदना व्यक्त की गई। दुर्ग आर्यसमाज द्वारा पीड़ित परिवार हेतु हर सम्भव मानवीय सहायता देने के प्रति प्रतिबद्धता का वचन दिया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब तक तेरी नींद न टूटी

—डा० राजेश्वर

कैसा अनुपम देश तुम्हारा !
कितना सुखद, मनोहर प्यारा !
जिसे प्रकृति ने निज हाथों से।
रच-रच, रुच-रुच अकथ संवारा।
गंगा, यमुना, विन्ध्य, हिमांचल।
लहराता असीम नीलांचल।
प्रात अरुण और स्फटिक चांदनी,
मधु ऋतुएं, नितदिन मलयानिल।
शस्य श्यामला, उर्वर भू जो,
उस वसुधा की किस्मत फूटी।
अब तक तेरी नींद न टूटी॥

जिसके कल कल कुल कुल तट पर,
होता था वेदों का गायन।
जिस सुरम्य प्रान्तर में प्रतिक्षण,
लीला, वाल्मीकि रामायण।
सिन्धु नदी का वह सुरम्य तट,
वह पवित्र पीपल, विशाल वट,
ऋषि-मंत्रों से गुन गुन गुन गुन।
करता अब क़ुरान पारायण।
परधर्मी, वह बनी वधूटी।
अब तक तेरी नींद न टूटी॥

कब तक तुम सोओगे प्यारे ?
सब कुछ क्या खोओगे प्यारे ?
अब भी संभलो, शेष बचा जो,
यह भी हारोगे, ज्यों हारे।
टूटेगी यह नींद तभी क्या,
सब लुट जायेगा रे पागल ?
आततायियों ने घर लूटा,
भारत मां की अस्मत लूटी।
अब तक तेरी नींद न टूटी॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाकिस्तानी मुसलमान दरिन्दों द्वारा अमानवीयता का नंगा नाच

—करतारसिंह दुग्गल

ये वे दिन थे, जब मेरे मुंह से जो कुछ भी निकलता, मेरी कोई मित्र वही चीज लाकर मेरे सामने पेश कर देती। पोठोहार में साम्प्रदायिक उपद्रवों के कारण मेरे माता-पिता, भाई व वहन सभी मेरे पास लाहौर आ गये। मेरी एक मित्र को जब उनके आने की पूर्वसूचना मिली, तो उसने माडल टाउन में अपनी कोठी खाली करके उसकी चाबियां मुझे दे दी। स्वयं वे लोग किसी पहाड़ी स्थान पर गर्मियां बिताने चले गए थे।

हमारे घर वाले जिस प्रकार भरा-पूरा घर पीछे अपने गांव में छोड़कर आये थे, उसी प्रकार का खुला-डुला बंगला उन्हें माडल टाउन लाहौर में मिल गया। इतना बड़ा अहाता था, जिसमें मेरी मां सब्जियां बीज सकती थीं। फलों के पेड़ भी थे। एक दिन किसी को खोज रहे माली ने आकर बताया कि वहां ढेर सारे कारतूस दबे पड़े थे। राम जाने कि किस व्यक्ति ने कब उन्हें वहां छिपाया था। मेरे पिताजी खुश थे कि अपनी दोनाली बंदूक के लिए टोकरी भर कारतूस उनके हाथ लग गये थे।

रात के समय हम कोठी की छत पर सोते थे। नित्य मेरे पिताजी बंदूक तथा कारतूसों का 'गातरा' उठाकर अपने साथ ले जाते तथा सुबह वापस लाते। साम्प्रदायिक उपद्रवों की कोई न कोई घटना लाहौर में भी हो जाती थी। पास-दूर के शहरों में तो जैसे उपद्रवों की ज्वालायें भड़क उठने के लिये बेकरार थीं ही। हिन्दुओं तथा मुसलमानों में तनाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। ज्यों-ज्यों मुस्लिम लीग का प्रचार जोर पकड़ रहा था, पाकिस्तान में परिस्थितियां बिगड़ती जा रही थीं।

मेरे माता-पिता पोठोहार के उपद्रवों की जो कहानियां सुनाते थे, उन्हें सुनकर मेरे रौंगटे खड़े हो जाते थे। उपद्रवकारी ढोल बजाकर दिन दहाड़े गांवों पर हमला करते। सहायता के लिये उनके साथ पुलिस होती। पहले हिन्दुओं-सिखों की युवा बहू-बेटियों को छाँटकर अलग कर लिया जाता, फिर उनके घरों को लूटा जाता। जो पुरुष अपनी सम्पत्ति तथा इज्जत की रक्षा के लिए आवाज उठाता उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता। फिर हिन्दू-सिख महल्लों को अग्नि की भेंटकर दिया जाता।

उपद्रवकारी सब प्रकार के हरबे अपनाते। कभी कहते कि तुम लोग अपनी जान बचा लो। बस अपना शास्त्रास्त्र तथा समस्त गहने और नकदी हमारे हवाले कर दो। जब ऐसा करके हिन्दू तथा सिख निहत्थे हो जाते, तो गुंडे किसी न किसी बहाने उन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर हमला कर देते और हिंसा का चक्र शुरू हो जाता। औरतों की इज्जत लूटी जाती और पुरुषों के सीने में बर्छियां उतारी जातीं। बच्चों को नेजों पर उछाला जाता और बूढ़े-बूढ़ियों की चर्बी से आग की ज्वालायें प्रचंड हो उठतीं।

कल जो भाइयों-बहनो की तरह हंसते-खेलते थे और आपस में मिलकर रहते थे, आज एक-दूसरे को पहचानते तक नहीं थे। हरे चोगों वाले पीर, सफेद दाढ़ियों वाले मुल्ला गुंडों तथा उपद्रवकारियों का नेतृत्व कर रहे थे। उपद्रवकारियों ने नक्शे बनाये हुए थे। गांव-गाव के विवरण उनके पास तैयार थे। किस-किस के पास शस्त्रास्त्र हैं, किस-किस के घर में गहने तथा नकदी हो सकती है, कहां-कहां जवान-जवान बहू-बेटियां तथा परियों जैसी पोठोहारनें हैं—सब विवरण उनके पास मौजूद था।

बेशक पोठोहार के हिन्दुओं-सिखों को भेड़-बकरियों की तरह काटा गया। बेशक उनकी धन-सम्पदा लूट ली गई, बेशक वे बेघर हो गये, परन्तु जिस प्रकार अपने देश तथा धर्म के लिये उन्होंने बलिदान दिये, जिस प्रकार जान हथेली पर रखकर शहीद हुए, जिस प्रकार उनकी बहू-बेटियों तथा कुंवारी कन्याओं ने कुएं में छलांग लगाकर अपने शील की रक्षा की, इसका उदाहरण विश्व इतिहास में बहुत कम मिलता है।

कहीं किसी परी जैसी पाठोहारन को पूर्ण निर्वस्त्र करके उसका जलूस निकाला गया। उसकी छातियों पर 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' और 'ला-इला' लिख गया परन्तु वह अपने धर्म पर उसी प्रकार कायम रहीं। किसी मां को आंखों के सामने उसके बच्चों को नेजों पर उछाला गया, उसके अंग-अंग को छलनी किया गया, पर उस मां का अपने धर्म के प्रति ईमान नहीं डिगा। किसी धार्मिक प्रकृति के पति के हाथ-पैर बांधकर उसकी आंखों के सामने उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार किया गया। कहीं किसी पिता को खम्भे के साथ बांधकर उसकी आंखों के सामने उसको बेटियों को इज्जत लूटी गई, पर पाठोहारी का अपने इष्ट के प्रति विश्वास न घटा।

१०१ महिलाए 'सत नाम श्री वाहेगुरु' का जाप करती हुई किसी कुएं में कूदीं, कुआं भर गया और उपद्रवकारियों की अमानवीयता मुंह बाए ताकती रह गई। सारी की सारी उम्र मुसलमान पड़ोसियों के प्रेम में ओत-प्रोत शरीफ बूढ़े-बुढ़िया आग की लपटों के हवाले किये गये परन्तु अपने धर्म में उनका विश्वास उसी प्रकार बना रहा। अपने मंदिरों तथा गुरुद्वारों की पवित्रता की रक्षा करते हुए श्रद्धालु छलनी-छलनी हो गये। विभिन्न स्थानों पर अनगिनत हिन्दू बेघर भूखे पड़े रहे परन्तु उन्होंने मुसलमानों के हाथों का पका हुआ भोजन नहीं खाया। अनेक स्थानों पर नित्य नियम करने वाली सिख तथा हिन्दू महिलाओं के मुंह में गोमांस ठूंसा गया। मासूम बच्चों को पेड़ों पर उलटा लटकाकर उनकी चमड़ी उधेड़ी गई और यह दृश्य उनकी माताओं को दिखाया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हृदय रोग : बचने के उपाय

—डा० राजन

यदि यह कहा जाए कि स्वस्थ, सुखी और दीर्घ जीवन के लिए अपने दिल पर रहम कीजिए, तो अत्युक्ति नहीं होगी। दिल और दिमाग शरीर के दो ऐसे अंग हैं, जिनके क्रियाशील रहने पर ही जीवन का अस्तित्व रहता है। दिल के माध्यम से हमारे शरीर में रक्त का संचालन होता है। दिल की धड़कन ही जीवन की द्योतक होती है और तब तक यह धड़कन बनी रहती है जब तक वह जीवित रहता है। अतः हृदय शरीर का कितना महत्त्वपूण अंग है यह आसानी से समझा जा सकता है।

हृदय रोग के कुछ प्रमुख कारण

चर्बी का जमाव—विभिन्न परिवारों के खान-पान, रहन-सहन और काम करने के तौर-तरीकों का वैज्ञानिकों द्वारा विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ है कि जिन व्यक्तियों के भोजन में चर्वी की मात्रा अधिक रहती है अथवा जो अधिक परिमाण में भोजन करते हैं, उनके शरीर में ठोस चर्वी (सैचुरेटिडफैट) अधिक जमा हो जाती है। इस प्रकार कैलोरिज और कोलेस्टरोल नामक द्रव्य शरीर में अधिक मात्रा में संगृहीत होकर ठोस चर्वी से उत्पन्न कोलेस्टरोल के साथ मिल जाते हैं। परिणाम यह होता है कि शरीर में कोलेस्टरोल रक्तवाहिनी धमनियों में आवश्यकता से अधिक बढ़ जाता है, जिससे धमनियां तंग हो जाती हैं, जिसके कारण हृदय पर अत्यधिक दवाव पड़ने लगता है। परिणाम होता है दिल का दौरा। यदि तत्काल डाक्टरी सहायता मिल पाए और दिल का दौरा तेज न हो, तो आज कल ८०% व्यक्तियों को दिल के दौरे के आघात से बचाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त हृदय रोग का दूसरा कारण है—शारीरिक श्रम का अभाव। शारीरिक श्रम के अभाव में कोलेस्टरोल शरीर में जमा हो जाता है। इसलिए यह स्पष्ट है कि हृदय रोग का मुख्य कारण केवल चर्वी की अधिकता ही नहीं, अपितु शारीरिक श्रम का अभाव भी है। यदि अधिक भोजन के साथ खूब शारीरिक श्रम भी किया जाए, तो कोलेस्टरोल शरीर में जमा नहीं होता।

शरीर में चर्वी की वृद्धि के साथ हृदय रोग का अन्य कारण है—भोजन में मैगनिशियम की कमी। मैगनिशियम की कमी से धमनियों में कैलशियम जमा होने लगता है, जिससे धमनियां कड़ी हो जाती हैं और दिल के दौरे का कारण बनती हैं लेकिन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाय के प्रयोग से यह दोष बहुत कुछ अंशों में दूर हो जाता है। चाय में क्लोराइड नामक तत्त्व होता है, जो धमनियों में जमा होने वाले कैलशियम को कम करता है।

हृदय रोग के अन्य प्रमुख कारणों में अधिक बीड़ी, सिगरेट पीना, दूषित वातावरण में रहना, मधुमेह व रक्तचाप के रोग शामिल हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि हृदय रोग को बढ़ाने में यौन संसर्ग भी सहायक होता है क्योंकि संसर्ग के समय हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। इसलिए हृदय रोग के रोगी के लिए यह डर बना रहता है कि कहीं कमजोर दिल धड़कना बन्द न कर दे।

इन कारणों के अतिरिक्त शिक्षित तथा उच्च शिक्षाप्राप्त व्यक्तियों मानसिक तनाव तथा मानसिक कुंठा के बढ़ जाने से शीघ्र ही इस रोग के घेरे में फंस जाते हैं।

हृदय शरीर का एक कोमल तथा बहुमूल्य अंग है। इसलिए हृदय पर प्रत्येक छोटी-बड़ी बात का बोझ डालना, जरूरत से अधिक निरन्तर सोच-विचार करते रहना, हर समय किसी न किसी विषय को लेकर चिन्ताग्रस्त रहना इत्यादि हृदय के साथ अन्याय करना नहीं तो फिर क्या है ? आप सोचते हैं कि आपने अपने दिमाग को उलझा कर रखा है किन्तु आप नहीं जानते कि दिमाग को नहीं परन्तु आप दिल को उलझन में डालकर अपनी जिन्दगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। बराबर ध्यान रखें कि आप हृदय रोगों के आक्रमण से अपनी रक्षा अवश्य कर सकते हैं। इसके लिए पहली शर्त है कि आप अपने दिल पर रहम कीजिये।

हृदय रोग से बचने हेतु निम्नलिखित उपाय अपनायें—

मानसिक चिन्ता, निराशा, कुंठा एवं उदासीनता का सदा के लिये त्याग कर दें, अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा, क्योंकि ये सदा के लिए आपके शरीर को नष्ट कर देंगे।

मांस, मछली, अंडा, मक्खन, घी, पनीर, मिठाई आदि पदार्थों का सेवन बन्द कर दें क्योंकि ये पदार्थ शरीर में वसा की वृद्धि कर मानव शरीर में विष के समान कार्य करते हैं। मांस तथा अंडे के प्रयोग से मानव शरीर में कोलेस्टरोल की वृद्धि होती है, इसलिए ऐसे पदार्थों का सेवन शीघ्र सर्वत्र त्याज्य है। इसके विपरीत हृदय रोगी को शाकाहारी आहार-विहार करना चाहिए, क्योंकि यह आहार रक्त-वर्धक होता है और हृदय रोग को भी नहीं पनपने देता।

हृदय रोगी को मदिरासेवन, धूम्रपान आदि के दर्शन तक नहीं करने चाहिए, क्योंकि इन पदार्थों में मौजूद निकोटिन नामक पदार्थ रक्त-चाप को बढ़ा देता है, इसलिए हृदय अवसाद होने का खतरा हर समय बना रहता है। एक सर्वेक्षण के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि नित्यप्रति २० सिगरेट प्रयोग करने वाला अवश्य इस रोग से पीड़ित होकर शीघ्र मरता है।

समय-समय पर हृदय रोगी को अपने रक्तचाप की जांच करवानी चाहिए। घबराहट, धड़कन बढ़ जाने पर, वायु और दर्द होने पर तथा पसीना आने पर या बेहोशी छाने पर तुरन्त योग्य डाक्टर या वैद्य को दिखलाना चाहिए अन्यथा किसी समय आप कालग्रस्त हो सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अध्यक्षता में शाहगंज में विराट् हिंदू सम्मेलन

अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने की अपील

दिल्ली। शाहगंज (जिला जौनपुर) हिन्दू रक्षा समिति की कार्यकारिणी के सदस्य श्री इन्दुनाथ पांडे ने, जो पिछले दिनों यहाँ आये थे, सूचित किया है कि सात मार्च को शाहगंज में विराट् हिन्दू सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षुः जी करेंगे।

शाहगंज हिन्दू रक्षा समिति के महामन्त्री श्री जयचन्द्र आर्य सम्मेलन की तैयारियों में जुटे हुए हैं।

कार्यक्रम इस प्रकार है—

सात मार्च को सांयकाल चार बजे शाहगंज में विराट् सार्वजनिक सभा होगी। रात को सात बजे पूर्वांचल के कार्यकर्त्ताओं की बैठक होगी। आठ मार्च को प्रातःकाल ९ बजे कादीपुर (जिला सुलतानपुर) और दोपहर ११ बजे अकबरपुर (जिला फैजाबाद) में सार्वजनिक सभा होगी।

महात्मा वेदभिक्षुः जी ने क्षेत्र के लोगों से बड़ी संख्या में सम्मेलन में भाग लेने की अपील की है।

श्री इन्दुनाथ पांडे ने एक वक्तव्य में बताया कि यद्यपि शाहगंज में हिन्दुओं की आबादी ८० प्रतिशत है, तथापि वहां के मुसलमान उक्त क्षेत्र से निर्वाचित लोकसभा सदस्य डा. यू. ए. आजमी (लोकदल) की शह पर हिन्दुओं को दबाना चाहते हैं। इन मुसलमानों ने दिसम्बर १९८० में भारत माता का पुतला बनाकर उस पर से मोटरसाइकल गुजारा और 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाये। जब हिन्दुओं ने विरोध किया, तब उन पर सड़े-गले अंडे, टमाटर, जूते आदि फेंके गये और कहा गया कि "मुस्लिमविरोधी काफिरो, तुम्हारा यही अंजाम होगा।" मुसलमान बारावफात के अवसर पर जुलूस निकालकर खुल्लमखुल्ला पाकिस्तानी मनोवृत्ति का प्रदर्शन करते हैं और साम्प्रदायिक भावनाएं भड़काते हैं। पिछले वर्ष इन प्रवृत्तियों का विरोध करने पर तत्कालीन जिलाधीश ने हिन्दुओं को नंगा कर के उन्हें लाठियों से पिटवाया, गिरफ्तार किया और मुकद्दमे चलाये। केन्द्रीय कार्यालय से हिन्दू रक्षा समिति ने जो साहित्य भेजा था, वह भी जब्त कर लिया गया, जबकि कोई भी पुस्तक जब्त करने का अधिकार केवल राज्य सरकार अथवा केन्द्रीय सरकार को होता है। यहीं पर बस नहीं, हिन्दू रक्षा समिति के सदस्यों को समिति का कोई भी काम करने से रोक दिया गया है। हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी सम्बन्धों में तनाव तभी समाप्त हो सकता है, जब सरकार न्याय करे और किसी सम्प्रदाय के लोगों को यह छूट न दे कि वह अन्य सम्प्रदाय के लोगों को दबायें या कुचलें। शाहगंज में तो स्थिति यह रही कि सन् १९६५ में जब एक हिन्दू ने एक मुसलमान से पाकिस्तान रेडियो न सुनने को कहा, तब उसे गोली से उड़ा दिया गया। हत्यारा फिर भी बच निकला।

केन्द्रीय हिन्दू रक्षा समिति ने इस सम्बन्ध में अनेक केन्द्रीय नेताओं को तार भेजकर स्थिति को संभालने की अपील की है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांधी को बच्चे ऐसे अपनायें . . .

कक्षा में. . .

१. नकल नहीं करेंगे। मन लगाकर पढ़ेंगे।
२. कमजोर विद्यार्थी की सहायता करेंगे।
३. समय की पावन्दी रखेंगे।
४. शिक्षकों का सम्मान करेंगे।
५. दण्ड से वचने के लिए झूठ नहीं वोलेंगे।
६. सामान और श्रम की चोरी नहीं करेंगे।
७. चुगली नहीं करेंगे।
८. बुरी संगत में नहीं पड़ेंगे।
९. गाली नहीं देंगे।
१०. अनुशासन नहीं तोड़ेंगे।
११. आत्म निर्भर वनेंगे।

परिवार में. . .

१. वड़ों का मान करेंगे।
२. छोटों को प्यार करेंगे।
३. अतिथि का सत्कार करेंगे।
४. दीन दुःखी की सेवा करेंगे।
५. किसी पर वोझ नहीं वनेंगे।
६. अपना काम स्वयं करेंगे।
७. कठिनाइयों में विचलित नहीं होंगे।
८. अच्छे पड़ोसी वनेंगे।
९. जीवन में सादगी वरतेंगे।
१०. पसीने से कमाई हुई रोटी खायेंगे।
११. खादी के अर्थशस्त्र को अपनायेंगे।

स्कूल में. . .

१. स्कूल की सफाई रखने में सहयोग देंगे।
२. स्कूल को एक परिवार मानेंगे।
३. जातिभेद और आर्थिक भेद तोड़ेंगे।
४. द्वेष और ईर्ष्या से वचेंगे।
५. स्कूल में छात्रों की सृजनात्मक और वहुमुखी गतिविधियों में भाग लेंगे।
६. स्कूल को समाज के सन्दर्भ में उपयोगी सिद्ध करेंगे।
७. उत्पादनमूलक समाजोपयोगी श्रमसाधक कार्य करेंगे।
८. छुआछूत के कलंक को मिटायेंगे।

समाज में. . .

१. सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा करेंगे।
२. सभी सन्तों का आदर करेंगे।
३. मानव एकता वढ़ायेंगे।
४. शोषण और हिंसा का मुकावला शान्तिपूर्ण और अहिंसक ढंग से करेंगे।
५. समाज के सवसे गरीव आदमी को ऊंचा उठाने का प्रयास करेंगे।
६. किसान और श्रमिक का आदर करेंगे।
७. अन्याय सहेंगे भी नहीं, करेंगे भी नहीं।
८. राष्ट्रीय अनुशासन अपनायेंगे।
९. देशहित को व्यक्तिगत हित से वडा मानेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—विनम्र सेवक

विश्व का आठवाँ आश्चर्य !

आधार—गृह मन्त्रालय, नई दिल्ली का १ मई १९८० का प्रकाशन "एप्रैलिमिनैरी रिपोर्ट ऑन सर्वे ऑन इन्फैन्ट ऐन्ड चाइल्ड मॉर्टेलिटी, १९७९"

महान् आश्चर्य

ऊपर वर्णित प्रकाशन के अनुसार १९७८ के सर्वे ने जानकारी प्रदान की है कि भारतवर्ष की जनसंख्या में मुस्लिमों की प्रतिशत संख्या का ह्रास हो गया है तथा उसी अनुपात में हिन्दुओं की प्रतिशत संख्या में बढ़ोतरी हो गई है—अर्थात् १९७१ में मुस्लिमों की प्रतिशत संख्या ११.२ थी, जो १९७८ में कम हो कर १०.७ प्रतिशत रह गई है तथा हिन्दुओं की प्रतिशत संख्या अब बढ़ कर १९७८ में ८४.१ प्रतिशत हो गई है जो १९७१ की जनगणना के आधार पर केवल ८२.७ प्रतिशत थी [पृष्ठ संख्या ६, स्टेटमेंट ४]

एक हजार वर्ष के पिछले अनुभव ने दिखाया है कि इसके विपरीत मुस्लिम प्रतिशत संख्या सदैव बढ़ती रही है, जिसने अन्ततः पाकिस्तान को जन्म दिया है। उसके उपरान्त स्वतन्त्र भारत में १९४७ के बाद तो यह प्रवृत्ति घटने की अपेक्षा बहुत बढ़ी है—विशेष रूप से १९७१-८१ के दशक में [पृष्ठ संख्या ६२ टेबल १६ के अनुसार]। कारण यह था कि हिन्दुओं ने अधिक मात्रा में परिवार नियोजन किया, जब कि मुस्लिमों ने बहुत ही कम किया।

इसके अतिरिक्त मुस्लिमों की मृत्यु दर भी हिन्दुओं की अपेक्षा कम है।

इन सब कारणों को देखते हुए यह पूर्णतः निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वर्तमान स्थिति में हिन्दू और मुस्लिम प्रतिशत जनसंख्याएँ पहले की भांति ही बदली हैं न कि १९७९ के ऊपर वर्णित सर्वे के अनुसार, जो नितान्त ही भ्रमोत्पादक है—इसलिये हानिकारक भी है।

ऐसी आशा थी कि पेपर नम्बर २ "रेलीजन" १९७२ के समान ही अब १९८१ में पूर्ण की गई जनगणना के आधार पर "रेलीजन" पर नया "पेपर" प्रकाशित होगा, जो सत्यता को सामने लायेगा। परन्तु ऐसा न होकर उल्टा दृश्य ही प्रस्तुत किया गया है। क्या इमाम साहब जामा मस्जिद नई दिल्ली को भी कुछ नहीं कहना है जिसके सारे अनुभवों को यह "सर्वे प्रकाशन" पूर्णतः काट डालता है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान [पंजीकृत ट्रस्ट]

१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग नई दिल्ली ५ । भारत ।

दिनांक १५-२-८२

धर्म रक्षक, आत्मन् ।

परम पिता परमात्मा आपका
सब विधि कल्याण करें ।

शिवरात्रि पर मोह भंग कर
जागरण का संकल्प लें ।
संकट विकट है, कार्य बड़ा है ।
प्रभु के विश्वास पर, और
आप के सहयोग की आशा में—
हम धर्म युद्ध लड़ रहे हैं ।
विजय के लिए
जो भी — कम या अधिक
सहयोग — जिस कार्य के लिए
भी दे सकते हों दिलाएं । और
स्वयं भी उदारता से दान भेजें ।
विजय हमारी होगी — प्रतीक्षा में

वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—हंसराज ख़ादिम

सन् १८५७ की क्रान्ति और स्वामी दयानन्द

१५ अगस्त १९४७ को जिस स्वतन्त्रता संग्राम की पूर्णाहुति महात्मा गांधी ने डाली, उसका शुभारम्भ महर्षि दयानन्द ने ही किया था। भारतीय स्वतन्त्रता दयानन्द के कार्यक्रम की भूमिका थी। उनकी आंखों में वैदिक पुण्य-पुनीत भावनाओं से ओतप्रोत विश्व कल्याणमय चक्रवर्ती आर्यराज्य का भव्य चित्र हर समय नाचता था। वह आदर्श व्यक्ति के निर्माण से आदर्श भारत राष्ट्र खड़ा कर, सभी राष्ट्रों में एक दूसरे के लिये कल्याण, स्नेह, उपकार, सहयोग, सद्भावना जगा, अपने विश्वबन्धुत्व के स्वप्न को साकार हुआ देखना चाहते थे। इस भावना को वह आर्यत्व कहते थे। इस महती पुण्य भावना से ही उन्होंने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् संसार को श्रेष्ठ बनाओ का जयघोष किया। उनकी यह सर्वोदय भावना उनके हर लेख, भाषण, वाक्य, शब्द और बिन्दु में मुंह बोलती स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

कुछ लोग उन्हें केवल धार्मिक नेता और समाज सुधारक ही मानते हैं, किन्तु राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिये अमर प्रखर प्रयास करते हुए उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता की भूमि ही तैयार नहीं की, राष्ट्रीय क्रान्ति का बीजारोपण भी किया। इसका श्रेय स्वतन्त्रता समय कांग्रेस के सत्ता सम्पन्न हो जाने के कारण उन्हें नहीं, कांग्रेस को मिला। परन्तु उनकी राष्ट्रीय क्रान्तिकारी गतिविधियों के तथ्य मुंह बोलते उनके क्रान्तिकारी होने के परिचायक हैं। वे अपने स्वरचित जीवन चरित्र में लिखते हैं कि "१८५७ से लेकर १८५९ तक मैं नर्मदा नदी के तट पर ही घूमता रहा हूं।" महर्षि की इन तीन वर्षों की चुप्पी कम अर्थभरी प्रतीत नहीं होती, क्योंकि नर्मदा नदी का तट वही क्षेत्र है, जहां साधु-मण्डलियों ने अंग्रेज की दासता के विरुद्ध १८५७ में पहली सशस्त्र क्रान्ति की नींव रखी थी। यहां की उनकी प्रखर सक्रियता उनके राजनीतिक जीवन की भूमिका है। वे अंग्रेज के अत्याचारों से विक्षुब्ध थे। १८५७ की स्वतन्त्रता क्रान्ति को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध साधुओं को गुप्त प्रेरणा करके उन्होंने ही धधकाया था। १८६० से १८८३ ई० उनके निर्वाण तक की, उनकी राष्ट्रीय गतिविधियां, उनकी रचनायें, भाषण, लेख, वार्तालाप, पत्र-व्यवहार, वेदभाष्य, उनकी महती राष्ट्रीय भावनाओं और आकांक्षाओं का अनुशीलन इसका ज्वलन्त प्रमाण है। उनकी क्रान्तिकारी विचार-स्वतन्त्रता, राजद्रोह की उनकी भावना, उनके जीवन भर के तपे तपाये गर्माये परिपक्व मंजे तुले विचारों का निष्कर्ष था। देश के कोने-कोने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में घूम फिरकर, देश की जिस दुःखी दारुण दुरवस्था का उन्होंने अवलोकन किया और उसके सुधार, उद्धार और जन-जागरण के लिये जो सिंह गर्जनाएं कीं, वह राष्ट्रीय क्रान्ति का उनके मन-मस्तिष्क में धधकता लावा था। यह कैसे सम्भव था कि जो क्रान्तिकारी धार्मिक मदान्धता, सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों को तो जड़मूल से उखाड़ फैंकने के लिए कृतसंकल्प हो, उसकी पैनी दृष्टि से राष्ट्रीय व्यवस्था, आर्थिक दुर्दशा, राजनीतिक शोषण और विदेशी पराधीनता ओझल रहती। वह अपनी अमर कृति सत्यार्थ-प्रकाश में 'राष्ट्रीय-सिद्धान्तों' के वर्णन के पश्चात् अपनी राष्ट्रीय महत्त्वाकांक्षाओं की सिद्धि के लिये भगवान् से इन शब्दों में सामर्थ्य मांगते हैं—

"हम परमात्मा की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा, हम उसके किंकर भृत्यवत् हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करें, और हमारे हाथों से अपने सत्य न्याय की प्रवृत्ति करावें।"

"अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करें और सत्य और न्याय की प्रवृत्ति हमारे हाथों से कराने" की आकांक्षा सुधार उद्धार की पुकार नहीं, स्वतन्त्रता और स्वराज्य की उत्कण्ठा, क्रान्ति और विप्लव की ललकार है। जब महर्षि का प्रादुर्भाव हुआ था, तब भारत में अंग्रेजी राज्य की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी थीं कि कोई सोच भी नहीं सकता था कि जुल्म और गुलामी के इस ज़हरीले पौधे को जड़मूल से उखाड़ फैंका जा सकता है। भय, आतंक से जनता सहमी हुई थी। राजा महाराजा राग-रंग, नाच भोग विलासिता में फंसे हुए थे। साम्प्रदायिकता और भेदभाव को हवा देकर भारतीयों के मन-मस्तिष्क में यह विचार समो दिया गया था कि भिन्न-भिन्न मत-मतान्तरों के लोग कभी भी मिलकर अपना राज्य नहीं स्थापित कर सकते। ये स्वतन्त्रता के अयोग्य हैं। स्वतन्त्र होते ही ये दरिन्दों की तरह लड़ेंगे।

अंग्रेजी राज्य भारत के लिये भगवान् की देन है। साम्प्रदायिकता के जलते दावानल में झुलसे, जातपात, छुआछूत में फंसे, सामाजिक कुरीतियों में जकड़े, गरीबी में तड़पते, भारत के अस्तित्व की चिता चिनी जा रही थी। लार्ड क्लाइव ने बन्दूक तोप फांसी, से, 'मैकालिफ' ने फूट से, मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भारत को सदैव गुलाम बनाये रखने के भरपूर विध्वसंक प्रयास किये।

१९ वर्ष का दयानन्द देश की परिस्थितियों का अध्ययन करता है। उसने धार्मिक मतान्धता, सामाजिक रूढ़िवादिता, राजनीतिक दासता, आर्थिक दुर्व्यवस्था, पिता की भूमि जोर जबर से हड़पने वाले पूंजीवादियों की विषमता, जन साधारण की दीन-हीनता, अशिक्षा, अंधविश्वास अज्ञान, में फंसे निर्धन, असहाय, कंगाल किसान मजदूरों के खून की कमाई पर राजा को वासना और मादकता के नंगे नाच नाचते, और गरीब दुःखी भूखे नंगे पीड़ा में व्याकुल तड़पते लोगों को भूख की आग में जलते और दम तोड़ते देखा। बहन और चाचा की मृत्यु ने उन्हें आभास कराया कि एक दिन मेरे नश्वर जीवन का भी ऐसे ही अन्त हो जायेगा। उनके पिता ने व्रत धारण कराते हुए उन्हें कहा था 'जागते रहना'। व्रत पर सब सो गये, किन्तु वे जागते रहे, और जीवन भर सोये हुओं को जगाने, अन्धकार में प्रकाश फैलाने के लिये। ऐसे अवसर पर जबकि उन्हें गृहस्थ में जकड़ने के लिये उनके विवाह के गीत गाये जा रहे थे, उनके हृदय में लोक कल्याण की भावना जागी, और वे घर के सब सुखों को लात मारकर अज्ञान, गरीबी और पराधीनता की जंजीरों में जकड़ी मानवता को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नव-जीवन प्रदान करने के लिये कर्मक्षेत्र में कृतसंकल्प हो, क्रान्ति की धधकती चिनगारी बन गये।

१८२५ में उनका जन्म हुआ। १८४४ में १९ वर्ष की आयु में वे घर से निकले। १२ वर्ष तक अपने हृदय के समाधान में वह भिन्न-भिन्न स्थानों पर ऋषि योगी, सन्त, महात्माओं की चरणधूल फांकते रहे। १८५६ में ३३ वर्ष की भरपूर उमंगों भरी जवानी में उन्हें कनखल में स्वामी पूर्णानन्द जी के दर्शन हुए, जिन्होंने उनका 'दयानन्द' नामकरण करके संन्यास की दीक्षा दी। उन स्वामी जी की उस समय आयु १०८ वर्ष की थी। उनकी देशभक्ति की क्रान्तिकारी प्रखर भावनाओं ने दयानन्द को राष्ट्रीय बलिदान-यज्ञ की आहुति बना दिया। वृद्ध स्वामी जी ने उन्हें पूर्ण शिक्षा दीक्षा के लिये अपने आदर्श शिष्य वेदज्ञ स्वामी विरजानन्द के पास जाने का परामर्श दिया और उनका परिचय देते हुए उन्होंने उन्हें बताया कि 'मथुरा के घने वनों में उनकी ही अध्यक्षता में १५ अगस्त सन् १८५६ को स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने वाले सैकड़ों सेनानियों का प्रथम सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें 'तात्या टोपे', 'नाना-साहिब', 'अज़ीमुल्ला', 'रानी झांसी', शहज़ादा बहादुर शाह 'जफर' रंगो बाबू और कुंवर विक्रम सिंह सब साधु फकीरों के वेश में सम्मिलित हुए थे, और वहां शंखध्वनि के मध्य अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा था—"१७५७ में भारत ने अंग्रेजों के विरुद्ध पलासी के मैदान में पहला युद्ध लड़ा। यदि सिराजुद्दौला मराठों से मिलकर संग्राम लड़ता, तो भारत विजयी होता और अंग्रेज के पांव हमारी मातृभूमि पर न जमते, परन्तु सिराजुद्दौला की जहां मराठों से जानी शत्रुता थी, वहां मराठे भी शिवाजी के अखण्ड भारत के आदर्श को भूल जाटों, राजपूतों, राठौरों और पंजाबियों से भी जूझ पड़े। उन्होंने सिराजुद्दौला को अंग्रेज के हाथों बलि का बकरा बनने पर खुशी महसूस की। वे अंग्रेजों की शक्ति को कोई महत्त्व नहीं देते थे। वे समझते थे कि अंग्रेज यहां व्यापारिक अतिथि है। उसे कभी भी उखाड़ फेंका जा सकता है, क्योंकि बम्बई और सूरत में उन्होंने अंग्रेजों की कोठियों को कई बार लूटा और बरबाद किया था। इसलिये जब सिराजद्दौला पलासी के मैदान में अंग्रेजों से लड़ रहा था, मराठों ने उसकी सहायता पर पहुंचने की अपेक्षा दिल्ली में अहमदशाह अबदाली के प्रतिनिधि नजीबुद्दौला से लोहा ले उसे मार भगा, सम्राट् आलमगीर से अपना सिक्का मनवाने में अपनी शक्ति नष्ट की। यदि मराठे सिराजुद्दौला से मिलकर अंग्रेज के पांव उखाड़ देते, तो आज भारत का नक्शा कुछ और होता। हमारी फूट ने ही हमें गुलाम बनाया। हमारी हार के कारण उसे मिली हमारी अथाह सम्पत्ति ने हमें गुलाम बनाने की शह दी। उसने हर राज से एक दूसरे के विरुद्ध एक दूसरे को सहायता करने की साजिशें कीं। इस नीति का शिकार हो आपस में कटे-बंटे हम अंग्रेज के साथ एक दूसरे के मुकाबले में स्वयं ही लड़े और हारे। अंग्रेज ने हमें अपनी शक्ति से नहीं, हमें हमारी तलवार से ही जीता। जो मुगल मराठे राजपूत सिख झूठे जातीय अभिमान में अंग्रेज के विरुद्ध परस्पर इकट्ठे न हो सके, अंग्रेज की गुलामी में सिधाये हुए बन्दरों की तरह उन्होंने न केवल मिलकर सिर ही झुकाये बल्कि उन्हें अंग्रेजी गुलामी के जुए में गर्दनें भी झोंकनी पड़ीं। हमें इस फूट को खतम कर, मिलकर क्रान्तियज्ञ रचा, संघर्ष करना और स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है। स्वतन्त्रता जीवन और परतन्त्रता मृत्यु है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेज ने हमारा धन, कला कौशल, व्यवसाय, व्यापार- सुख, स्वावलम्बिता सब नष्ट कर हमें कंगाल बना दिया है। भारत ने इस पैशाचिक अमानुषिक सत्ता के विरुद्ध सदा-सर्वदा अपनी स्वतन्त्रता का झण्डा लहराये रखा है। १७६४ में बंगाल सेना, १८०६ में मद्रास सेना, १८१८ में पिंडारों और देवी चौधरानी ने, कलकत्ता में ३० संथालों ने मातृभूमि को अपने खून से नहलाकर स्वतन्त्रता-यज्ञ का शुभारम्भ किया। बैरकपुर और मालेर में भारतीय राष्ट्रीय वीरों ने छाती तानकर हमें क्रान्ति की ललकार देते हुए स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर बलिदान दिये। ये बलिदान अंग्रेजों के बढ़ते शोषण दमन उत्पीड़न आतंक के विरुद्ध हमें एक राष्ट्र के रूप में खड़े हो स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने की प्रेरणा और आह्वान हैं। हम हिन्दू और मुसलमान—इस देश के रहने वाले आपस में भाई-भाई हैं। क्योंकि मुसलमान यहां बस गये हैं और इस देश को उन्होंने अपनी मातृभूमि बना लिया है, इसलिये उनका हमारा हित लाभ सांझा है। अंग्रेज इस देश को लूट का माल समझता है। वे हमें खूनी जोंकों की तरह नोच रहे हैं। ऐसे क्रूर दुष्ट विनाशक विदेशी राज्य को उखाड़ फेंकना और देश को स्वतन्त्र कराना हिन्दू और मुसलमान का सांझा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इसके लिये हमें खून की आहुतियां देनी हैं। भारत माता अपने स्वतन्त्रता के लिये अपने वीर पुत्रों को पुकार रही है। स्वतन्त्रता के पुजारियो, सिर हथेली पर रखकर आगे बढ़ो, देश के कोने-कोने में सिंह की तरह दहाड़कर स्वतन्त्रता का जयघोष करो। विजयश्री तुम्हारे स्वागत की प्रतीक्षा में है।"

इन अग्निवाहक विचारों का दयानन्द पर गहरा प्रभाव पड़ा। स्वामी जी ने उन्हें बताया कि "उनकी विद्वत्ता और योग्यता के कारण बहुत-से राजा-महाराजा उनके शिष्य हैं जो उनकी पाठशाला का व्यय चलाते हैं। वे अपने शिष्यों को पढ़ाते हुए राष्ट्रोत्थान का प्रबल दिशानिर्देश देते हैं। सम्मेलन के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कुम्भ के इस मेले पर नर्मदा नदी के तट पर साधु-संतों के क्रान्तियज्ञ का अनुष्ठान किया जा रहा है, जो मेले के बाद क्रान्ति की गुप्त मन्त्रणा के लिए देश भर में फैल जायेंगे। आपको भी इस यज्ञ में अपना सक्रिय योग देना चाहिए। उन दिनों स्वामी पूर्णानन्द का युवा दयानन्द को क्रान्ति के लिए प्रेरणा देना सिद्ध करता है कि पूर्णानन्द, विरजानन्द और दयानन्द तीनों क्रान्ति के उद्घोषक और पोषक थे। दयानन्द १८५५ में कनखल में पूर्णानन्द से मिले थे। वे तभी विद्या प्राप्ति के लिये मथुरा पहुंच सकते थे, परन्तु वह स्वामी पूर्णानन्द के विचारों से क्रान्ति की अन्तर्ज्वाला बन गए। कुम्भ का मेला उनकी गतिविधियों का केन्द्र बन गया। मेले में स्थान-स्थान पर साधुमण्डलियों में घुसकर अग्निवाहक भाषा में वे उन्हें राष्ट्रभक्ति के लिये प्रेरित करते हुए कहते कि हम जिस समाज का खा पीकर फले फूले हैं, उसके सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा करना हमारा धर्म है। केवल पेटपूर्ति के लिए भिक्षा वृत्ति तो पशुत्व है। हम घर का मोह त्याग चुके हैं। हमें रोने वाला कौन है? देश की स्वतन्त्रता की रक्षा में यदि हमें प्राण भी भेंट चढ़ाने पड़ें, तो हमें यह पुण्य समझना चाहिए। विदेशी अंग्रेज शासक हमारे इतिहास, संस्कृति, मान मर्यादा, सुख सम्पत्ति की धू-धू होली जला रहा है। हमें गीधों की तरह नोच-नोच कर हमारी समस्त राष्ट्रीय सम्पदा लन्दन ले जा रहा है। हम दरिद्र, भूखे और कंगाल होते जा रहे हैं। उसके राज्य को अरथी उठाने और भारत के स्वतन्त्र होने से ही यहां सुख समृद्धि आ सकती है। इस लिये भारत को स्वतन्त्र कराना ही हमारा गंगा स्नान और हमारी पाठ, पूजा, भक्ति है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमावस की काली रात में साधु सम्मेलन में भाषण देते हुए उन्होंने कहा—

"हम साधुओं का जीना मरना ही देश के लिये होना चाहिये। जब देश पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा हुआ, खून के आंसू रोता हो तो हमारा प्रभुस्मरण में मन क्योंकर लग सकता है। आज राष्ट्र का स्वतन्त्रता संग्राम लड़ना ही हमारी आराधना, साधना और जप, तप है। जिस विदेशी शासक अंग्रेज से हमें लड़ना है; उसे अपनी पुलिस, लाठी, गोली, बन्दूक, तोप, फांसी की राक्षसी शक्ति पर भरोसा है। हमें भगवान् पर भरोसा करके मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा, निष्ठा, बलिदान भावना से समस्त देशवासियों में क्रान्ति और स्वाधीनता का भाव जगाना है और स्वतन्त्रता की ज्योति में अपना लहू डाल कर उसे धधकाना है, और धधकती धू-धू लपटों से विदेशी लुटेरे शासन को जला कर भस्मीभूत करके भारत माता को स्वतन्त्रता का राजतिलक करना है।"

युवा संन्यासी के इन क्रान्तिकारी विचारों की धूम सर्वत्र फैल गई। अंग्रेज के विरुद्ध भड़के हुए आक्रोश और क्रोध की चिनगारियां नाना धुन्धु पंत, बाला जी, अजीमुल्ला, तात्या टोपे, कुंवर विक्रम सिंह, और रानी झांसी साधुओं के वेश में क्रान्ति संग्राम आरम्भ करने के लिये आशीर्वाद लेने हरिद्वार, 'नीलपर्वत' पर चण्डी के मन्दिर में दयानन्द के पास पहुंचे। उन्होंने आशीर्वाद देते हुए कहा—

स्वतन्त्रता स्वर्ग और परतन्त्रता नरक है। अंग्रेज का हमें शोषित करना, पशुओं की तरह हांकना, और हमारा घोर अत्याचार सहते जाना हमारे स्वाभिमान की मृत्यु है। हमारा शोषण और दमन इस लिये होता है, क्योंकि हम में युधिष्ठिर, दुर्योधन, पृथ्वीराज, जयचन्द, प्रताप और मानसिंह, मुगलों मराठों, हिन्दू मुसलमान का भेदभाव, कलह समाप्त ही नहीं होता। इस ही कलह द्वेष में ग्रस्त मराठों ने पलासी की लड़ाई में सिराजुद्दौला' की सहायता नहीं की। इतना ही नहीं अपितु इतिहास साक्षी है कि अंग्रेजी आक्रमणों के विरुद्ध मराठे मुगल, राजपूत या राठौर किसी ने भी एक दूसरे की सहायता नहीं की। सब एक दूसरे को मरता देख कर प्रसन्न होते रहे। उन्हें यह अहसास ही नहीं हुआ कि गुलामी और मौत का तूफान बढ़ा आ रहा है, इसे मिलकर रोकें। मिलकर न चल सकना हमारी सब से बड़ी कमजोरी है, जो गुलामी का कारण है। हम मिलकर लड़कर ही अंग्रेज के पांव उखाड़ सकते हैं। हमें राष्ट्र के हर व्यक्ति राजा रंक, सिपाही, कृषक, शिक्षित, अशिक्षित, पुरुष, स्त्री में राष्ट्र-भक्ति और निष्ठा पैदा करनी हैं। देश की स्वतन्त्रता के लिये लड़ना पुण्य है, यह नारा लगाना चाहिये और इस के साथ मानवीय नैतिक मूल्यों पर आधारित संघर्ष लड़ा जाना चाहिये। संघर्ष में यदि अंग्रेज स्त्री बच्चों पर आघात हुआ दिल्ली सम्राट् और मराठा पेशवा (जिनके मन में अपनी सत्ता के अधिकार के छिन जाने का क्षोभ भरा है) का ही नेतृत्व स्वीकार किया गया तो जनता का मनोबल जागृत नहीं हो सकेगा। हमें अपनी ध्येयनिष्ठ लगन, त्याग और बलिदान भावना से देश में कर्तव्यपालन और उत्तरदायित्व की लहर जगाकर समस्त देश को सुसंगठित, अनुशासनबद्ध कर नया सुदृढ़, सबल, सशक्त नेतृत्व पैदा करना है, ताकि स्वतन्त्रता संग्राम सफलता से लड़ा जा सके। कहा नहीं जा सकता कि यह संग्राम कितना लम्बा हो, कितने बलिदान देने पड़ें। जो भी हो, हमें मिल कर चलना है, समस्त राष्ट्र को जगाना, कर्तव्यपरायण बनाना और जीतना है।"

महर्षि उन्हें आशीर्वाद दें, विदा कर स्वयं राष्ट्रोत्थान गठन का जागरण-नाद करने के लिये दौरे पर निकल पड़े। दिसम्बर १८५६ में वे मुरसान, हाथरस,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भरतपुर, अलवर, करावली, जयपुर, ग्वालियर आदि के नरेशों से मिले। उस समय उन्होंने अपना नाम दयाराम रखा हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, झांसी, रुहेलखण्ड, बनारस, आगरा, पटना, मुरादाबाद, सम्भल, गढ़मुक्तेश्वर आदि शहरों में जा क्रान्ति के लिए संगठन की ललकार दी। जहां-जहां भी वे गये उनके प्रभाव में क्रान्ति भावना प्रखर रूप में उभरी। हर स्थान पर क्रान्तिकारी उनसे मिलते और वे उन्हें सफलता के साधन सूत्र समझाते। हर स्थान पर वे अपना काम आसानी और सफलता से कर जाते, क्योंकि साधु होने के कारण सरकार को उनपर सन्देह नहीं होता था। उनकी वाणी में ओज, तेज, बल व जीवन में सक्रियता और आत्मनिष्ठा थी। वे जहां भी जाते, साधु, संन्यासी, गृहस्थी, शिक्षित, अशिक्षित सभी प्रकार के श्रोता बहुसंख्या में पहुंचते और स्वदेश, स्वधर्म की रक्षा और पराधीनता के विरुद्ध लड़ने की उनकी ललकार से प्रभावित होते। स्थान-स्थान पर घूमते हुए उन्होंने सैकड़ों साधु सन्तों के मन में स्वतन्त्रता का मन्त्र फूंक उन्हें क्रान्ति का अग्र नायक बना दिया। मंगल पांडे, जिन्होंने अपनी गोली से अंग्रेज अफसरों को शूट करके क्रान्ति का शुभारम्भ किया था, वह और क्रान्ति के वीर सेनानी राजा गोविन्द राय दोनों महर्षि से आशीर्वाद लेने आये थे। दिसम्बर १८५६ म नाना साहिब ने उन्हें अपने घर कानपुर आमन्त्रित किया था। उन्होंने उनके निमन्त्रण संदेश पर ५ मास कानपुर-लखनऊ के मध्य गांव-गांव में तूफानी दौरा कर राष्ट्र-यज्ञाग्नि प्रदीप्त की। बैरकपुर और मालेर छावनियों में भी जा कर उन्होंने फोजी सिपाहियों को क्रांति करने की गुप्त मंत्रणा दी। वे राजा रंक सिपाही मजदूर किसान विद्यार्थी दूकानदार स्त्री पुरुष, सब तक पहुंचे, और हर मन-मस्तिष्क को गरमा कर स्वतंत्रता संग्राम लड़ने वालों के पीछे महान् जनसमूह और साधु संतों की एक ऐसी प्रखर शक्ति खड़ी कर दी, जो स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने वालों को स्थान-स्थान पर सन्देश, रसद हथियार, प्रेरणा और उत्साह देती और उनके लिए जासूसी करती।

'चपाती' और 'कमल फूल' क्रान्ति को प्रचण्ड करने के चिह्न निर्धारित किये गये। 'चपाती' के अर्थ जिस धरती से अन्न पैदा होता है, जिसे खा कर हम फलेफूले हैं, उस की स्वतन्त्रता के लिये लड़ना है और 'कमल फूल' का भाव सुन्दर, सुखी खिला, समृद्ध जीवन बनाने के लिये जालिम विदेशियों से टकरा, लहू बहा कर मातृभूमि को आजाद कराना थे। 'कमल' और 'चपाती' दिल्ली के योगमायामन्दिर मा रौली से निकलतीं और बिजली की तरह हर शहर हर गांव हर छावनी से एक दूसरे के हाथ आगे पहुंचतीं। यह क्रान्ति-चेतना, दक्षता, कर्तव्यनिष्ठा की स्मृति और शप थीं।

जब मार्च १८५७ को देशव्यापी स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने के लिये नाना साहिब, तांत्या टोपे, रानी झांसी, अजीमुल्ला और शाह जफर का नेतृत्व निश्चित हुआ, तब महर्षि वाराणसी, मिर्जापुर और चुनार में क्रान्ति गर्जना करते दहाड़ थे। उन की इच्छा थी कि क्रान्ति का नेतृत्व प्रबल सशक्त योग्यतम जन आकर्षण हाथों में हो, और वह राष्ट्र के हर नागरिक को सजग कर पूर्णत: मिल कर अनुशासनात्मक ढंग से लड़ी जाये। उस समय एक आम धारणा बनी हुई थी कि 'पलासी' अंग्रेज से पहली लड़ाई २३ जून १७५७ को हुई थी अतः अंग्रेजी राज्य सौ वर्ष पश्चात् अवश्य समाप्त जायेगा। इस भावावेश में सम्राट् जफर को मुख्य नेता स्वीकार किया गया। उसने नाना साहिब को पेशवा, रानी झांसी को अपने गोद लिए बच्चे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तिलक देने और सब राजाओं, महाराजाओं, नवाबों को सरदारियां स्वीकार करने की गुप्त मन्त्रणा भेजी। इस से सब राजा, महाराजा नवाब अपने-अपने स्थान पर स्वतंत्रता संग्राम लड़ने के लिये तैयार हो गये, परन्तु कोई राष्ट्रप्रभावी शक्तिशाली तेजोमय नेता न चुना जा सका।

महर्षि इस स्थिति से बहुत विक्षुब्ध हुए। उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से भांपा कि ये सभी वीर सेनानी भाव उग्रता और उत्तेजकता में स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर परवानों की तरह जल कर राख हो जायेंगे, परन्तु अंग्रेजी सिंहासन को उखाड़ स्वराज्य स्थापना का आदर्श सम्पूर्ण राष्ट्र के जागरण और उसके अनुशासनबद्ध होने से ही साकार हो सकेगा। सब स्वतन्त्र होना चाहते हैं, कोई भी अंग्रेजों की गुलामी नहीं चाहता, फिर क्रान्ति दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरयाणा, बिहार, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र तक ही सीमित क्यों रहे? पंजाब, बंगाल, सिंध हैदराबाद, राजस्थान तक क्रान्ति लहर क्यों नहीं पहुंच सकी? जिन्हें सत्ताहीन किया गया वे ही क्रान्ति के नायक हैं। सशक्त राष्ट्रीय नेतृत्व महर्षि की आंखों के सामने ज्वलन्त प्रश्न बन कर खड़ा था। ऐसा सोचते हुए ही उन्होंने सुना कि ३१ मई १८५७ की तिथि क्रान्ति के लिये निश्चित की गई है। इसे उन्होंने भावुकता और उग्रता कहा, जिसके ज्वलन्त उदाहरणस्वरूप २१ मार्च को मंगल पाण्डे ने पहली गोली चला कर क्रान्ति का शुभारम्भ किया और १० मई को खुला विस्फोट हो गया, जिसे सुन कर महाराजा इन्दौर और महाराजा ग्वालियर ने सहयोग देने का मन बदल लिया। महर्षि बिना तैयारी के इस उत्तेजकता, विस्फोट, अनुशासनहीनता, विश्रृंखलता का अवलोकन करते हुए, लड़कर शक्ति नष्ट करने की बजाय १० मई को ही गंङ्गोत्तरी, गंगा सागर धनकुटी से रामेश्वरम् घूमते-घूमते कन्याकुमारी के समुद्रतट पर आ समाधिस्थ हो नई क्रान्ति के नये निर्णायक संकल्प लेने लगे।

साधुओं की जासूसी इतनी सफल थी कि नाना साहिब, तान्त्या टोपे और अजीमुल्ला तीनों ने साधुओं के रूप में उन्हें रामेश्वरम् आ ढूंढ़ा और महर्षि को बताया कि "आप की सोच यथार्थ थी। भारत बिना तैयारी के लड़ने के कारण हार गया। हमारी हार उत्तेजना में आप के दूरदर्शितामय परामर्शों की अवेहलना का ही दुष्परिणाम थी। हजारों वीर योद्धा रणभूमि में लड़ते हुए जीवन बलिदान कर गये। पूर्व विस्फोटों के कारण यद्यपि महाराजा ग्वालियर और इन्दौर ने सहयोग का मन बदल लिया, परन्तु इन दोनों राज्यों की प्रजा ने प्राणपन से बलिदान-उत्सर्ग किया। अधिक युद्ध सामग्री गोला बारूद सिपाही आधुनिक युद्ध तकनीक और धन बहुत कुछ हमें यहीं से ही मिलने थे, जिसके न मिल सकने के कारण निराशा अवश्य पैदा हुई, परन्तु विपरीत इसके क्रान्तिकारी देशभक्त स्वतन्त्रता के परवाने निहत्थे शस्त्रहीन होते हुए भी जी जान से लड़े, और उन्होंने झांसी, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, आगरा, लखनऊ, मथुरा, दिल्ली आदि स्थानों पर अंग्रेज के पांव उखाड़ दिये। दिल्ली चलो, मारो फिरंगी, भारत भारतीयों का, भारत माता की जय, हिन्दू-मुसलमान की जय के जयकारों से अंग्रेज ने भयभीत हो कर भारत छोड़ने के लिये बिस्तर बांध लिये थे। उन्हें लन्दन सुरक्षापूर्ण ले जाने के लिये बम्बई, मद्रास और कलकत्ता की बन्दरगाहों पर समुद्री जहाज लगर उठाये तैयार खड़े थे। परन्तु हारे और भागते हुए अंग्रेज की रक्षा के लिय पंजाब के रजवाड़ों की सहायता पहुंच गई। सम्पूर्ण राष्ट्र का जागरण न हो सकने, राष्ट्रीय भावना की शून्यता, बरहामपुर, बैरकपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और मेरठ छावनियों में समय से पहले हुए विस्फोट, सुदृढ़ सशक्त प्रभावी नेतृत्व की अप्राप्ति, पुराने ईर्ष्या द्वेष वैमनस्य और प्रतिद्वन्द्विता क्रान्ति की असफलता के कारण बने, जिन्होंने भारत की जीत को हार में बदल दिया। ऐसी अवस्था में भारतीय भारतीयों से लड़ेगा, भागते हुए अंग्रेज को इस पर विश्वास नहीं हो रहा था। परन्तु जब उनकी आंखों के सामने भारतीयों ने भारतीयों का लहू बहा कर भारत की स्वतंत्रता का गला अपने ही हाथों घोंट दिया, तो उनका डूबा हुआ दिल नाच उठा, उनके डूबे भाग्य का सितारा फिर से चमक उठा और हमारा बहा लहू सब निष्फल गया।"

यह खेदजनक समाचार सुन कर महर्षि का हृदय दुःख से फट गया। परन्तु वे हार कर भी हार मानने वाले नहीं थे। धैर्य और साहस से बोले—

"ध्येयनिष्ठ स्वराज्य सेनानियों के लिये हार जीत की भूमिका होती है। हम भारत का आत्मजागरण कर फिर से नया स्वराज्य संग्राम लड़ेंगे और अवश्यमेव विजयी होंगे। जिन बलिदानियों ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपने बलिदान की आहुतियां दी हैं उन्होंने भारत का उज्ज्वलतम स्वर्णिम इतिहास अपने रक्त से लिखा है। एक दिन यह इतिहास स्वतन्त्रता संग्राम की चिनगारी सुलगायेगा, जिस में विदेशी शासन जल कर भस्म हो जायगा और इस भस्म पर ही स्वतन्त्र भारत का निर्माण होगा।" नाना साहिब ने हार के कारण आत्मदाह का संकल्प व्यक्त किया परन्तु महर्षि की प्रेरणा से वे संन्यास ले दिव्यानन्द नाम से मोरवी में आजीवन जनकल्याण कार्य करते रहे। वहां अब भी उनकी समाधि है, जिस पर लोग श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं। दूओराय का तो कोई पता नहीं चला, परन्तु तात्या टोपे मातृभूमि की बलिवेदी पर लड़ते हुए शहीद हो गये।

क्रान्तिकारियों की देश के लिये समर्पण बलिदान भावना ने महर्षि के मन-मस्तिष्क में धधकती क्रान्ति ज्वाला को प्रखर और प्रचण्ड कर दिया। उ का विश्लेषण था कि जोश और जल्दबाजी के कारण क्रान्ति का देशव्यापी प्रचा नहीं हो सका। जनता में गुलामी के विरुद्ध घृणा और संघर्ष भावना थी, कि क्रान्ति कैसे होगी, यह ज्ञान, विश्वास और चेतना नहीं थी। महर्षि ने आत्मप्रेरण और निष्ठाभरे विश्वास से सशस्त्र क्रान्ति की बजाय लोकतन्त्रीय आधार पर वैचारि क्रान्तियज्ञ के अनुष्ठान का संकल्प किया। और देश के जन-मन में क्रान्तिनाद ब संगठन क्रम चला, शहीदों के लहू से नई क्रान्ति की मशाल जला, देश के सामने स्वयं एक ज्वलन्त आदर्श बन कर खड़े हो गए।

उठती उभरती जवानी में महर्षि के मन में राष्ट्रजागरण और उद्धार की तीव्रतम और अविरल धाराएं प्रवाहित थीं, वे अंग्रेजी राज्य में उन की इस बारे रहस्यमय चुप्पी के कारण दबी रहीं परन्तु दिसम्बर १८७२ ई० में जब वे कलक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गए तो महाकवि टैगोर के पिता देवेंद्रनाथ टैगोर, केशवचन्द्र सेन और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे मूर्धन्य विद्वद्वृन्द ने उनके क्रान्तिकारी अग्निवाहक स्वराज्य प्रसारक भाषण सुने। तब उन्होंने उन्हें अपना सम्पूर्ण क्रान्तिकारी जीवनचरित्र लिखने की प्रेरणा दी। महर्षि ने उन सच्चे राष्ट्रभक्तों को बताया कि "यदि इन सब बातों का किसी को भी पता लग जाये तो मुझे फांसी का रस्सा चूमना होगा और मेरा वैचारिक क्रान्तियज्ञ अधूरा ही रह जायेगा।" परन्तु उन सब के यह विश्वास दिलाने पर कि यह जीवनचरित्र स्वतन्त्र भारत में ही प्रकाशित किया जायेगा, महर्षि ने उनके किसी परम विश्वस्त व्यक्ति को संस्कृत भाषा और बंगाली लिपि में सब क्रान्ति-वृत्तांत लिखा दिया, जो अब स्वतन्त्र भारत में 'अज्ञात जीवनी, नाम से प्रकाशित हो गया है, जिस से यह स्पष्ट सम्पुष्ट समर्थन हो गया है कि क्रान्ति की ज्वालायें धधकाने, राष्ट्र का संगठन करने, साधु समाज के जागरण और जनता में नवचेतना और विप्लवमयी भावनाओं को उभारने में जहां दयानन्द का योगदान सब से उत्कर्षमय और महान् था, वहां क्रान्ति को सफल बनाने के लिये जन-जन तक पहुंचने और उसे व्यापक बनाने की उनकी धारणा भी श्रेयस्कर थी। यदि महर्षि के सिद्धान्तों पर आधारित राष्ट्रव्यापी स्वतन्त्रता संग्राम लड़ा जाता तो अवश्यमेव सफलता मिलती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वास्थ्य

खांसी का प्राकृतिक इलाज

—महात्मा जगदीश्वरानन्द की लेखनी से

स्वरूप कथनम्—छाती के भीतर कफ रुक जाता है। स्वतः सहजभाव से नहीं निकल पाता तब प्रकृति खांसी पैदा कर निकालने की चेष्टा करती है। कफ भीतर बना रहना अस्वाभाविक-सा भी लगता है। प्रकृति शरीर रक्षा के लिए खांसी पैदा कर उस विकार को बाहर निकालती है। बार-बार खांस कर कफ निकालना होता है।

भेद—सूखी खांसी, तर खांसी, गले में केवल सरसराहट होते रहना, खांसने को प्रवृत्ति होना, जो टांसिल विकार के साथ जुड़ी रहती है। बहुत खांसने पर केवल कुछ झागदार थूक आता है। इससे आगे बढ़ी हुई—कुकर खांसी (हूपिंग खांसी) जो रोगी को बहुत ही परेशान करती है। उस समय खांसने की झड़ी-सी लग जाती है। खांसते-खांसते अन्ततः कै (वमन) हो जाती है। कुकर खांसी २ वर्ष की आयु से १५ वर्ष की आयु तक होने वाली मानी जाती है।

मूल कारण (उपादान कारण)--पाचन की विक्रिया, लिवर का ठीक काम न करना, रक्त विकार, कब्ज, फेफड़ों का विकारादि।

निमित्त कारण—गले की नली में विकार या सूजन, टांसिल विकार, ठण्ड लगना, ठण्डे जल का सेवन या वैसी किसी वस्तु के सेवन से बनी खांसी।

प्राकृतिक यौगिक सफल चिकित्सा—नेतियाँ, वमन, आंतों की सफाई के लिए सेक कर मिट्टी की पट्टी व एनिमा कर लें। अच्छा हो, चार पांच दिन तक क्रमशः विभिन्न एनिमा चार्ट चला दें। तत्पश्चात् नींबू का रस निकाल पृथक् रख दें, छिलके को पानी में उबालें, रखे हुए रस को भी बाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में मिला त्रिफला चूर्ण सेवन करें। नींबू के छिलके का हमारा यह प्रयोग कफ-निवारक सिद्ध प्रयोग है। ६ माशा से १ तोला तक त्रिफला चूर्ण लेना चाहिये। सायंकाल छाती की भाप लेकर गीली पट्टी लपेट या छाती का गरम-ठण्डा सेक कर गीली पट्टी लपेट कर ऊनी पट्टी लपेट पौन घण्टे तक—जब तक खांसी पूरी तरह विदा न हो जाए तब तक—इसी प्रकार करते चलें और पथ्य का पालन करें। भले ही खांसी का जो भी प्रकार हो, सभी तरह की खांसी की यह सफल चिकित्सा है। मुख्य बात हैं प्रातःकाल के उपचार में मूल कारण अर्थात् आमाशय (स्टमक), लिवर व आंतों के उपचार का ध्यान बना रहे। सायं के उपचार में जो हिस्सा विकृत या कमजोर दिखाई पड़े—छाती, गला, टांसिल सीधा-सीधा उसका उपचार करें। मुख्य उपचार होगा भाप, गीली पट्टी या गरम ठण्डा सेक व पट्टी। टांसिल या गले पर भाप व सेक कर मिट्टी, पट्टी अथवा ऋतु अनुसार गरम मिट्टी पट्टी भी दे सकते हैं। टांसिल पर एरण्ड के पत्ते लेके या गुलबांसा के पत्ते सेक कर गले पर बांधे जा सकते हैं। बनफशा, पलाश—ढाक के फूल उबाल एरण्ड के तेल या तिल तेल के नमक में मिला बाँधें।

विशेष—जो खांसी हर साल जाड़े के दिनों में ही हो वह पुराने ब्रांकाइटिस से होती है। तब छाती का उपचार चलता रहना चाहिये।

मूल सिद्धांत संरक्षक अन्य सहमत उपचार—एनिमा के अभाव में उदर शोधक प्रयोग जुकाम चिकित्सा में लिखे गए काम में लायें। खांसी के कतिपय टोटके—

सूखी खांसी में—बड़ी हरड़ का छिलका मुंह में रख चूसना। केवल श्रुत—बार बार शीशा देखने से भी लाभ होता है।

साधारण खांसी में हितकर नुस्खे—कत्था, गोंद बबूल व मुलहठी १०-२० ग्राम ले घोट कपड़छान कर अदरक के रस से छोटे बेर सम गोलियां बना चूसना (दिन में तीन चार बार) अथवा हल्दी की गांठ (ग्राम भर की) चूसना।

बांसा का पंचाग ले कूट ५० ग्राम पाव भर पानी में उबाल २०-२० ग्राम दिन में तीन चार बार सेवन करें।

बांसा का प्रशंसक श्लोक—

वासायां विद्यमानायां आशायां जीवितस्य च।
रक्तपित्ती क्षयी कासी किमयं भव सीदति॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीने की तो आशा हो और बांसा बिद्यमान हो तब नकसीर का रोगी, क्षयी रोगी, खांसी का रोगी क्यों कष्ट उठा रहा है ?

प्रयोग करने पर यदि किन्हीं को अधिक गर्मी अनुभव में आये तो चन्द्रामृत बना सेवन करें। पत्तों को छाया में सुखाकर रख लें, मौसम अनुकूल हो तो पत्तों को चूर्ण कर भिगो कर ओस में या भीतर रख छान कर उसका पानी पिया जाय।

अथवा

अधिक ठण्ड का प्रभाव छाती पर हो तो सर्दी के दिनों में अदरक रस मधु संग हितकर रहता है। केवल ६-६ ग्राम पर्याप्त है।

बूढ़े व्यक्ति सोते समय काले नमक की डली मुंह में रखें चूसने का प्रयत्न न करें। स्वत: जो रस भीतर चला जाय वही जाने दें।

सब प्रकार की खांसी में संसिद्ध बहेड़ा छिलका बनाने का प्रकार है—बहेड़े के छिलके लेकर गवार पाठे के छिले हुए सफेद गुद्दों में दबा दें अर्थात् कुछ गुद्दा नीचे बिछा ऊपर वहेड़े के छिलके रखें फिर ऊपर से गुद्दा रख दें। १०-१२ घण्टे बाद बहेड़े निकाल कर पृथक् कर थोड़ा खाने वाला मीठा सोडा (सोडा बाईकार्ब) तथा सेंधा नमक डाल धूप में सुखा कर रखें। रोगी को चूसने के लिए दें। चमत्कारी अनुभूत प्रयोग है।

अथवा

काकड़ सिंघी १० ग्राम ले कूटकर ३-३ रत्ती की पुड़िया बना प्रातः सायं जल से लें। (प्रशंसित श्रुत प्रयोग है)

कूकर खांसी —केले के पत्तों की राख मधु संग लें—सर्दियों में; नमक संग– गर्मियों में।

पथ्य—अपथ्य के लिए देखें जुकाम के प्रकरण को।

सावधान—इन टोटकों के लिखने का यह भाव कदापि नहीं कि आप मूल कारण के निवारक प्रयोग की उपेक्षा कर दें और गौण टोटकों पर जोर दें। शीघ्र लाभ दिखाने के लिए इनको साथ मिला लें। टोटकों को लेकर पथ्य की उपेक्षा करने की भूल कभी न करें।

सब प्रकार की खांसी पर—जवाक्षार १ तोला, काली मिर्च दो तोले, छोटी पीपर दो तोले, अनार का छिलका १।। तोला, अधिक से अधिक पुराना गुड़ १० तोला सबको कूट छानकर छोटी छोटी गोली बना चूसें (पर-परीक्षित का अनुवाद)। कफ निकलने में बहुत खांसने की दशा में गुड़ को पानी में घोलकर आग पर चढ़ायें, बीच में सरसों का तेल डाल पका चासनी-सी बना दिन में तीन चार बार एक-एक बड़ा चम्मच चाटें। (स्वानुभूत) गुड़ व तेल की मात्रा सम हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथवा

(परानुभूत) पुराना गुड़ १० ग्राम, सरसों का तेल १० ग्राम चाटने से खांसी व दमा में भी लाभ।

गलत उपचारों से सावधान—धतूरा जैसे विषाक्त पदार्थों से बनने वाली चमत्कार दिखाने वाली वे सब दवाएं दूरतः त्याज्य हैं—चाहे आयुर्वेदिक हों, एलोपैथी किंवा होम्योपैथी की हों। इस प्रकार की शमनकारी दवाएं थोड़ी देर के लिए अपना चमत्कार दिखा दिल, दिमाग व फेफड़ों पर इतना गलत प्रभाव छोड़तो हैं कि रोगी भयंकर दलदल में फंस जाता है। जिंदगी में उन प्रभावों को हटाना ही कठिन हो जाता है। इसलिए एक प्रसिद्ध डाक्टर ने बहुत सुन्दर कहा है—

'कोई भी मूर्ख खांसी को दबा सकता है, पर उससे होने वाले नुक-सान से छुटकारा दिलाना किसी होशियार आदमी का ही काम है।'

महान् आश्चर्य—आज आश्चर्य होता है कि किस प्रकार आपरेशन की आंधी में चिकित्सक बहे जा रहे हैं और यह मान रहे हैं कि एलोपैथी ने सर्जरी में बड़ी उन्नति की। मैं देखता हूं कि तरक्की क्या की, एक झंझावात आंधी ही चला दी, जिसमें हर पैथी के चिकित्सक बिना सोचे चुपचाप बहे जा रहे हैं। स्वयं भी अंग कटवाने के लिए तैयार बैठे हैं तथा दूसरों को भी अपनी अनमोल राय देकर तैयार कर रहे हैं। बात की बात में शरीर के अंग प्रत्यंग काट कर अलग कर दिये जाते हैं। आपरेशन को मैं केवल झुंझलाई हुई चिकित्सा मानता हूं। जब डाक्टर की समझ में नहीं आया, रोग पर काबू नहीं पाया, बस झुंझलाकर उस अंग को काट बाहर कर दिया।

कुछ तो—बवासीर, टांसिल जैसे आपरेशन तो—सर्वथा ना-समझी और बेहूदापन हैं। बवासीर का एकमात्र इलाज आपरेशन है तथा खांसी का कारण यदि टांसिल है तो कुशल चिकित्सक से आपरेशन कराने की राय देने वाले आयुर्वेद वैद्यनाथ धाम के सम्मानित वैद्य पंडित जी की राय पर मुझे दुःखभरा आश्चर्य हुआ। वाह रे युग का प्रभाव! जो भारतीय विद्वान् दूसरों का प्रकाशदाता था, आज वही अंधकार में भटकता हुआ बहा जा रहा है। संभव है कि मेरे अनुभव में न आता तो यह तीखी भाषा न निकलती। न आपरेशन से बवासीर का रोग जाने वाला है न ही उस की जड़। डाक्टर एक काटेगा, आगे अनेक हो जाएंगे। वह तो एक काटोगे, अनेक पैदा होंगे। उनकी जड़ तो विकृत आंतों में हैं न कि ऊपर।

टांसिल भी स्टमक का रोग है न कि गले का, जो आपरेशन से हट जाएगा। मेरी लिखी टांसिल की पुस्तक ने कितनों के आपरेशन टलवा दिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पन्द्रह दिन के भीतर ही मैंने जिन बच्चों के इलाज किये उनमें दो तो आज मिलिटरी में लेफ्टीनेंट जैसे पदों पर काम कर रहे हैं।

मेरी बात न मानने पर एक की टांसिल के छोटे से आपरेशन में मौत हुई। देहरादून के स्वा० रामतीर्थ आश्रम के प्रबन्धक स्वामी जी की मौत भी इसी आपरेशन से हुई।

विशेष सुझाव—खांसी यदि साधारण नहीं, उसके पीछे अन्य अंगों की विकृतियां हैं तो बड़े धैर्य से उन कारणों का निवारण करते हुए चिकित्सा चलानी होगी। तब महर्षि के इस आदेश का पालन करना होगा, सफलता की दृढ़ भूमि प्राप्ति निमित्त......"स तु दीर्घ काल नैरन्तर्य सत्कारासेवितो दृढभूमिः" साफल्य के लिए लम्बे समय तक निरन्तर, आदर श्रद्धा विश्वास के साथ कार्यक्रम चलाना होगा। तब चिकित्सा का क्रम और भी बढ़ जाएगा। फेफड़ों को सबल बनाने के लिए विधिवत् दीर्घश्वास उच्छ्वास (डीप ब्रीदिंग) जैसा प्राणायाम प्रतिदिन स्वच्छ वायु में बैठकर करना होगा। सूर्य-रश्मि चिकित्सा के अनुसार—नीली बोतल खाली लकड़ी के तख्ते पर कार्क लगा धूप में रखना। २ घण्टे बाद चलने वाले श्वास द्वारा नासिका को लगा बने गैस को भीतर लेना ५-७ मिनट। इसी प्रकार नीली, पीली, सफेद बोतलों का जल—सूर्यरश्मितप्त जल—तीन-तीन तोला दिन में तीन चार बार पीना। एक-एक तोला जल एक बोतल का लेना है।

विधिवत् प्राकृतिक यौगिक चिकित्सा के साथ यज्ञ चिकित्सा करनी चाहिए, ताकि यज्ञ की अग्नि से निष्पन्न वनस्पति जन्य सुवासित गैस फेफड़ों में जाकर उन्हें विकार रहित कर सबल स्वस्थ बनाये।

यज्ञार्थ - आम के, बांसे के, पीपल के सूखे पत्ते कूट लें। मुलहठी, बहेड़ा, हरड़ व काकड़ासिंघी कूट सामग्री बना शुद्ध घी या अलसी का तेल मिला पीपल की समिधाओं से कमरे में हवन करें। ध्यान रहे कि अग्नि खूब प्रज्वलित हो, धुआं न होने पाये, उस अग्नि से तैयार गैस में लम्बे श्वास लें। पूरे पत्ते न मिलने पर जितने मिल सकें, उनका ही प्रयोग करें। गूगल का गैस भी अत्यन्त हितकर है।

गला बैठना, स्वर भंग जैसे रोगी का भी यही उपचार करें। गले की नाली की सूजन या इस प्रकार के रोगों में इसी प्रकार नेतियां, वमन, पेट की सफाई करें। विशेष रूप से स्थानीय उपचार अर्थात् गले की भाप या गरम-ठण्डा सेक करें। पथ्य-अपथ्य का पालन करें। देखते-देखते सारे लक्षण व कष्ट दूर भाग जाएंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १६ साथी और बनाइए। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का वनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक वनाया जाए— वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालिय वना, लेटर हैड, रसीद बुक छपवा लें। स्थापना के दो माह के भीतर आप एक कार्यकर्त्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य वांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद वने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे। किन्तु सारा हिसाव आपको नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय-व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंगकर नयी समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र की गौरव, परम्परा, इतिहास और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। अतः सभी इसी दिशा में सोचते हुए सभी कार्य सम्पन्न करेंगे, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं—

(प्रो०) धर्मवीर
प्रधान मंत्री

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुनौती स्वीकार करो और

जन-ज्ञान घर-घर में पहुंचा दो!

प्रतिमास कम से कम १० प्रतियाँ मंगाकर वितरित करें—केवल १५) में।

आप २) प्रति हमें भेज दें, हम उसे जमा रखेंगे और प्रतिमास केवल १५) की वी० पी० से आपको जन-ज्ञान की १० प्रतियां भेजेंगे।

डाक खर्च भी हम देंगे।

आप १० या दस से अधिक जितनी भी प्रतियां चाहें, १)५० प्रति के हिसाब से मंगा सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गतांक से आगे

आध्यात्मिक सत्संग

—महात्मा नारायण स्वामी

उपनिषदों की कथाएं

३. कथासार

आस्तिकता की उत्कृष्टता, ईश्वर का स्वरूप, उसकी व्यापकता अर्थात् वह हमारे अन्दर तथा सारे ब्रह्माण्ड में किस रूप में व्याप्त है; मनुष्य तथा ईश्वरीय नियमों की विभिन्नता, ईश्वर प्राप्ति के साधन, जीव का स्वरूप, शरीर की वस्तुस्थिति, शरीर के लिए स्नान का महत्त्व, मनुष्य की अपनी तथा इन्द्रियों की सीमा से आगे जाने पर ही पाप तथा व्याधियां हैं, आदि बातें बड़े सरल ढंग से बतायी गई हैं।

बहनो और भाइयो !

जैसा कल बताया जा चुका है, नचिकेता ने यम से प्रश्न किया था कि मरने के बाद कुछ बाकी रहता है वा नहीं ? यम ने उत्तर दिया था कि मरने के बाद आत्मा रहता है। वह आत्मा नित्य है। कल यह भी बतलाया गया था कि किस प्रकार मनुष्य ऊंची और नीची योनियों को प्राप्त करता व कर सकता है। कुछ बातें ईश्वर के सम्बन्ध में भी बतलाई गई थीं।

जब कर्म-फल भोगने वाला जीवात्मा ईश्वर के समीप हो जाता है और वह ईश्वर को जान लेता है तब सब लोग उससे प्रेम करने लग जाते हैं और वह सब प्राणियों से प्रेम करने लग जाता है।

अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध

अमेरिका के स्वातन्त्र्य-युद्ध के उदाहरण से मालूम होता है कि किस प्रकार ईश्वर-विश्वासी लोगों से मनुष्य प्रेम किया करते हैं। युद्ध हो रहा था, एक पक्का ईश्वर-विश्वासी भक्त रोगियों की सेवा शुश्रूषा किया करता था। जब वह किसी रोगी सिपाही के पास जाता तो उसको देखकर ही रोगी का आधा रोग दूर हो जाया करता था। इसका कारण लोगों का उसके प्रति अगाध प्रेम ही था। सचमुच ही आस्तिक से कोई घृणा नहीं करता है।

वेद की शिक्षा

यजुर्वेद में कहा गया है कि विद्वान् लोग ईश्वर को हृदयाकाश में देखते हैं। तुम यदि परमात्मा को जानना चाहते हो तो आत्मा से उसे जानो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आगे कहा गया है—

'जो ज्ञानकांडी हैं—ज्ञानी हैं, कर्मकांडी हैं, वा दोनों में से कोई भी हैं, ऐसे पुरुष ही ईश्वर को जाना करते हैं।

ईश्वर का स्वरूप

अरणियों में जिस प्रकार आग छिपी रहती है, जिस प्रकार माता अपने गर्भ की रक्षा करती है, इसी प्रकार ईश्वर को हृदय में स्थित समझ और इसे अपना प्रेम-पात्र बना कर ज्ञानकाण्डी और कर्मकाण्डी दोनों को प्रतिदिन उसकी स्तुति करनी चाहिए।

यज्ञ की आग अरणियों को घिसकर ही प्राचीन काल में पैदा की जाती थी, क्योंकि अग्नि अरणियों में छिपी हालत में थी। अग्नि तब काम करती है जब वह व्यक्त हो जाती है। यह बात दियासलाई के सम्बन्ध में है। जगत् के पदार्थों में ईश्वर भी ऐसे ही व्याप्त है, परन्तु हम उसे नहीं देख सकते हैं। यदि हमारे देखने योग्य आंखें हों तो हम उसे देख सकते हैं, अन्यथा नहीं।

उपनिषद् में बतलाया गया है कि सूर्य्यादि का उदय, अस्त होना ईश्वर की सत्ता के कारण है। इसी प्रकार अन्य सब देव, पृथिवी चन्द्रादि ईश्वर के आश्रय से ठहरे हुए हैं। कोई भी देव उसके नियम का उल्लंघन नहीं कर सकता। वे नियम अटल हैं, अनुल्लंघनीय हैं।

मनुष्य और ईश्वर के नियम

मनुष्य के नियम तोड़े जा सकते हैं परन्तु ईश्वर के नहीं। ईश्वर की कुछ शिक्षाएँ उपदेश के तौर पर हैं और कुछ नियम के रूप में हैं। ईश्वर के उपदेशों का हम उल्लंघन कर सकते हैं क्योंकि हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं। हम स्वतन्त्रता से उनका पालन और उल्लंघन कर सकते हैं परन्तु उसके नियमों के सम्बन्ध में यह बात नहीं है। उनको कोई नहीं तोड़ सकता। उदाहरण के लिये गेहूं के बोने पर चना कदापि नहीं हो सकता।

ईश्वर की व्यापकता

आगे बतलाया है कि "जो ईश्वर यहाँ है वही परलोक में है। जो वहाँ है वही यहां है। जो ईश्वर में भिन्नत्व मानते हैं वे मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त करते हैं।" इस शिक्षा के प्रकाश में भिन्न-भिन्न सम्प्रदायवादियों को भिन्न-भिन्न ईश्वर नहीं मानने चाहियें क्योंकि वेद और उपनिषद् में इसका निषेध किया गया है। उन्होंने ईश्वर एक ही बतलाया है।

ईश्वरप्राप्ति का उपाय

"यदि तुम ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हो तो बाहर की ओर न चलकर भीतर की ओर चलो। जब मनुष्य भीतर की ओर चलता है, तभी उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है। अंगूठे के बराबर मात्रा वाले हृदयाकाश में स्थित जीव के मध्य ईश्वर का निवास है अर्थात् वही स्थान है जहां ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ करता है। उस ब्रह्म-ज्ञान को पाकर मनुष्य हमेशा प्रसन्न रहता है। वही पुरुष (ईश्वर) ऐसी ज्योति है जो विकार रहित है। संसार की ज्योतियों में यह बात नहीं पाई जाती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे सब ज्योतियां त्रुटिपूर्ण हैं। अग्नि भी विकरामय है। ईश्वर सबका मालिक सदैव एक-रस रहने वाला है। जो आज है वही कल है।

क्षा

तात्पर्य यह कि ईश्वरप्राप्ति के साधन मनुष्य के भीतर ही हैं। जब हम मुंखी वृत्ति से उसका साक्षात्कार कर लेते हैं, तब हम संसार के प्रेम के पात्र जाते हैं।

ोव

हमारा शरीर एक नगर है; उसके ग्यारह दरवाजे हैं और यह आत्मा का है। सिर, आंख, कान, नासिका का छिद्र, मुंह, नाभि, मल-मूत्र स्थान—ये ग्यारह हैं। कोई उसे पांच द्वार वाला कहते हैं, कोई दस द्वार वाला, कोई ग्यारह वाला और कोई असंख्य द्वार वाला कहने वाले शरीर के असंख्य छिद्रों के र पर ही ऐसा कहते हैं। उदाहरण के लिये हमारे समस्त शरीर के बालों की छिद्र हैं, जिन्हें रोमकूप कहते हैं।

ान का महत्त्व

स्वास्थ्य रक्षा के लिये स्नान करना अत्यन्त आवश्यक है। किसी साम्प्रदायिक ा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं, इसका सम्बन्ध वैज्ञानिक तत्त्वों से है। हमारे की फैक्टरी संसार की अन्य फैक्टरियों के सदृश नहीं है। यह निरन्तर चलती है। इसमें बहुत मैला और कूड़ा पैदा हो जाता है। इस शरीर रूपी फैक्टरी ना बड़ी अद्भुत है। ईश्वर ने हमारे शरीर को छिद्रमय बनाया है। वह मैल सूक्ष्म जगहों में दिखाई पड़ता है। खुर्दबीन से देखने पर बाल की जड़ में मिलेगा। मैल की सफाई के लिये स्नान आवश्यक है। भोजन करने के या उसके बाद हाथ धोने इत्यादि का यही अभिप्राय है। यदि स्नान न किया ो वे असंख्य छिद्र बन्द हो जायेंगे। मैल बनना जारी रहेगा और निकलना जायेगा। जिस हिस्से में भी मैल का निकलना बन्द होगा, वहीं रोग पैदा गा। इसलिए प्रतिदिन स्नान करना चाहिये और ठीक रीति से करना चाहिए। लूई कोनी ने उपर्युक्त मैल को फॉरेन मैटर कहा है।

र कैसा है ?

यह नगर चेतना सहित है, और नगर का मालिक आत्मा है जो स्वभाव से । वह नगर के भीतर रहता है और नगर के कार्य में लाने से दुःखी नहीं होता व वह छोड़ देता है तब वह समस्त दुःखों से छूटकर मुक्त हो जाता है। यह है कि शरीर जिस उद्देश्य से बना है उसीके लिये प्रयुक्त होने से मनुष्य हीं होता। कभी भी शरीर का दुरुपयोग नहीं होना चाहिये।

कहां है ?

जहां सीमा का अन्त होता है वहीं पाप होता है। इसका अभिप्राय यह है य जब सीमा के भीतर रहता है तब सुखी है; जब सीमा का उल्लंघन करता खी रहता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक और उदारहण

आंख का काम देखना है। हमें बतलाया गया है कि सबको मित्र की दृष्टि से देखो, परस्त्री को कुदृष्टि से न देखो। आंख का सदुपयोग इस और इसी प्रकार की शिक्षाओं के चरितार्थ करने में होता है। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों के सम्बन्ध में समझना चाहिए।

अर्जुन का आदर्श

अर्जुन तप कर रहे हैं। इन्द्र उनकी तपस्या से भयभीत हो जाता है। उनके तपोभंग के लिए इन्द्र अर्जुन के पास एक सुन्दरी अप्सरा भेजता है। वह तप भंग करने में और अर्जुन को अपने हावभाव इत्यादि से विचलित करने में असमर्थ जानकर निराश हो जाती है। वह अर्जुन से कहती है, "अर्जुन ! क्या तुम मुझे नहीं देख रहे ?" अर्जुन कहते हैं, "देवि ! मैं तुम्हें देख रहा हूं। तुम मुझे कुन्ती के रूप में दीख पड़ती हो।" जब इस प्रकार के भाव मनुष्य में आ जाते हैं तभी वह 'मातृवत् परदारेषु' की उज्ज्वल कहावत को चरितार्थ करता है।

इसी प्रकार व्याधि और रोग इत्यादि इन्द्रियों के दुरुपयोग के परिणाम होते हैं। आवागमन में रहकर जीव अपने कृत कर्मानुसार भिन्न-भिन्न योनियों में जाया करता है। जीव जहां जाकर रहा करता है उनमें से कुछ नाम इस प्रकार हैं—प्राण, अपान, वसु, अन्तरिक्षस्थल, कुटी, आकाश, पृथ्वी। जीव को नियम से उत्पन्न होने वाला, पर्वतों में उत्पन्न होने वाला, मर्यादाशील और हंस इत्यादि कहा जाता है। यहां जीव को हंस दो दृष्टियों से कहा गया है।

१. जीव भी हंस की तरह एक जगह से दूसरी जगह जाया करता है। जिस प्रकार दुग्धमिश्रित जल से दुग्ध पृथक् कर दिया करता है उसी प्रकार जीव प्रकृति रूपी जल से ब्रह्म रूपी दुग्ध को पृथक् करके हंस ही नहीं अपितु परमहंस कहलाया करता है।

२. जीव प्राण और अपान से काम लेता हुआ शरीर के मध्य में रहता है। सम्पूर्ण इन्द्रियां उसकी आज्ञाओं का पालन करती हैं।

३. जीव के शरीर छोड़ देने बाद वह शरीर निकम्मा रह जाता है।

४. शरीर में जीव आश्रित प्राण और अपान रहते हैं और शरीर में इन के रहने से ही उनका तथा अन्य इन्द्रियों का जीवन रहता है। प्राण ऊपर फेंकने को कहते हैं, अपान नीचे फेंकने को कहते हैं। उपदेश यह है कि प्राणायाम करना चाहिये। आज के उन्नत व्यायामों के साथ यदि प्राणायाम किया जाय तो मनुष्य सुखी रह सकता है।

प्राणायाम

प्राणायाम से फेफड़े ठीक काम करते हैं। रक्त शुद्ध रहता है और कोई विकार नहीं होता। खारिश, कुष्ठादि रोग नहीं होते।

हार्टफेल

हार्टफेल का कारण कमजोर हृदय होता है। डर पाप से पैदा होता है। संसार का यह अटल नियम है। पश्चिमी सभ्यता बतलाती है कि पाप करना बुरा नहीं, परन्तु पाप ऐसे करो जो प्रकट न हों। कितने दुःख की बात है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक उदाहरण

गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया के होम मेम्बर, जो पीछे से यू० पी० के गवर्नर हो गए थे, हार्टफेल होने से मरे। कहा जाता है कि वे अविवाहित थे। नैनीताल में उनकी मृत्यु पर शोक सभा हुई। उनके साथी एक बंगाली मिनिस्टर थे। उन्होंने बोलते हुए कहा—'उन्हें कोई याद रक्खे या न रखे परन्तु शिमले की मिर्सें हमेशा याद करेंगी।' इस कथन का भाव अपने में स्वयं स्पष्ट है। प्राणायाम से और निष्पाप भक्ति से हृदय पुष्ट होता है। ऐसा करने से हार्टफेल कभी नहीं होता।

शव

आत्मा के शरीर से निकल जाने और कुछ बाकी न रह जाने का अभिप्राय है कि वह शरीर नहीं वरन् शव हो जाता है, और तब यह रुखसत करने योग्य हो जाता है।

पिता-पुत्रादि का सम्बन्ध

पिता-पुत्रादि का भाव न आत्मा में है और न शरीर में। आत्मा और शरीर के मिले हुए संघात को हम पिता, पुत्र इत्यादि कहते हैं। ये सम्बन्ध तब तक रहते हैं जब तक यह संघात रहता है। यही इन सम्बन्धों की वास्तविकता है। जब मनुष्य इस वास्तविकता को समझ लेता है तब उसे मृत्यु विह्वल नहीं कर सकती। मनुष्य न प्राण से जिन्दा है, न अपान से। जिन्दा रहता है किसी दूसरी चीज से। उसी चीज के ये दोनों आश्रित हैं। आत्मा के शरीर के साथ रहने को "जीवन" और शरीर से वियोग को "मृत्यु" कहते हैं।

ईश्वर

जो सोते हुए मनुष्य के भीतर जागा करता है, जो शरीर के भीतर काम किया करता है, उसे ही ब्रह्म, शुक्र इत्यादि कहते हैं।

ब्रह्माण्ड में ईश्वर किस प्रकार रहता है ?

आत्मा के मौजूद रहने मात्र से जैसे शरीर का काम चला करता है उसी प्रकार ईश्वर के ब्रह्माण्ड में रहने मात्र से ही संसार का काम चला करता है और करोड़ों प्रकार की रचनाएं होती रहती हैं। ईश्वर जगत् की, मनुष्य की उत्पत्ति का निमित्त कारण है। वह महान् है। जितने लोक हैं सब उसके आश्रित हैं। जिस प्रकार अग्नि एक भूत है और जिस वस्तु के भीतर होती है उसी तरह नजर आने लगती है इसी तरह ईश्वर जगत् में अपनी व्यापकता से जिस-जिस वस्तु के तुल्य रूप वाला होता है परन्तु उस वस्तु से वह सदैव पृथक् रहता है जैसे कमल जल से। न ईश्वर उसमें लिप्त होता है, न वह वस्तु ईश्वर में लिप्त हो सकती है। इस लिप्त न होने की बात को स्पष्ट करने के लिये एक उपमा दी गई है। आँखों में देखने की योग्यता सूर्य से आती है, इसलिए कहा गया है कि समस्त लोक का चक्षु होते हुए भी जिस प्रकार सूर्य आँखों के बाह्य विकार से पृथक् रहता है उसी प्रकार जगत्पिता ईश्वर संसार की बुरी वस्तु में व्याप्त होते हुए भी उसके समस्त विकारों से अलग रहता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपदेश

ईश्वर को सदा ऐसा समझना चाहिए कि वह सब जगह मौजूद है। अग हम ऐसा समझ लें तो पाप करने के लिये कोई जगह नहीं मिलेगी और हम पापों बच जायेंगे। नास्तिकता से ही पाप होते हैं। जो लोग ईश्वर से मुख मोड़ते हैं पाप से रिश्ता जोड़ते हैं। पुनः मनुष्य इन उपायों द्वारा तभी फायदा उठा सकता जब वह ईश्वर की ओर चलता है।

---

४. कथासार

सुख प्राप्ति की अभिलाषा सभी को होती है परन्तु उनमें कित मनुष्य उसके वास्तविक रूप को जानते हैं।

सुख, दुःख, पाप और पुण्य का वास्तविक रूप, सुख के भेद, सु रहने के उपाय, शान्ति और सुख का भेद, नियम पालन का महत्त्व, इन्द्रि का पृथक्त्व, अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी वृत्तियां तथा उनका आवागमन बन्धन से सम्बन्ध, चित्त की वासनाओं का त्याग आदि विषय इस कथा विस्तार से समझाये गये हैं।

बहनो और भाइयो !

कल आप लोगों को जीव का स्वरूप बतलाने के बाद ईश्वर-विषय का आर किया गया था और यह बतलाया गया था कि ईश्वर किस प्रकार समस्त ब्रह्म और प्राणिमात्र में परिपूर्ण है और किस प्रकार वह प्रकृति और मनुष्य के विक और गलाजत से पृथक् रहता है।

सुखी रहने के उपाय

आगे बतलाया गया है कि ईश्वर एक है, वह सबको वश में रखने वाल सब भूतों का आत्मा है। सबकी हस्ती उसकी सत्ता की वजह से है। एक रस वाली प्रकृति को यह बहुत रूपों में कर देता है। सूर्य, पहाड़, चांद प्रकृति के वि हैं, ये सब ईश्वर की रचना से बनते हैं। उसका ईश्वरत्व यही है कि वह एक को अनेक चीजों में परिणत कर दे। जब मनुष्य उसे अपने भीतर देखता है मनुष्य को सुख प्राप्त होता है।

सुख के भेद

सुख दो प्रकार का होता है। पहला सुख वह जो संसार की वस्तुओं से प्राकृतिक वस्तुओं से—मिला करता है। दूसरा सुख आनन्द कहलाता है। जब आ अपने भीतर कार्य करता है, उस समय जो सुख प्राप्त होता है वह आनन्द कहलाता प्राकृतिक सुख द्वन्द्व है। जहां भूख है वहां दुख है। आनन्द निर्द्वन्द्व है, इसमें कि दूसरे प्रकार की बात नहीं है। यह आनन्द आत्मा के कर्तव्य से ही प्राप्त होता मन, बुद्धि और इन्द्रियों से नहीं प्राप्त होता।

सुख-दुःख पाप-पुण्य क्या हैं ?

उपनिषद् और वेदों ने सुख-दुःख इत्यादि की व्याख्या को बहुत सरल दिया है। संस्कृत की विशेषता उसके शब्दों में निहित है। संस्कृत के 'सुख' शब्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थ और सुख के साधन के लिए इस शब्द से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। सुख "दो शब्द सु + ख से मिलकर बना है।" सु = अच्छा + ख इन्द्रिय अर्थात् सुख नाम ही अच्छी इन्द्रियों का है। इसी प्रकार दुःख = दुः = बुरी = ख = इन्द्रिय) बुरी इन्द्रियों को कहते हैं। आवश्यक है कि सुखी बनने के लिए अपनी इन्द्रियों को अच्छा बनाया जाय। संसार के सुख क्षणिक होते हैं। उदाहरण के लिए शक्कर को जबान पर रक्खो। तुम प्रसन्न होओगे। इच्छा होती है कि शक्कर का स्वाद हमेशा आता रहे पर असल में जबान पर रखते ही स्वाद आयेगा बाद में कितनी ही देर उसे रखते रहो उसमें वह स्वाद नहीं आयेगा जो रखते समय आया था अर्थात् वह क्षणिक ही है। यही बात अन्य सांसारिक सुखों के सम्बन्ध में जानो।

इन्द्रियों का सुख उनके अच्छे बने रहने में ही है, परन्तु आनन्द के सम्बन्ध में यह बात नहीं। यह आनन्द आत्मा से सम्बन्धित है और चिरकाल तक रहने वाला है। जो आत्मस्थ होकर ईश्वर का चिन्तन करते हैं उन्हें ही यह मिलता है। आगे कहा गया है कि ईश्वर नित्यों में नित्य है उसमें शंकराचार्य ने पदच्छेद करते हुए "नित्यो-ऽनित्यानाम्" अर्थात् अनित्यों में नित्य है कहा है परन्तु इस प्रकार की बात नहीं है। उपनिषद् में बतलाया गया है कि ईश्वर के अतिरिक्त और भी चीजें नित्य हैं यथा जीव और प्रकृति। वह चेतनों में मुख्य रीति से चेतन है, बहुतों में एक है। जो जीवों के प्रति कर्मफलों को देता है उस परमात्मा को धीर मनुष्य आत्मस्थ होकर देखते हैं उनको बहुत काल तक रहने वाली शान्ति प्राप्त होती है।

शान्ति और सुख का भेद

शान्ति में हमारे से कुछ जाया करता है और सुख में कुछ आया करता है। उदाहरण के तौर पर जैसे बुखार के उतारने पर तकलीफ चली जाती है और शान्ति प्राप्त हो जाती है परन्तु ईश्वर-मार्ग के पथिकों को सुख और शान्ति दोनों प्राप्त हुआ करती हैं। जब तक मनुष्य ईश्वर की ओर चलने का यत्न नहीं करता तब तक उसे सुख और शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। ईश्वर की तरफ चलने की योग्यता तभी आती है जब हम प्रतिदिन के व्यवहार में सच्चाई लावें।

ईश्वर और आत्मा का प्रकाश

आगे ईश्वर का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जहां ब्रह्म का साक्षात् हुआ करता है वहां सूर्य चन्द्र अग्नि तारों का प्रकाश निष्फल है। कुछ काम नहीं दे सकता। इसलिए इनमें से किसी के प्रकाश में देखने की इच्छा करना व्यर्थ है। तात्पर्य यह है कि उसीके प्रकाशित होने और उसीके दिए हुए प्रकाश से यह सूर्यादि प्रकाशित हुआ करते हैं। फिर उसी के दिए थोड़े प्रकाश से इस प्रकार उस महान् विलक्षण ज्योति पुंज को कोई कैसे देख सकता है? जैसे आत्मा के प्रकाश से मन, बुद्धि, इन्द्रियां काम देने लगती हैं वैसे ही ईश्वर के प्रकाश से सूर्य चन्द्रादि काम देने लगते हैं। यह आस्तिक बुद्धि मनुष्य के भीतर होनी चाहिए।

वृक्ष शरीर

आगे कहा है कि मनुष्य का शरीर वृक्ष के सदृश है। यह शरीर वृक्ष तो है किन्तु अलौकिक है। वृक्षों की जड़ नीचे होती है किन्तु शरीर रूपी वृक्ष की जड़ ऊपर होती है अर्थात् मनुष्य के शरीर में शिर जड़ स्थानीय है और हाथ, पांव आदि शाखाओं के सदृश हैं। अर्थात् वृक्षों से मनुष्य शरीर की बनावट इस अंश में सर्वथा विपरीत है। यह वृक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थोड़े अरसे तक रहने वाला है और नित्य भी है। ये दोनों बातें इसलिए हैं कि वर्तमान मानव-शरीर तो बहुत थोड़ी देर तक रहने वाला है परन्तु मनुष्य योनि जो सृष्टि काल में बराबर बनी रहती है और प्रलय के बाद फिर प्रकट हो जाती है, नित्य है। इसी का नाम प्रवाह से नित्य होना है। जिस प्रभु ने ऐसे शरीर को रचा वह उसका निमित्त कारण है। वह महान् है, अमृत है। उसी में सब लोक ठहरे हैं। कोई भी उसके नियम को नहीं तोड़ सकता, आगे कहा है। संसार में जो कुछ दिखाई देता है वह सब परमात्मा में गतिमान् है, सारा ब्रह्माण्ड ईश्वर के भीतर है। यह ब्रह्म हाथ में वज्र लिए के सदृश महान् भय वाला है। सबको नियम में चलाता है। सूरज, चांद, सितारे सब उसी के भय से अपना काम कर रहे हैं। इस जगत् के प्रत्येक कार्य में जो नियम पाया जाता है वह नियम का दिया हुआ है। हाथ में वज्र लिए हुए है, इसका स्पष्टीकरण यह है कि नियमों का ठीक-ठीक पालन भय से ही हुआ करता है। संस्कृत की एक आख्यायिका है कि जब संसार में मत्स्य न्याय जारी हुआ तब त्याग की सृष्टि हुई। मत्स्य न्याय का अभिप्राय निर्बलों की सबलों से रक्षा ही है। जिस प्रकार न्यायी राजा के राज्य में शान्ति कायम रहती है और सब प्रजा अपने धर्म का यथाविधि पालन करती है इसी प्रकार ब्रह्माण्ड का राजा ईश्वर वज्र हाथ में लिए खड़ा रहता है। सब पर न्याय करते हुए सूर्य, वायु, चन्द्र और मृत्यु इत्यादि में ठीक-ठीक कार्य कर रहा है।

नियम पालन का उदाहरण

जब अफ्रीका के बोर से लोगों से इंगलैण्ड का युद्ध हुआ तब बोरों ने शुरू में अंग्रेजों को हराया। अंग्रेजों के सेनापति ने हार होते देखकर एक चाल चली। वह चाल कैम्पों में रात को रोशनी कतई बन्द कर देने की थी। एक सेनापति को दूसरे दिन लड़ना था। उसकी एक बहिन थी। उसने युद्ध में जाने से पूर्व अपनी बहिन को रात में एक चिट्ठी लिखने का इरादा किया। उसने एक डेरे में पर्दे के भीतर जाकर लैम्प चलाया। प्रधान सेनापति को इसकी खबर लगी। वह फौरन आया लैम्प जलाने का कारण पूछा। सेनापति ने सब हाल सच-सच बयान कर दिया। प्रधान सेनापति ने पूछा, 'क्या तुमने चिट्ठी खत्म कर दी' सेनापति ने कहा 'हां'। प्रधान सेनापति ने कहा 'इस चिट्ठी में यह भी लिख दो कि यह मेरी अंतिम चिट्ठी है।' यह कहकर प्रधान सेनापति ने नियम भंग के अपराध मे सेनापति को गोली से उड़ा दिया। अभिप्राय यही है कि नियमों का पालन ढीलेपन से नहीं कराया जा सकता। नियम भंग कभी नहीं करना चाहिए। जब मनुष्य इस मर्यादा को समझ कर उसे अपने जीवन में धारण कर लेता है तब ही उसका कल्याण होता है।

इन्द्रियों का पृथक्त्व

आगे कहा है कि पृथक्-पृथक् उत्पन्न हुए इन्द्रियों के पृथक् भाव को और जो उनके उदय और अस्त हैं उनको जानकर ज्ञानवान् पुरुष—शक नहीं कर सकता। जो आदमी आत्मा से इन्द्रियों के पृथक्त्व और इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त हुए सुख के क्षणिक होने के तथ्य को समझ लेता है वह दुःखों से मुक्त हो जाया करता है। तात्पर्य यह है कि जब मनुष्य को आत्मा और इन्द्रियों का निश्चयात्मक ज्ञान हो जाता है, तब शरीर की तकलीफ अनुभव नहीं हुआ करती। कल्पना करो कि आपके शरीर के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किसी अंग में पीड़ा है, आप यदि उससे अपना ध्यान हटाकर दूसरी जगह ले जायेंगे तो निश्चय ही आप उस दुःख को दुःख नहीं समझेंगे।

बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी वृत्ति

जब तक मनुष्य की बहिर्मुखी वृत्ति रहती है तब तक वह आवागमन के बन्धन से नहीं छूटा करता है। जब अन्तर्मुखी वृत्ति से आत्मा और परमात्मा का साक्षात् कर लिया करता है तब आवागमन के बन्धन से छूटकर मनुष्य मुक्त हो जाया करता है।

चित्त की वासनाएं

जब चित्त के सहारे रहने वाली वासनाएं नष्ट हो जाती हैं तब वासनाओं के मरने पर मनुष्य अमर पद प्राप्त करता है। यहां तक उपदेश की बातें थी। आगे आचरण की बात है। अमल द्वारा ही मनुष्य इन उपदेशों से फायदा उठा सकता है, अन्यथा नहीं। इसके लिए विशेषज्ञों का आश्रय लेना चाहिए। इसे शास्त्र नहीं बतला सकते।

कठ उपनिषद् की समाप्ति

अन्त में यह बतलाया गया है कि जीवन मुक्त मनुष्य का आत्मा इस शरीर से किस प्रकार निकलता है :—

हमारे शरीर में एक सौ एक मुख्य नाड़ियां हैं। उनमें से एक नाड़ी चोटी में निकलती है। मनुष्य का प्राण किसी न किसी मार्ग से आंख, कान इत्यादि से निकलता है। जब तक इन मार्गों से निकलता रहता है तब तक आवागमन से नहीं छूटा करता। जब चोटी की नाड़ी से, जिसे सुषुम्ना कहते हैं, निकलता है तब आवागमन के बन्धन से छूट जाता है।

सार

सार यह है कि मनुष्य जब तक आवागमन के बन्धन में रहता है तब तक वह प्राणों के जरिये से एक जेलखाने (योनि) से निकालकर दूसरे में भेज दिया जाता है। जब स्वतंत्र होता है, निष्पाप होता है और इसे प्रकृति का बन्धन नहीं होता तब वह स्वतन्त्र प्रवृत्त्या निकलकर परमगति को प्राप्त कर लिया करता है।

यम के उपदेश के सम्बन्ध में अंतिम बात

अंत में कहा गया है कि यम के उपदेश को नचिकेता ने ग्रहण करके और उसके अनुकूल आचरण कर निष्पाप होकर ईश्वर को प्राप्त किया। अन्य नर नारी भी जो इस उपदेश के अनुकूल आचरण करेंगे, निष्पाप होकर ईश्वर को प्राप्त कर सकेंगे।

शिक्षा

मनुष्य को यत्न करके अपने लोक और परलोक को सुधारना चाहिये और इसके लिए उसका जीवन ऐसा होना चाहिए कि वह अन्तिम ध्येय की ओर मनुष्य को ले जाना वाला हो। ध्येय ईश्वर प्राप्ति का रहना चाहिए। उसक प्रत्येक काम इसी ध्येय से शासित होने चाहिये। जब ऐसा होने लगता है तब ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह अन्तिम ध्येय को पहुंचता है। इस शिक्षा का मतलब यह नहीं कि सांसारिक कार्यों को छोड़ दो या उनसे उपराम हो जाओ। सांसारिक काम करो अवश्य, परन्तु मर्यादा के साथ और अपने ध्येय को सामने रखते हुए। आत्मनिरीक्षण के द्वारा उस ध्येय के अधिकाधिक निकट पहुंचने का यत्न करो।

५. कथा-सार

इस कथा में पांच कर्त्तव्य बताये गये हैं, जिनसे ब्रह्म में प्रवेश का अधिकार मिलता है। ब्रह्मविद्या क्या है? अनासक्ति की महत्ता; सांसारिक वस्तुओं में केवल प्रयोगाधिकार समझने का मृत्यु के वास्तविक रूप के समझने से क्या सम्बन्ध है? कर्मशील बनने से ही पूर्णायु प्राप्त हो सकती है। सकाम और निष्काम कर्म क्या है? मनुष्य आत्मा के अनुकूल कार्य करके ही आत्मजगत् म विशिष्ट हो सकता है आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

बहनो और भाइयो !

जैसे कि कल सूचना दी गई थी, आज ईशोपनिषद् की कथा शुरू की जाती है। ईशोपनिषद् यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय है। इस उपनिषद् में जो शिक्षाएं दी गई हैं, उनको वेद अथवा उपनिषदों की शिक्षा का सार कह सकते हैं। इस प्रकार उपनिषदों की शिक्षा वेद-मूलक है, यह स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं है। इस उपनिषद् के तीन भाग हैं।

पहले भाग में शुरू के तीन मन्त्र हैं जिनमें पांच कर्त्तव्यों का विधान किया गया है। उन कर्त्तव्यों को अमल में लाने से आदमी ब्रह्म में प्रवेश करने का अधिकार हासिल करता है।

दूसरे भाग में चार से आठवें मन्त्र तक हैं। इनमें ब्रह्मविद्या वर्णन है और इन्हीं पांच मन्त्रों में ब्रह्मविद्या के मुख्य-मुख्य सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है।

तीसरे भाग में मनुष्य के कर्त्तव्य का विधान किया गया है कि किस प्रकार ब्रह्मविद्या को प्राप्त करे। यह भाग नौ से सोलहवें मन्त्र तक पूरा हो जाता है। १७वें मन्त्र तक महत्त्वपूर्ण परीक्षा की बात कही गई है और आखिरी मन्त्र में प्रभु से स लता की प्रार्थना की गई है। इसी प्रार्थना के साथ उपनिषद् समाप्त हो जाती है।

पांच कर्त्तव्य

१—ईश्वर को प्रत्येक स्थान म मौजूद समझना।

२—संसार की तमाम चीजों को भोगते हुए यह भी ध्यान रखना कि ये सब वस्तुएं ईश्वर की हैं। भोक्ता का इनमें केवल प्रयोग का अधिकार है।

३—किसी का धन या अधिकार न लेना।

४—कर्त्तव्य समझ और फल की इच्छा से रहित सदैव पुरुषार्थ करना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५—अंतरात्मा के विरुद्ध आचरण न करना।

पहला कर्त्तव्य

यह सब जो कुछ पृथ्वी पर चराचर वस्तुएं हैं, वे ईश्वर से आच्छादित है। ईश्वर जगत् में आकाशवत् परिपूर्ण है। दुनिया की हर चीज आकाश में है और आकाश हर चीज में व्याप्त है। जगत् की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर मौजूद है। ब्रह्म-विद्या के जिज्ञासु को इस बात की महत्ता भली-भांति समझ लेना चाहिये।

महत्ता

मनुष्य को बुराइयों और पाप से अपने को तथा दूसरों को बचाना जरूरी है। यदि मनुष्य आस्तिकता से परिपूर्ण हो और ईश्वर को हर जगह व्याप्त समझे और समझे कि उसके हर एक अच्छे और बुरे काम को ईश्वर देखता रहता है; तब उसे कहीं भी पाप या बुराई करने के लिए न जगह ही मिले और न साहस हो। नास्तिकता के वशीभूत होकर मनुष्य पाप करता है। मनुष्य जब अपने को पापों से बचाना चाहे तो जरूरी है, कि उसके हृदय में ईश्वर की श्रद्धा हो।

दूसरा कर्त्तव्य

आगे कहा गया है कि 'उसी ईश्वर के दिए हुए पदार्थों का भोग कर, किसी के भी धन का लालच मत कर।'

उपनिषद् संसार के किसी भी भोग का निषेध नहीं करता। तुम धन का, दौलत जिमींदारी का, सबका, भोग करो, परन्तु इनके प्रयोग में भावना यह होनी चाहिये कि यह ईश्वर की है और उसने हमें प्रयोग के लिए दी है। जब इस प्रकार का भाव आ जायेगा, तब वह न अपने धन को धन समझेगा अर्थात् उनसे ममत्व दूर होगा और उनको छोड़ते समय उसे दुःख नहीं होगा।

समझने योग्य बात

उपनिषद् की सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षा मृत्यु के सम्बन्ध में है अर्थात् मृत्यु बहुत कष्टप्रद नहीं बल्कि सुखप्रद है। मनुष्य का प्रातः काल बाल्यावस्था में और अन्त बुढापे में होता है। बुढ़ापे की अवस्था प्राप्त कर लेने पर मृत्यु रूपी रात्रि आती है। और वह उस वृद्ध आदमी को छोटे बालक के रूप में परिणत कर जाती है। मृत्यु आराम देने, बुढापे रूपी थकावट को दूर करने और मनुष्य को नये जन्म रूपी नई जिन्दगी, उत्साह और पुरुषार्थ देने वाली है। तब फिर वह क्योंकर कष्टप्रद हो सकती है?

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं—"मेरे और तुम्हारे बहुत से जन्म बीते हैं। मैं इस बात को जानता हूं, तुम नहीं जानते। यह जन्म मरण रूपी चक्र अनादि काल से चला आया है और अनन्त काल तक जब तक मोक्ष नहीं मिलेगा, चलता ही रहेगा।" यह तो सिद्धान्त की बात है। परन्तु जब हम दुनिया के अमल को देखते हैं तब हम मृत्यु को बड़ा डरावना पाते हैं। उदाहरण के रूप में एक कोढ़ी को लीजिए जो बहुत ही पीड़ित है परन्तु फिर भी मौत के नाम और कल्पना से ही डर जाता है।

मृत्यु कष्टप्रद नहीं वरन् सुखप्रद है, इसकी संगति कैसे हो? जब मनुष्य गम्भीरतापूर्वक विचार करता है तब उसे इन दोनों की संगति स्पष्ट दीख पड़ती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। एक साहूकार है, वह मरता है, उसकी धन-दौलत एक तरफ रह जाती है, और वह दूसरी तरफ चला जाता है। ए.. राजा है, वह बड़े और सम्भ्रांत राज्य का मालिक है, मृत्यु आती है, उसका राज्य एक तरफ चला जाता है और वह दूसरी तरफ चला जाता है। स्पष्ट है कि मृत्य का काम मनुष्य को उन चीजों से, जो प्राप्त हैं, अलग कर देना ही है। जब मनुष्य अपनी चीजों से, स्वयं अपनी प्रसन्नता से अलग हो जाया करता है तब उसे दुःख नहीं होता और जब वह जबरदस्ती अलग किया जाता है, तब दुःख होता है। प्रसन्नता से तभी अलग होता है। जब वह उन चीजों को केवल अपने प्रयोग की वस्तु समझता है।

प्रसन्नता से तब नहीं छोड़ता जब उसमें उसकी ममता होती है या जिन्हें वह अपनी समझता है। ठीक यही बात मृत्यु और संसार की वस्तु और भोग के सम्बन्ध में है।

एक उदाहरण

एक हंसने वाला आईना होता है उसमें देखने पर आपको अपनी शक्ल बहुत खराब दीख पड़ेगी और दूसरे शीशे में अगर आप अपनी शक्ल देखेंगे तो खराब नहीं दिखाई पड़ेगी। इसमें दोष किसका है? आईने का या शक्ल का? दोष आईने का ही है! इसी तरह मौत तो अच्छी चीज है। जब हम उसे ममता के आईने में देखते है, तब हमें मौत डरावनी दीख पड़ती है परन्तु हम ममता से पृथक् करके देखते हैं तब हमें डरावनी नहीं मालूम पड़ती।

इंग्लैण्ड के एक डाक्टर का परीक्षण

इंग्लैंड के Hough Lons Dale Hands नामक एक डाक्टर ने परीक्षण किया कि मृत्यु दुःख देने वाली है या नहीं उसकी उम्र ६३ वर्ष की थी। उसने परीक्षण के लिए जहर तैयार किया, जिससे मृत्यु धीरे धीरे हो। उसने जहर पी लिया और परीक्षण करने लगा और परीक्षण को एक नोट-बुक में लिखने लगा। उसने नोटबुक में लिखा है—

'Japs are right Death is lovely. I feel fine and no pain.'

अर्थात् जापानी ठीक कहते हैं। मृत्यु प्यारी है। तात्पर्य यह है कि हम संसार की चीजों में अपना प्रयोगाधिकार समझ लेते हैं तब हमें मृत्यु सुखदायी होती है।

तीसरा कर्त्तव्य

आगे मन्त्र में यह बतलाया गया कि तुम दूसरे के धन को मत लो।

संसार के झगड़ों का कारण मुख्यतया संपत्ति और अधिकार हैं। इनके छीनने से शान्ति नहीं रहा करती। संसार की वर्तमान अशान्ति का कारण संपत्ति और अधिकार ही हैं। आत्म-चिन्तन के लिए शान्त वातावरण चाहिए। इसके लिए मनुष्य को यत्न करना चाहिए और अपने यत्नों का मार्ग-प्रदर्शक, यही शिक्षा रखनी चाहिये।

चौथा कर्त्तव्य

आगे दूसरे मन्त्र में बतलाया गया कि 'यहां कर्मों को करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। इस प्रकार तुझ मनुष्य में कर्म नहीं लिप्त होगा। इससे भिन्न कोई मार्ग नहीं है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आशय यह है कि आलसी बनकर तुम पूर्ण आयु भोग नहीं कर सकते। तमोगुण की वृद्धि से चर्बी बढ़ जाया करती है। इससे नपुंसकता पैदा होती है। नपुंसकता आयु कम कर देती है और मृत्यु हो जाया करती है। इसलिए उपनिषदों ने कहा पुरुषार्थमय जीवन व्यतीत करना चाहिये। कर्म करते हुए जीना चाहिये, परन्तु वे कर्म बन्धन के हेतु न हों।

कर्मशील बनने के लिए हमें संसार की प्रत्येक चीज से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। संसार की कोई भी चीज ठहरी हुई नहीं। संसार को संसार इसीलिए कहते हैं कि वह गतिमय है। सूर्य, चन्द्र, सितारे, पृथ्वी इत्यादि ग़रज कि परमाणु-मात्र गतिमय हैं। परमाणुओं से अणु बनते हैं, अणु से चीजें बनती है। अणुओं में भी कम्पन (vibrations) मौजूद हैं। जब तक ये अणु हिलते रहते हैं, तब तक ही कोई चीज बनी रहती है। यदि ठहर जाएं तो संसार में कोई भी चीज बनी रहती। जब संसार में कोई भी चीज ठहरी हुई नहीं है और सब चीजें गतिमान् हैं, कर्ममय हैं, तब मनुष्य कैसे कर्म करने से बच सकता है? इसलिए मनुष्य को भी कर्मनिष्ठ होना चाहिए। जिन व्यक्तियों वा जातियों ने इस सिद्धान्त की अवहेलना की वे पुरुषार्थ हीन हुए। उनका नाम भी दुनिया से उठ गया। आज पुराने मिस्र के लोग कहां हैं? आज रोम जैसा विशाल सम्राज्य कहां है?

'कर्म बन्धनमय न हो' इस पर विचार, करने पर मालूम होगा कि कर्म दो प्रकार के हैं—

(१) सकाम कर्म

(२) निष्काम कर्म

सकाम और निष्काम कर्म का भेद निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है। कल्पना करो कि तुम्हारे पड़ोसी के घर में आग लगी है। तुम बुझाने के लिए जाते हो। जाते समय तुम्हारे मन में दो भाव हो सकते हैं—एक भाव यह कि जब कभी तुम्हारे ऊपर आपत्ति आवेगी तो वह पड़ोसी तुम्हारी मदद करेगा। दूसरा कर्त्तव्य समझ कर दुःख दूर करने का। (क्रमशः)

एक नया पोस्टर

जनवरी-फरवरी के जन-ज्ञान के मुखपृष्ठ पर जो चित्र छपा है, उसका बड़ा ५१×७६ सेंटीमीटर साइज का तिरंगा पोस्टर हमने तैयार कराया है।

एक पोस्टर 'हम सब हिन्दू हैं' पहले भी तैयार है। पोस्टरों का मूल्य ८०) सैकड़ा है पर प्रचार के लिए १,००० पोस्टर—पुस्तकें मंगाने पर ४००) हजार दे रहे हैं।

अपने नगर में १,००० पोस्टर लगवाइए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयुर्वेदसम्मत हेमंत ऋतुचर्या

—वैद्य मुनिदेव उपाध्याय

आयुर्वेद में षड्ऋतुएं वर्णित हैं। शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् और हेमन्त। हेमन्त और शिशिर शीत ऋतु के ही भेद हैं।

शीत ऋतु में मनुष्य का बल श्रेष्ठ रहता है। जठराग्नि प्रबल होती है। धातुओं का इसी कारण सम्यक् परिपाक होता है।

वर्तमान में स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से हम सर्वप्रथम हेमन्त ऋतुचर्या पर ही विचार करेंगे। इस ऋतु में रात्रियां दीर्घ व दिन छोटे होते हैं, अतः प्रातःकाल से ही क्षुधा लगने लगती है। प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर रुचि के अनुसार भ्रमण करें। पुनः तेल मालिश, विमर्दन और हाथ पैरों का हल्का व्यायाम श्रेष्ठ है। उबटन लगावें। स्नानादि के पश्चात् पुनः स्निग्ध वस्तुओं का प्रयोग करें। गुड़ से बने पदार्थों या आसव का भी सेवन करें। गेहूं, पिट्ठी, उड़द, गन्ने के रस और दूध का सेवन करना चाहिये। नूतन अन्न, वसा और तेल का भी सेवन करें। गरम वस्त्रों का प्रयोग करें। युक्ति से सूर्य की किरणों की धूप लें। पैरों को गरम रखें। तात्पर्य जूते आदि के धारण से है।

शरीर में वायु का कोप न हो इसलिए गरम पानी से ही स्नान करें। सिर व नेत्रों पर गरम पानी न डालें। इससे केश झड़ते हैं, नेत्रज्योति नष्ट होती है। स्नान से पूर्व यदि केशर-कस्तूरी मिश्रित लेप कर लिया जाये (जो केवल धनिक वर्ग के लिए सम्भव है) तो शीत से बाह्य बचाव हो सकता है। शीत के अन्तः उपचार के लिये स्निग्ध रस के प्रयोग बतलाते हैं, परन्तु शाकाहारी व्यक्ति के लिये उड़द, गुड़, घृतबहुल पदार्थ ही श्रेष्ठ हैं। गरमी-सरदी का संयोग न होने दें।

हेमन्त ऋतु में स्निग्ध पदार्थ पथ्य है। शीत को हरने के साथ-साथ बलवृद्धि भी करता है। वर्षा, शरद् और हेमन्त में सूर्य का दक्षिणायन काल है। इसी से इसे विसर्गकाल कहते हैं। विसर्ग का अर्थ त्याग है। इसे छोड़ने का समय कहा गया है। सूर्य प्रथम ग्रीष्मादि के ग्रहण किये रस को छोड़ता है। सोम (चन्द्रमा) का तेज बढ़ता है। इसी लिये इस काल में अम्ल, लवण और मधुर तथा स्निग्ध बलवान् माने गये हैं। हेमन्त में मधुर रस की वृद्धि होती है।

व्यायाम व अभ्यंग से लाभालाभ

अभ्यंग से वृद्धावस्था, थकान तथा वायु के प्रकोप नष्ट होते हैं, नेत्रज्योति बढ़ती है, निद्रा भली भांति आती है, त्वचा से झुर्रियां दूर होती हैं। शिरोरोग, कर्ण रोगों का नाश होता है। कफ से पीड़ित वमन-विरेचन जिसने लिया हो, ऐसे अजीर्ण से ग्रस्त रोगी को अभ्यंग हानिकारक है।

इसी प्रकार व्यायाम से जहां अनेक लाभ हैं, वहां हानि भी है। शक्ति सन्तुलन के साथ ही व्यायाम उपयुक्त है। वात-पित्त के रोगियों और अजीर्ण वालों को व्यायाम नहीं करना चाहिये, क्योंकि उससे वायु और पित्त की वृद्धि होती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालक के लिए दिन भर की दौड़-धूप ही उसका व्यायाम है। व्यायाम के साथ-साथ स्निग्ध भोजन आवश्यक है। शीतकाल व बसन्त में व्यायाम करना चाहिये। अन्य ऋतुओं में शक्ति के सन्तुलन को देखकर। अति व्यायाम से क्षय, रक्त-पित्त, वमन, ज्वर, श्वास आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

स्नानविषयक पथ्यापथ्य

स्नान से लाभ ही लाभ हैं, परन्तु शीत ऋतु में विशेषतया पक्षाघात, नेत्र, मुखपाक, कर्णरोग, अतिसार, आध्मान और पीनस के रोगी को स्नान नहीं करना चाहिये। भोजन के तुरन्त पश्चात् स्नान करने से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

दुग्ध, फलों आदि में पथ्यापथ्य

सेब, संतरा, केला, अनार, बादाम, अखरोट, किशमिश, काजू आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन हितकर है। मध्यमवर्गीय लोगों के लिए मूंगफली, चने, गाजर, टमाटर, मेथी, मूली आदि गुणकारी हैं। इनमें सभी विटामिन उपलब्ध होते हैं। शीत ऋतु में आंवला मानव के लिए वरदान है। पिण्डखजूर और पेय पदार्थों में नीरा विशेष उपयोगी है। अमरूद, नारंगी, पपीता और चीकू भी इस ऋतु में सेवन करने योग्य हैं। नींबू और मधु सेवनीय हैं। मधु को अमृत कहा जाता है। यह हृदय, मस्तिष्क, आमाशय तथा यकृत् को अनुपम बल प्रदान करता है। पित्त प्रकृति वालों को मधु का सेवन नहीं करना चाहिये। कफ व वात प्रकृति के लोगों के लिए मधु उत्तम है। मधु को गाजर और प्याज के रस के साथ सेवन करना गुणकारक है। दूध जहां अमृत है, वहां सावधानी न रखने पर विष बन जाता है। नींबू, खटाई का साग, दाड़िम, कैरो नमक, दही, कुलफी, छाछ, बथुआ, सूखे शाक, मूली, केला, गुड़, उड़द, लहसुन, प्याज, गर्म चीजें, तिलों का तेल, खिचड़ी, दूध के साथ अपथ्य हैं। दूध रात्रि में शयन से पूर्व लेना चाहिये—विद्यार्थियों व अविवाहितों को प्रातःकाल।

रसायन सेवन

यौवन में ही रसायन सेवन की शास्त्राज्ञा है। बालक व वृद्ध रसायन के प्रभाव को सहन नहीं कर सकते। तप के बिना वृद्ध व्यक्ति रसायन के वीर्य को नहीं झेल सकता। रसायन से दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। परन्तु बिना चिकित्सक के सान्निध्य के कोई भी व्यक्ति रसायन सेवन का पात्र नहीं है। कुछ प्रयोग शीतकाल में वरदान सिद्ध हो सकते हैं, जैसे शुद्ध शिलाजीत, च्यवनप्राश आदि, परन्तु इन्हें भी चिकित्सक के परामर्श से ही सेवन करें।

शीतकाल में होने वाले प्रमुख रोग व उनसे बचाव

आमवात, गृध्रसी (सायटिका), श्वास, कास, प्रतिश्याय, वात श्लेष्मिक ज्वर, वातिक ज्वर, सूर्यावर्त्त, अर्धावभेदक पामा श्वसनक ज्वर (न्यूमोनिया) आदि इस ऋतु में व्यावहारिक तौर पर फैलते हैं। इनसे अधिकतर पूर्वरोगी, जो इस रोग से ग्रस्त हैं, वे विशेष रूप से आक्रान्त होते हैं।

अतः इनसे बचाव हेतु प्रयत्नरत रहना चाहिये। वायु-जल प्रदूषण इन दिनों विश्वव्यापी समस्या है, अतः जहां तक सम्भव हो, इन्हें शुद्ध रूप में ही सेवन किया जाए। कारखानों-मिलों और चिमनियों के धुएं से जहां बचाव सम्भव हो, किया जाना चाहिये। (शेष अगले पृष्ठ पर नीचे)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नशीली रसीली लहर

—स्व० पंडित चमूपति

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥ २ ॥

ऋषि—मधुच्छन्दाः—मीठे संकल्प वाला ।

(सोम) हे सोम ! (स्वादिष्ठया) अत्यन्त रसीली (मदिष्ठया) अत्यन्त नशीली (धारया पवस्व) धारा के रूप में प्रवाहित हो। (जीव-जगत् को) पवित्र कर ! (सुतः) तेरा जन्म इस लिए हुआ है कि (इन्द्राय पातवे) मैं इन्द्रियों का राजा तेरा पान करूं ।

मोहन ! तेरा प्रेम-रस अत्यन्त रसीला, अत्यन्त नशीला है। जिसने इसका एक घूंट पी लिया, उसे दुनिया की सुध-बुध न रही । संसार जिसे दिन कहता है, वह उस के लिए रात है। संसार जिसे रात कहता है, वह उस के लिए दिन है। वह पागल है। अपनी मस्ती में बहा जाता है। एक तरंग है कि वह उस पर सवार है। कैसा पवित्र, कैसा बेलाग नशा है ! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार—कोई भी मल ऐसा नहीं जो इस नशे के साथ लगा रहे ।

इस नशे का पान साधारण जन नहीं, केवल राजा लोग करते हैं। तो हम भी तो अपनी देव-पुरी के राजा हैं। हमारे को स्वयं वेद अयोध्या—युद्धों से बचाने लायक, अजेय—नगरी कहता है। हम इन्द्रियों के स्वामी हैं। हमारा संयम-रूप स्वराज्य अटल है। हमारा अधिकार है कि हम सोम का—प्रभु-प्रेम के संजीवन-रस का—जी भर कर पान करें ।

बहती नवल नशीली धार॥
झूम झूम मद-माती लाती,
सुख-संजीवन सार ।
रोम-रोम बन ओंठ चूसता,
ऐसा सरस खुमार ।
मेरी देव-पुरी के राजा !
करो ग्रहण उपकार ।
बहती नवल नशीली धार ॥

(पृष्ठ ७९ का शेष)

जीवन का पहला सुख नीरोग काया है, जिसे हम नीरोग रह कर ही प्राप्त कर सकते हैं।

जीवेम शरदः शतम्

अदीनाः स्याम शरदः शतम् अर्थात् हम दीन-हीन न रह कर और शारीरिक व्याधियों से मुक्त होकर सौ वर्ष—शरदः शतात् सौ से भी अधिक वर्षों पर्यन्त जीवित रहें। यजुर्वेद में उल्लेख है कि केवल सौ ही नहीं भूयश्च शरदः शतात्—सौ से अधिक वर्ष पर्यन्त जीवित रहें। यह तभी सम्भव है, जब हम जीने की कला का निरन्तर अभ्यास कर सकें। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

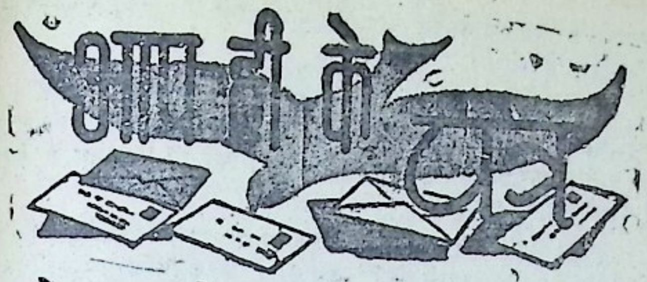

गोधरा के इक़बाल यूनियन स्कूल में क्या हो रहा है ?

महोदय,

गोधरा में मुस्लिम एजुकेशन ट्रस्ट की ओर से इकबाल यूनियन हाई स्कूल नाम का विद्यालय सन् १९४४ से चल रहा है। पहले यह वोहरा समाज के प्रतिनिधियों के हाथों में था। तब स्टाफ के सदस्यों में हिन्दुओं की संख्या पर्याप्त थी। प्रिंसिपल भी हिन्दू था। अनेक हिन्दू छात्र-छात्राएं थीं। धीरे-धीरे प्रबंधक समिति ने उसका रूप बदलना शुरू किया। हिन्दू शिक्षक नौकरी छोड़कर जाने लगे। वे योग्य थे, इसलिए अन्यत्र प्रिंसिपल लग गये। वोहरा कमेटी के सदस्यों को भी चलता कर दिया गया। उनके स्थान पर कट्टर मुसलमान आ गये। धीरे-धीरे हिन्दू छात्र-छात्राओं की संख्या कम होने लगी।

अब स्थिति यह है कि यहां का प्रिंसिपल, जो एक मुसलमान है, कट्टर सांप्रदायिक है। ट्रस्ट का अध्यक्ष एक ऐसा व्यक्ति है, जो पाकिस्तान का नागरिक था। संसद् सदस्य पीलू मोदी की कृपा से उसे भारत की नागरिकता मिली। पाकिस्तान में भी उसकी प्रवृत्तियां बहुत खतरनाक थीं। २९ अक्टूबर सन् १९८० को गोधरा में दंगा हुआ। तब से इस व्यक्ति पर पांच मुकद्दमे चल चुके हैं। इनमें से कई खतरनाक अपराधों के लिए हैं। वह तीन बार नजरबन्द किया जा चुका है। इन दिनों भी जमानत पर छूटा हुआ है। वह और उसके साथ ही प्रिंसिपल भी मुस्लिम शिक्षकों को शह देते हैं। सभी मुस्लिम शिक्षक खतरनाक प्रवृत्ति के हैं।

इस समय इस विद्यालय का भवन नगर के मध्य में स्थित है। समीप में ही पांच हाई स्कूल, तीन मिडिल स्कूल, सिनेमा, छोटी-मोटी डिस्पेन्सरियां और दो बैंक हैं। मतलब यह कि यह भवन केन्द्रीय स्थल पर है। आज तक यहां कभी सांप्रदायिक दंगा नहीं हुआ। कभी किसी छात्र को किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंची। फिर भी कुछ लोग विद्यालय के अपने मकान को छोड़कर इसे मुस्लिम क्षेत्र में ले जाना चाहते हैं।

इस समय विद्यालय के माध्यमिक विभाग में ७ हिन्दू शिक्षक हैं। प्राथमिक विभाग में तीन हिन्दू शिक्षक हैं और कुल मिलाकर ३ हिन्दू चपड़ासी। तीन हिन्दू शिक्षिकाएं हैं। इनमें से एक सिंधी है और दो ईसाई हैं। हिन्दू छात्र-छात्राओं की संख्या २० से अधिक है। जिस स्थान पर इस विद्यालय को ले जाने का विचार है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह खतरे से भरा है। अब जबकि नगर में शांति है और कर्फ्यू भी उठ चुका है, तब विद्यालय के स्थानांतरण का अभिप्राय है हिन्दू शिक्षकों और छात्र-छात्राओं को खतरनाक स्थिति में धकेलना।

हमने एक शिष्टमंडल ले जाकर ये सब बातें कलेक्टर को बताईं। गुजरात के गृहमंत्री प्रबोध रावल को भी स्थिति से अवगत कराया गया। सब लोगों को हमारी बातें सुनकर आश्चर्य हुआ। यह सब हुआ; फिर भी विद्यालय के स्थानांतरण का निश्चय ज्यों का त्यों है।

रावल साहब ने समिति के सदस्यों से पूछा कि "क्या तुम विद्यालय को पाकिस्तानी रूप देना चाहते हो?" इस समय भी यह विद्यालय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के निर्देशन में चल रहा है। उक्त विश्वविद्यालय का स्नातक मुहम्मद हसन शहीद दरगाही यहां शिक्षक है। वह देशद्रोही है। गृहमंत्री ने समिति से कहा है कि "तुम अपना नया भवन बनवा लो; फिर तुम अपने विद्यालय को स्थानांतरित कर सकते हो।" फलस्वरूप समिति विद्यालय का नया भवन बनवाने में जुट गयी है। इसके लिए उन्हें अरब देशों से भी सहायता मिल रही है। नया भवन बनने में अब कुछ ही समय शेष है। जब विद्यालय दूर चला जायेगा तब हिन्दू अध्यापकों और छात्रों के लिए वहाँ पहुंचना कठिन हो जायेगा। प्रस्तावित भवन में ३२ कमरे हैं। वर्तमान इमारत किराये पर सरकार को देने का विचार है। वास्तविक उद्देश्य यह है कि जैसे भी हो, हिन्दुओं को इस विद्यालय से लाभान्वित न होने दिया जाये। इन दिनों भी इस विद्यालय की प्रवृत्तियां खतरनाक हैं। जब यह विद्यालय नये भवन मे चला जायेगा, तब तो सांप्रदायिक प्रवृत्तियों का केन्द्र और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का एक रूप ही बन जायेगा। इस बात से सरकार भी चिन्तित है।

विद्यालय के प्रिंसिपल के पास जमीअत-उल-उलेमाये हिन्द का साहित्य नियमित रूप से आता है। इसी से आप प्रिंसिपल की मनोवृत्ति का अनुमान लगा सकते हैं। नया भवन बन जाने पर वह क्षेत्र एक नया पाकिस्तान ही होगा। पिछले स[illegible] वर्ष से एक नया सिलसिला शुरू हुआ है। हिन्दू त्यौहारों के अवकाश के दिन काटकर मुस्लिम त्यौहारों में शामिल कर दिये जाते हैं। मजे की बात यह है कि उन मुस्लिम त्यौहारों पर न तो गुजरात सरकार छुट्टी रखती है और न म्युनिसिपल विद्यालय। कुछ वर्ष पूर्व विद्यालय के संचालकों ने वंदेमातरम् गीत गवाना बंद कर दिया था। तब तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हितेन्द्रभाई देसाई के आदेश पर सरकार ने परिपत्र जारी किया कि वंदे मातरम् गाना होगा अन्यथा अनुदान नहीं मिलेगा। तब वंदेमातरम् का गान आरम्भ हुआ। इस विद्यालय में मुहम्मद अली जिन्ना की फोटो भी लगी हुई है।

वंदेमातरम् न गाने पर एक अध्यापक को स्कूल से निकाल दिया गया था लेकिन समिति ने न केवल पुनः उसकी नियुक्ति कर दी है, अपितु उसे पदोन्नत भी कर दिया है। मैं पूछता हूं कि क्या स्कूल पर कोई कानून लागू नहीं होता? इस विद्यालय का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये।

एक भुक्तभोगी, गोधरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमानों के साथ यथायोग्य बरताव किया जाये

महोदय,

मैंने आप द्वारा प्रकाशित पुस्तिका "हम सब हिन्दू हैं" पढ़ी। इसे पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई और दुःख भी हुआ। प्रसन्नता हुई विचार पढ़कर और दुःख हुआ यह सोचकर कि हम लोग हिन्दू धर्म के नियमों का पालन तो करते ही नहीं फिर हिन्दू धर्म की दुहाई क्यों देते हैं? मैं जानना चाहता हूं कि आपके हिन्दू सम्मेलनों में जो लोग उपस्थित होते हैं, उनमें से कितने चोटी रखते हैं और यज्ञोपवीत धारण करते हैं?

आपको सबसे पहले तो हिन्दू की पहचान बतानी होगी और उसे उसके कर्त्तव्य बताने होंगे।

हिन्दू रक्षा समिति की मांगों में चौथी मांग यह है कि देश के किसी भी भाग में नया मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाये। आपकी यह माँग सर्वथा उचित है। मुसलमानों ने सन् १९४७ में भारत का विभाजन करवाया। अब उन्हें पाकिस्तान चले जाना चाहिये। हम इस मांग की पूर्ति से ही संतुष्ट न होंगे कि नये मुस्लिम विश्वविद्यालय न खुलने दिये जायें। हमारी मांग तो यह है कि सब मुसलमानों को पाकिस्तान भेज दिया जाये। भारत का संविधान ही ऐसा है कि हमें मुस्लिम खतरे का सामना करना पड़ रहा है। धर्मनिरपेक्षता के रहते अधिक की तो बात ही क्या, अभी तक तो हम हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा ही नहीं बना पाये।

हिन्दू स्वभाव से धर्मनिरपेक्ष हैं। अनेक हिन्दू मस्जिदों में जाकर सिजदे करते हैं और दीप जलाते हैं। क्या आपने कभी किसी मुसलमान को भी मन्दिर में जाते देखा है? एक-आध अपवाद की बात छोड़ दीजिए। इसी प्रकार भारत में सैकड़ों मस्जिदें हैं, पर क्या पाकिस्तान में मंदिर सुरक्षित हैं?

लक्ष्मणदास शर्मा
बलांगीर (उड़ीसा)

जगजीवनराम को पब्लिसिटी न दें

श्रीमान् वेदभिक्षु: जी,

सप्रेम नमस्कार।

आपने बाबू जगजीवनराम विषयक समाचार प्रकाशन हेतु भेजा, सो प्राप्त हुआ।

मेरे विचार में जगजीवनराम अपना स्थान बनाये रखने के प्रयास में हैं। हिंदुस्थान के नहीं, पूरी जनता के नहीं, केवल दलित हिन्दुओं के नेता बने रहने की इच्छा में ही तृप्त हैं। इस उद्देश्य से वे अब तीव्र गति से अलगाव की भावनायें उकसा रहे हैं। दलित हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के कार्यक्रम आयोजित कर वे हिन्दुओं को—हिन्दुस्तान के शासन को चिढ़ाने में भी व्यस्त हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसी अवस्था में यह उचित नहीं होगा कि उन्हें किसी भी प्रकार की पब्लिसिटी अपने पत्रों द्वारा प्राप्त हो।

मैं आशा करता हूं कि आप सहमत होंगे।

गोपाल गोडसे

महामन्त्री, अ० भा० हिन्दू महासभा, नई दिल्ली

सब भारतीय हिन्दू हैं

महोदय,

भारतवर्ष में हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति का गठन और आवश्यकता विधि की विडम्बना नहीं तो और क्या है कि आज हम अपने घर में ही दास बन गये हैं। अपने धर्म, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति का कोई सम्मान नहीं है और विवशतावश हमें अपने धर्म की अपने ही देश में रक्षा हेतु रक्षा समिति का गठन करना पड़ रहा है। संकट चाहे किसी भी दिशा से आ रहे हैं, उसके लिए हम स्वयं ही दोषी हैं, क्योंकि हमने अपने समाज को संगठित करने की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। हमारे विचारों में भिन्नता हो सकती है परन्तु राष्ट्र हित पर कभी दो विचार नहीं हो सकते। भारतवर्ष में जो भी रहता है वह हिन्दू है या भारतीय, उसमें कोई अंतर नहीं है। अब जो भी मुसलमान या ईसाई बने हैं वे हिन्दुओं की ही सन्तान हैं। उनके धर्मपरिवर्तन का मूल कारण आर्थिक और सत्तात्मक ही है। यदि इन मिशनरियों को मिलने वाले धन पर रोक नहीं लगती तो केवल प्रचार सामग्री से कोई काम बनने वाला नहीं है। हम भूखे रह सकते हैं परन्तु कभी और किसी के आगे हाथ नहीं पसारेंगे—यह भाव जब तक हमारे देश के नेतृत्व के हृदय और मस्तिष्क में नहीं पैठता, जब तक बाहर से आने वाले पैसे पर रोक नहीं लगती लोग मुसलमान और ईसाई बनते रहेंगे। एक बार उनके स्रोत बंद हो जायेंगे, तो उनके कार्यकलाप स्वयंमेव बंद हो जायेंगे। आशा है आप इस दिशा में कोई ठोस कदम उठायेंगे, नेतृत्व को बाध्य करेंगे।

हरीश डावड़ा

भुवनेश्वर (उड़ीसा)

सर्वतोमुखी क्रान्ति कैसे हो ?

महोदय,

मैंने आपका आह्वान पढ़ा। आपका प्रयास उत्तम एवं सराहनीय है। फिर भी इस सम्बन्ध में मेरे कुछ सुझाव हैं आशा ही नहीं, वरन् विश्वास है कि आप उसे मूर्तरूप दे सकेंगे। सुझाव। निम्नलिखित हैं—

भारत का यह दुर्भाग्य रहा है कि हम लोग बहुत अच्छी-अच्छी योजनायें बनाते हैं, परन्तु उन्हें बहुत ही कम कार्यान्वित करते हैं। हम लोग कुछ हरिजनों के धर्मपरिवर्तन पर उत्तेजित हो रहे हैं, परन्तु अनेकानेक कारणों से हिन्दू समाज के अन्य लोग भी हजारों की संख्या में प्रतिदिन अन्य धर्म ग्रहण कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में हमारे समाज के लोगों को कोई चिन्ता नहीं है। समाज की अन्य कुरीतियों के कारण इतनी बड़ी संख्या में भी होते हुए हम लोग अन्यमनस्क हैं। इसकी पृष्ठभूमि में मेरा यह सुझाव है कि प्रत्येक ब्लाक स्तर पर एक अनाथालय, सह अस्पताल, सह-कुटीर प्रशिक्षण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्कूल चल ... उत्पादन के ... होंगे। ...ाये। ब्लाक स्तर पर सफल प्रयास के उपरान्त जिले के ...र पर सुनियोजि... त इनका प्रासार किया जा सकता है। इन्हें निर्यात से भी ...बन्धित किया जा सकता है। इनकी सफलता प्रबन्धक के चरित्र पर निर्भर करती ...। मेरे विचार से एकात्मता लाने का, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का, ...र्थिक दशा सुधारने का तथा राजनीतिक क्रान्ति लाने का यह एक बहुत बड़ा केन्द्र-...न्दु हो सकता है। इस कार्य में मैं आपको हर सम्भव सहायता देने का विश्वास ...लाता हूं। आशा है कि मेरे विचार पर ध्यान देंगे और पत्रिका के माध्यम से ...गत करायेंगे।

नरेशचन्द्र अग्रवाल
आचार्य एवं अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग;
मगध विश्वविद्यालय, गया

(आपके सुझाव नोट कर लिये गये हैं। —सम्पादक)

जन-जागरण का कार्य आप ही कर सकते हैं

महोदय,

'नवम्बर' के जन-ज्ञान में यह पढ़कर कि आप थक चुकी हैं और उत्तराधि-...री की तलाश में हैं, दुःख हुआ। आप और वेदभिक्षु: जी का कार्य प्रशंसनीय ...। हम स्वयं भी हिन्दू समाज को यथाशक्ति जगाने में लगे हैं। मेरे अनुभव के अनु-...र आज सुदूर देहात के हिन्दू भाइयों को जगाना अत्यावश्यक है। विश्व हिन्दू ...रिषद् का एक कार्यकर्त्ता होने के नाते मैं देखता हूं कि अपने अनेक हिन्दू संगठन हैं, ...भी आप लोगों को छोड़कर सही ढंग से कोई झकझोर नहीं पाता। आज आव-...कता है इस्लाम और ईसाईयत से खुले संघर्ष की और विश्व हिन्दू परिषद् या ...न्य संगठन अद्यावधि सहभाव बनाये रखने की बात करते हैं जिसका खुले शब्दों में विरोध करता हूं। प्रशासन और राजनेताओं से कोई भी आशा हमारा भ्रम ...। 'भूप समझत' और नहीं कुछ छोड़ खड्ग की भाषा को' इस सिद्धान्त को चरि-...र्थ करना ही समस्या का समाधान है। जब तक यह कांग्रेस-आई की सरकार और ...सके पिट्ठू हैं, हिन्दू पिटते रहेंगे, इसमें सन्देह नहीं। आज हमें योजनाबद्ध ढंग से ...न्दुत्व के उत्थान में लगना होगा और मेरी समझ में उसका प्रथम चरण है—जगह-...गह ऐसी शिशु संस्थाओं का निर्माण, जो प्रारम्भ से हिन्दू बच्चों में हिन्दुत्व की ...भावना भर सकें। दूसरी ओर खुले संघर्ष की भी आवश्यकता है। मंगलविधान के ...लिए अमंगल तत्वों का शमन नितान्त आवश्यक है—चाहे उसके लिए जो भी मार्ग ...पनाना पड़े।

रामचन्द्र पांडेय
नेचुआ जलालपुर (बिहार)

यज्ञ की महिमा

महोदय,

अमेरिकन नागरिक श्री बेरी रेथनर पुणे विश्वविद्यालय से यज्ञ के मनोवैज्ञानिक ...भाव पर पी-एच. डी शोध प्रबन्ध लिख रहे हैं। वे १५ दिसम्बर को इन्दौर आये ...। उनके यहां कालेज एवं कतिपय संस्थाओं में यज्ञ पर व्याख्यान हुए। वे मेरे पास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आकर बहुत देर तक यज्ञ के विविध रोगों पर तथा वर्षा की भी प्रकाराव के बारे में जानकारी प्राप्त करते रहे। पुनः १७ दिसम्बर को प्रात र ही स्थान पर यज्ञ करने का निश्चय किया। १७ की प्रातः ६-४५ पर वे ... में अपने तांबे के हवन कुण्ड, गोघृत और समिधा को लेकर उपस्थित हुए। ठीक सूर्योदय के समय मैंने तथा श्री बेरी रेथनर ने अपने-अपने हवन कुण्डों में पृथक्-पृथक् अग्नि स्थापना करके यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात् ३ घंटे तक वे यज्ञ की जानकारी प्राप्त करते रहे। श्री बेरी रेथनर से मैंने ऋग्वेद के प्रथम दो सूक्तों को सुना तथा त्र्यम्बक मन्त्र भी सुना। उन्हें मन्त्र कण्ठस्थ थे। अति शुद्ध ऋग्वेद की ही रीति से सस्वर सुना। उनके उच्चारण में वैसा दोष, जो अंग्रेजी मातृभाषा वालों का होता है, नहीं था। उनके साथ श्री जयन्त पोद्दारजी तथा प्रो० भट्ट भी भोपाल से आये थे।

वीरसेन वेदश्रमी
इन्दौर

"अलीगढ़ विश्व विद्यालय का सांप्रदायिक स्वरूप बदला जाये"

नई दिल्ली। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के अल्पसंख्यक स्वरूप को कायम रखने के सरकारी निश्चय की कठोर शब्दों में आलोचना करते हुए अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की कार्यकारिणी ने मांग की है कि विश्वविद्यालय का वर्तमान रूप देश में विघातक शक्तियों को सहारा देने का कार्य करेगा। समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने बैठक में कहा कि आरम्भ से ही अलीगढ़ विश्वविद्यालय ने भारत विभाजन की भावना को बढ़ावा दिया है और यही विश्वविद्यालय देश के बंटवारे का आधार भी बना। इसलिए एक धर्मनिरपेक्ष शासन द्वारा साम्प्रदायिक वातावरण को जन्म देने वाली संस्था के स्वरूप को कायम रखना आश्चर्यजनक ही नहीं अपितु शासन की आधारभूत नीतियों के विरुद्ध भी है। आपने घोषणा की कि हम सारे देश में सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध आन्दोलन करेंगे और साम्प्रदायिकता को जड़ से उखड़ा फेंकने के लिए हर सम्भव पग उठायेंगे। सरकार को चेतावनी देते हुए प्रस्ताव में कहा गया है कि शासन अपनी दुरंगी नीतियों को छोड़े और देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार देकर समान हित की दिशा में चिन्तन करे। यही आज की मांग है।

आर्यसमाज ने हरिजन बस्तियां अपनाईं

नई दिल्ली। आर्यसमाज जंगपुरा (भोगल) के वार्षिक उत्सव के अवसर पर १३ दिसम्बर प्रातः श्री सुरेन्द्रनाथ जी भारद्वाज (भू.पू. प्रधान आर्यसमाज लन्दन) का स्वागत किया गया। स्वागत करते हुए श्री नवनीतलाल एडवोकेट ने उनसे अनुरोध किया कि वे पाश्चात्य देशों में आर्यसमाज के प्रचार की व्यवस्था करें। इन देशों में आर्यसमाज का प्रचार न के बराबर है, जबकि भारत के दूसरे मत-मतान्तर काफी कार्य कर रहे है। श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने अपने भाषण में भारतवासियों के बच्चों को आरम्भ से अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देने को बहुत ही हानिकारक बतलाया। उन्होंने कहा कि एक बच्चे का अच्छा विकास तभी हो सकता है, जब वह अपनी मातृभाषा में शिक्षा आरम्भ करे। स्थान-स्थान पर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

री पब्लिक स्कूल चलाये जा रहे है। ये देश के बच्चों के लिए लाभकारी न कर हानिकारक होंगे। इसके पश्चात् धार्मिक गोष्ठी हुई, जिसका समारम्भ सत्यदेव जी भारद्वाज ने किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि हरिजन शब्द र अस्पृश्यता को समाप्त किया जाये। हरिजन शब्द का प्रयोग करने से फिर उन गों की एक अलग जाति खड़ी हो गई है, जिसे आर्यसमाज समाप्त करना चाहता । श्री सत्यदेव जी भारद्वाज ने कहा कि यदि हमारे कुछ सिक्ख नवयुवकों को लिस्तान बनाना ही है, तो अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा आदि कई देशों में बहुत खाली स्थान पड़े हैं, जहां जाकर वे अनेक खालिस्तान बना सकते हैं।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि आर्यसमाज में कार्य रने वालों की बहुत कमी है। हमें हरिजनों में प्रचार करने के लिए अनेक कार्य-र्ता चाहिए। महात्मा दयानन्द ने अपने भाषण में मीनाक्षीपुरम् में हरिजनों के मूहिक धर्मपरिवर्तन के कारण बताये। उन्होंने कहा कि मुसलमान वहां लाखों या व्यय कर रहे हैं। उनके प्रचारक विदेशों से वहां आ रहे हैं। जो हरिजन लमान बन गये हैं। उनका रहन-सहन और पहनावा दूसरे हरिजन परिवारों से, मुसलमान नहीं बने बहुत अच्छा है। उन हरिजनों के लिए जो अभी हिन्दू धर्म हैं, धन की अति आवश्यकता है। नवनीतलाल जी ने बताया कि आर्यसमाज लोदी , आर्यसमाज भोगल और आर्य समाज निजामुद्दीन ने अपने समीप की हरिजन तियों को अपना लिया है।

शाहगंज हिन्दू रक्षा समिति के कार्य-कर्त्ताओं को परेशान किया जा रहा है

शाहगंज (जौनपुर)। हिन्दू रक्षा समिति की शाहगंज शाखा के अध्यक्ष श्री कुमार आर्य लिखते हैं कि समिति ने प्रयत्न करके सात जनवरी को बारा बफात निकलने वाला जलूस और आयोजित की जाने वाली, सभा रुकवा दी। सब ला प्रशासन और शाहगंज थाने की पुलिस हिन्दू रक्षा समिति के कार्यकर्त्ताओं परेशान कर रही है। प्रशासन ने धारा १०८ और १११ के अधीन "हिन्दुओं चेतावनी" और "भारत के मुसलमानों का क्या किया जाये?" शीर्षक वाले ट्रैक्टों लेकर मुकद्दमा रजिस्टर कर दिया है। (ये दोनों ट्रैक्ट दयानंद संस्थान, नई ली द्वारा प्रकाशित किये गये हैं। समिति के दल कार्यकर्त्ताओं से चालीस हजार का मुचलका और चालीस हजार रु० के दो जमानतदार मांगे गये हैं। इन र्यकर्त्ताओं में संरक्षक, अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष और कुछ सदस्य सम्मिलित हैं। कार्यकर्त्ताओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया है कि वे ५ महीने तक समिति का ई कार्य न करेंगे। शाहगंज आर्यसमाज के संस्थापक और नगर के वयोवृद्ध सामा-क कार्यकर्त्ता श्री पुरुषोत्तम आर्य व अस्सी-वर्षीय महाशय हीरा को तो बहुत अधिक शान किया जा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इथियोपिया में मुसलमानों ने क्या किया ?

—"विनम्र सेवक"

प्रस्तुत लेख में बताया गया है कि मुसलमानों ने इथियोपिया में अपने शरणदाता शासन के साथ क्या वर्ताव किया। क्या हमारी सरकार इन घटनाओं से शिक्षा लेगी ?

—सम्पादक

विश्व में सम्भवत: ऐसे देशों की संख्या २५ है, जिनमें मुस्लिम जनसंख्या भारतवर्ष की भांति ही अल्पमत में है। यह जानना लाभकारी होना चाहिये कि इस अल्पमत मुस्लिम जनता का व्यवहार अपने पड़ोसी देशों में रहने वाले बहुमत वालों के साथ कैसा रहता होगा। उद्देश्य यह है कि इस जानकारी से यह सम्भव हो सके कि हमारे देश में क्या परिवर्तन लाये जा सकते हैं, जो यहां की स्थिति का सतोषजनक बना सकें और नित्य प्रति होने वाले साम्प्रदायिक कलह का स्थिति को अन्त कर दें। इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम इथियोपिया के देश को चुना जाता है। इसके विशेष कारण हैं, जिनका नीचे उल्लेख किया जाता है—

१. इथियोपिया के, जिसका प्राचीन नाम एबीसीनिया है, अरबों से अन्य देश का तुलना में सर्वाधिक पुराने और घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं। सातवीं सदी में जब हजरत मुहम्मद ने इस्लाम का प्रचार आरम्भ किया था, तब से आज तक के इन सम्बन्धों का इतिहास उपलब्ध है। आरम्भ काल में अरब देश के आदिवासियों इस [illegible] के प्रचार का बड़ा विरोध किया था और इसलिए बहुत-से मुस्लिमों को अपने प्राणों की रक्षा हेतु भागना पड़ा और वे एबीसीनिया के ईसाई शहंशाह की शरण मे जा बसे। परन्तु इन्हीं शरणार्थियों ने बाद में विद्रोह करके ईसाइयों की इस उदारता का पुरस्कार दिया। इन मुस्लिमों ने इस ईसाई साम्राज्य को पूर्णतः नष्ट कर देने का प्रयास किया था और आज तक वही भाव उनके हृदय में लहरें मारता रहता है।

२. इथियोपिया या एबीसीनिया विश्व के प्राचीनतम देशों में से एक है, जहां निरन्तर शहंशाह का अडिग शासन रहा है। ईसा मसीह के पूर्व से लेकर सन् १९७६ तक का, जबकि हाइले सलासी का अन्त हुआ, समस्त इतिहास उपलब्ध है। इसका आरम्भ प्रसिद्ध "सोलोमन और शैबा" के समय से भी पहले का रहा है।

३. वर्तमान समय में समस्त अफ्रीका महाद्वीप के प्रतिनिधि के रूप में इथि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योपिया देश को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अफ्रीकन एकता के मुखिया का स्थान देखा है। वहां अदीस अबाबा में संयुक्त राष्ट्रसंघ का केन्द्र स्थापित किया गया है।

(४) जहां तक हमारे देश के सम्बन्धों का प्रश्न है—सर्वोच्च नेता नेहरू जी की मित्रता और सम्मान, जो उनके हृदय में सम्राट् हाइले सलासी को प्राप्त था, विख्यात है।

इस कट्टर ईसाई धर्म के अनुयायी इतिहास में अपने अतीत काल की अद्वितीयता को संजोए हुए हैं। सदियों तक उनका अस्तित्व एक ईसाई द्वीप की भांति रहा है, जिसके चारों ओर इस्लाम का सागर लहराता रहा हो। ये ईसाई लोग इस अस्तित्व के जीवित रखने के लिये कितना संघर्ष करते रहे और परिणाम-स्वरूप बाद में फूले फले और सर्वोच्च ऐश्वर्य प्राप्त करते रहे, यह वह रहस्य है जिसे सर्वे ऑफ वर्ल्ड कल्चर्स के शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है—

"अतीत काल का युग इथियोपिया के इतिहास में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण माना गया है। वहां की जनता के हृदय में, संस्कारों में सुरक्षित प्राचीन रीतियां सर्वोच्च सम्मान को प्राप्त किये हुए हैं। पूर्वजों की स्मृतियाँ अत्यन्त आदरणीय मानी जाती हैं। अपने ऐतिहासिक दिग्गजों के प्रति उनका यह प्रेम चिरस्थायी है और यह उनमें राजनैतिक और सामाजिक संगठनों की शक्ति का स्रोत सिद्ध होता है।

अब कुछ विशेष परिस्थितियों की ओर ध्यान देने से वास्तविकता का पता चलता है। देश के पूर्वी तट पर तुर्क बन्दूकधारियों का आगमन हुआ—उस समय तक इथियोपिया के योद्धा तीरकमान, भालों आदि से ही लड़ा करते थे। तुर्क साम्राज्य के ऐश्वर्य ने इथियोपियन मुस्लिमों के हृदय में उन्माद को जन्म दिया। उन्होंने इन नवागन्तुक तुर्कों की सहायता से देश के ईसाई वातावरण को समाप्त करके इस्लाम को फैलाने का निश्चय किया। इस धर्मयुद्ध [जेहाद] के नेतृत्व के वास्ते इमाम का पद अहमद इब्राहीम-एल-शाज ने संभाला, जिसे वहां के ईसाई अहमद ग्रान [अहमद बायें हाथ वाला] के नाम से जानने लगे। उसने मुस्लिम सेनाओं को सब ओर से एकत्रित किया—"डनकिल" और "सोमाली" योद्धाओं को तुर्क बन्दूकधारियों से जोड़ कर भयंकर रूप दिया, जो धर्मयुद्ध के लिये तड़प रहे थे।

इस महायुद्ध के वर्णन तथा परिणाम के लिये यह उचित ही होगा कि ज्यां डोरेसे के शोध कार्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाये। वह इथियोपिया के पुरातत्त्व विभाग का डायरेक्टर था और उसका प्रसिद्ध प्रकाशन सिटीज एंड टैम्पल्स ऑफ इथियोपिया सन् १९५६ में जनता के सामने आया। फ्रेन्च भाषा में लिखे गये इस ग्रन्थ का अंग्रेजी रूपान्तर एल्सा कोल्ट द्वारा तैयार किया गया।

"इमाम अहमद ग्रान ने शक्ति प्राप्ति के तुरन्त बाद ही अपने मालिक सुलतान को मौत के घाट उतार दिया और शासन का भार पूर्ण रूप से अपने ऊपर ले लिया। गवर्नर की शाही सेना इस इमाम से लड़ने के लिये १५२७ में पहुंची, परन्तु वह तुरन्त ही पराजित हो गई। तदुपरान्त अहमद ग्रान की धर्मान्ध सेना ने १५४२ तक निरन्तर आक्रमण किये और प्रत्येक युद्ध में विजय पाई। समस्त देश को उजाड़ डाला। कम्बाटा के ईसाइयों का अन्त हो गया। इथियोपिया के अमूल्य संग्रहालयों को, जिन्हें सम्राटों ने सदियों से एकत्रित किया था, भस्म कर दिया गया। स्मारकों और अद्वितीय वस्तुओं का अन्त हो गया, जिनके विषय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में योरोप वासी कभी भी न जान पायेंगे। केवल थोड़े-से लेख ही इस भयानक कृत्य की कथा को कुछ अंशों तक बताने के लिए बच रहे क्योंकि उन्हें उस समय के मुस्लिम लेखकों ने देखने के साथ-साथ ही जल्दी-२ लिख डाला था—पूर्ण आश्चर्यचकित मुद्रा में। एक ऐसे ही लेख में मकाना सेलासी के धर्म स्थान होली ट्रिनिटी के आकाशचुम्बी, १५० फुट ऊंचे, गिरजाघर के ध्वंस किये जाने के विषय में लिखा है कि वह "दूर-दूर से दिखलाई पड़ रहा था। स्वर्ण मण्डित १५० फुट ऊँचाई वाली गिरजाघर की चोटी जगमगाहट से आंखों को चकाचौंध किये दे रही थी। अन्दर छत की ऊँचाई तक अमूल्य हीरे-मोती, सोना-चांदी इत्यादि शोभा बढ़ा रहे थे। बिना समय खोये आततायियों ने सब कुछ लूट लिया और फिर आग लगा दी। इस धर्मस्थान से जुड़े हुए तीन राजमहल थे। उनमें से एक में "अमीर [EMIR]" विश्राम कर रहा था। उसने आनन्द-विभोर होकर अपने सेवकों से पूछा—क्या इसी प्रकार के अद्वितीय संग्रह, कलामूर्तियां इत्यादि अन्य स्थानों में भी स्थित हैं, बेजंटाइन साम्राज्य, भारतवर्ष या किसी अन्य जगह में ?

संक्षेप में यही कह देना पर्याप्त होगा कि जेहादी उन्मादियों ने जो भी सामने दिखा, उसे लूटपाट कर के भस्म कर दिया। हाइक झील से लेकर ताना झील तक का क्षेत्र जन-जीवन रहित हो गया। परन्तु अजेय धार्मिक शक्ति पर केन्द्रित इस क्रिश्चियन शासन की जड़ें हिलीं नहीं। कष्ट झेलते हुए विस्थापित सम्राट् लेब्ना डेंजल ने पुर्तगाल के ईसाई देश से सहायता की प्रार्थना की। उस समय दक्षिण योरोप में तुर्कों का इस्लामी साम्राज्य छा चुका था, इसलिए पुर्तगाली सेनाएँ दक्षिण योरोप के स्थल मार्गों द्वारा पूर्वी अफ्रीका स्थित इथियोपिया में नहीं पहुंच सकती थीं।

फलस्वरूप पुर्तगालियों ने निश्चय किया था कि जल मार्ग ही अपनाया जाये। यह कितना दुर्गम और लम्बा था, यह जानना भी सरल नहीं। अफ्रीका के पूरे पश्चिमी तट और फिर दक्षिण अफ्रीका की परिक्रमा कर के ही पूर्वी तट पर बसे हुए एबीसीनिया तक पहुंचा जा सकता था। इसके लिये विशेष जलयान बनाये गये और नायक की भूमिका सुप्रसिद्ध वास्को डी गामा ने अदा की। इसी सन्दर्भ में अमेरिका का पता लगा, दक्षिण अफ्रीका के आशा अन्तरीप की जानकारी मिली, इत्यादि। वास्को डी गामा की मृत्यु हो गई, परन्तु उसके पुत्र ने संघर्ष जारी रक्खा, जिसका नाम डॉन क्रिस्टोफ डी गामा था। जिस समय यह पोर्चुगीज जल-सेना इथियोपिया पहुंची, तब तक सम्राट् लेब्ना डेंजल मर चुका था और उसका पुत्र क्लाडियस शासन कर रहा था।

प्रथम संघर्ष में ही डॉन क्रिस्टाफ की विजय हुई। उसकी कीर्ति गाथा के रूप में वहां की मस्जिद को गिरजाघर बना दिया गया और "अमीर" की एक पत्नी को क्रिस्टाफ ने अपने साथ रख लिया। परन्तु फिर अगले युद्ध में उसकी पराजय हुई और उसको विकृत करने के बाद उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले गये। उसके उपरान्त शीघ्र ही इथियोपिया की सेना ने इसका बदला लिया। उसने अचानक ही ताना झील पर पड़ाव डाले, जेहादियों की सेना पर छापा मारा और जेहाद के संचालक महान् सेना नायक अहमद ग्रान को मार डाला। यह वास्तविक रूप में संग्राम का अन्त था। यवन सेना भाग खड़ी हुई और अपने सुदूर सोमाली प्रदेश में पहुंचते-पहुंचते रास्ते में ही रेगिस्तानी इलाके में मरती गई। सुलतानी सेना के नष्ट हो जाने के उपरान्त वहां के शासक दनकाली रेगिस्तानी में चले गये, जहां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शत्रु के आक्रमण कम हो सकते थे और वहां आवसा झील के किनारे बसे रहे। बाद में होने वाली लड़ाइयों में निरन्तर उनकी हार हुई और अन्ततः वे समाप्त हो गये। आज़ अदल के विशाल मुस्लिम साम्राज्य का एकमात्र शहर हेपार खड़ा है और सोमाली मरुभमि की अनेक बस्तियों और शहरों के खंडहर मिटे हुए ऐश्वर्य की याद दिला रहे हैं।

अब अपेक्षाकृत नवीन इतिहास की ओर देखिये। इस देश के उत्तर-पूर्व में बसे हुए प्रान्त इरिट्रिया की क्या दशा है? इसे १८९० के लगभग इटली की सरकार ने श्रमिकों के उपनिवेश के रूप में आरम्भ किया था। द्वितीय विश्वयुद्ध में इटली की पराजय हुई और इरिट्रिया पर ब्रितानी सरकार की हुकूमत हो गई। परन्तु १९५१ में उन्होंने स्वतन्त्रता प्रदान करते हुए इथियोपिया और इरिट्रिया को महासंघ का रूप दे दिया। लेकिन शीघ्र ही १९६२ में इस महासंघ का अन्त हो गया, क्योंकि इसकी अपनी संसद ने निश्चय कर लिया कि इरिट्रिया को एक प्रान्त के रूप में इथियोपिया देश में सम्मिलित कर लिया जाये। वहां के मुस्लिमों ने घोर विरोध किया और अब भी कर रहे हैं, परन्तु बेबस हैं। १९६५ में उन्होंने इरिट्रियाई मुक्ति मोर्चे की स्थापना की और उस्मान साल साहब को अपना नेता बनाया। इस नेता ने समस्त मुस्लिम देशों तथा अरबों को रण निमन्त्रण दिया कि वह इरिट्रिया के स्वतन्त्रता संग्राम में सहायता करें।

फलस्वरूप इरिट्रिया में इथियोपिया की सैनिक छावनी स्थापित कर दी गई व ईसाई शासन ने शक्ति का सामना शक्ति से ही किया। ९,००० मुस्लिम इरिट्रिया वासियों को देश के बाहर सूडान में ढकेल दिया गया, क्योंकि उनकी देश के प्रति वफादारी में सन्देह था। इससे सूडान में इन शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या खड़ी हो गई। उधर १९६७ के इस्राईल-अरब युद्ध और मिस्र की हार ने उन सारी आशाओं का अन्त कर दिया, जो इरिट्रियाई मुक्ति मोर्चे ने अरब और मुस्लिम देशों से सहायता प्राप्त करने के लिए लगा रक्खी थी। इथियोपिया की सेना ने अपनी गति तीव्र कर दी और पश्चिम इरिट्रिया के मुस्लिम विद्रोहियों का पूर्णतः संहार कर दिया। सूडान सरकार के साथ समझौता भी हो गया, जिसके अन्तर्गत सूडान के भीतर इरिट्रिया से आये हुए इन शरणार्थियों के बसाने की व्यवस्था की गई। यह भूभाग इथियोपिया-सूडान की सीमा से ५० मील की दूरी पर सूडान में स्थित था। इरिट्रियाई मुक्ति मोर्चे का अन्त इस प्रकार निश्चित था—उन्होंने अब गोरिल्ला युद्ध की पद्धति अपना ली, जो फिलस्तीनियों के पदचिह्नों पर चलने के समान है। उधर शासन ने इरिट्रिया में अपना सैनिक दबाव और अधिक बढ़ा दिया। इरिट्रिया के उन देशभक्त निवासियों को शस्त्रास्त्र बांट दिये गये, जो इथियोपिया के शासन के प्रति वफादार थे परन्तु डर के मारे पहले मुक्ति मोर्चे का साथ देने पर विवश थे।

वर्तमान स्थिति में इथियोपिया को सारे अफ्रीका महाद्वीप के "नायक" की मान्यता प्राप्त है और वहां की राजधानी अदीस अबाबा में अफ्रीकी एकता संगठन का केन्द्र स्थापित किया गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिशन स्कूल या बूचड़खाना?

—जहोर नियाजी

क्या मिशनरी स्कूल वालों की छुपी नीयत की निशानी ईश्वर जाहिर कर देता है? आखिर बच्चों के स्कूल में बन्द होकर मर जाने के सारे किस्से मिशनरी स्कूलों में ही क्यों जन्म लेते हैं?

एक दुःखदतम कहानी—

राजू जब स्कूल से घर न लौटा तो उसके माता पिता बहुत चिंतित हुए। राजू मिशन स्कूल में पढ़ता था और उस स्कूल के सभी बच्चे घर लौट चुके थे। एक नहीं लौटा था तो राजू!

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से सुनिए, क्या बीती मासूम राजू पर—

"मम्मी, मैं भूखा हूं! पापा, मैं प्यासा हूं!!"

मास्टर भूलनराम पागलखाने की दीवार से बार-बार सिर टकराते और एक बच्चे की तरह बिलख-बिलख कर कहते—'मम्मी, मैं भूखा हूं! पापा मैं प्यासा हूं!!...मम्मी, बहुत भूख लगी है! मम्मी, पापा, बहुत प्यास लगी है पापा!!" और वे कमरे में बिखरी पड़ी रद्दी के टुकड़ों को नोच-नोचकर खाते-चबाते...अलमारी में एक दो पुस्तकें थीं, कुछ कापियां थीं। उन्हें वे कब का फाड़-फाड़ कर खा चुके थे...अब डर से ये चीजें कमरे में नहीं रखी जाती थीं। फिर भी किसी रोगी के लिए पावरोटी आती तो उसके पैकिंग के कागज को मास्टर भूलन-राम जी झपट लेते या कागज पेंसिल का कोई भी रद्दी-सद्दी टुकड़ा उन्हें नजर आता, उसे झट उठाकर चबाने लगते और बिलख-बिलख कर कहते—"देखो न मम्मी, कितना भूखा हूं कि कागज खा रहा हूं..."

उनके सामने मिठाइयां, फल और तरह-तरह के हलवे, पूड़ी आदि रखी जाती पर वे इन चीजों को कभी न खाते पर जैसे ही ६-७ वर्ष का कोई भोलाभाला और प्यारा-सा बच्चा उनके सामने आ जाता, वे लपककर उसे अपनी गोद में बैठा लेते और उसे पुचकारते, दुलारते, वे सारी चीजें इस तरह खिलाने लगते जैसे कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मां अपने लाड़ले को खिलाती है। वे उसे खिलाते जाते और उनकी आंखों में खुशी के आंसू होते···वे कहते जाते—"ले खा ले राजू, तू कई सप्ताह से भूखा था न···"

उनकी जो मनोदशा थी, जैसी मानसिक स्थिति थी, उसके मद्देनजर यह बहुत जरूरी था कि राजू जैसा कोई बच्चा उनके सामने हर रोज लाया जाये ताकि उन्हें सुकून मिले। जब उन्हें सुकून मिल जाता, बच्चे को ढेर सारी चीजें पेट भर खिला लेने के बाद, तब वे खुद भी उन चीजों में से थोड़ा-बहुत खा लेते और इस स्थिति में वे जिन्दगी की सांसें जारी रखे हुए थे।

यह एक अत्यन्त दुःखद कहानी है।

मास्टर भूलनराम का नाम तो बड़ा भला-सा था। पर वे कुछ इतने ज्यादा भुलक्कड़ थे, इतना ज्यादा भूलने की आदत थी उन्हें कि सबने उनका नाम ही रख दिया था—'मास्टर भूलनराम।

अक्सर क्लास में भी पढ़ाते पढ़ाते वे भूल जाते और बच्चों से पूछ बैठते—"हां तो बच्चो, मैं क्या पढ़ा रहा था?" और कुछ ऐसा ढंग होता उनके भूलने का कि बच्चे ठहाका मारकर हंस पड़ते—कभी कभी उनके भूलने की कुछ ऐसी अदा भी होती कि बच्चे हंसने की बजाय काफी खीझ उठते और मन ही मन कहते—'न जाने कहां से हमारे सिर पर यह मुसीबत सवार हो गयी—मास्टर भूलनराम के रूप में।'

जिस दिन से गर्मियों की छुट्टी होने वाली थीं, उस दिन तो उनसे इतनी बड़ी भूल हुई कि ईश्वर न करे दुनिया में कोई और इन्सान वैसी भूल करे···उस भयंकर भूल के परिणामस्वरूप जो दुःखद घटना घटी, उसकी कल्पनामात्र से ही कलेजा कांप उठता है।

मास्टर भूलनराम 'बाल वर्ष' के अवसर पर कुछ बता रहे थे बच्चों को, कि उनकी नजर एक जगह ठहर गयी। एक सात-वर्षीय बालक को झपकियां-सी आ रही थीं। यह राजू था। राजेश उर्फ राजू। मास्टर भूलनराम सब कुछ बताना समझाना भूल गये और उन्हें याद रहीं तो सिर्फ राजू की झपकियां। उन्होंने बुरा-सा मुंह बनाते हुए कहा—'यह लो, मैं यहां झक मार रहा हूं, अपना भेजा खराब कर रहा हूं बक बक कर, और यह साहबजादे ऊंघ रहे हैं··" और इससे पहले कि वे राजू का कान मरोड़ते, बेंच पर खड़ा करते, मुर्गा बनाते या कोई सजा देते राजू बेंच पर लुढ़क गया! उस पर नींद हावी हो गयी बुरी तरह!

"ये आजकल के मां बाप ने तो हमारा दिमाग खराब करके रख दिया है··· बच्चों को पढ़ने के लिए नहीं, सोने के लिए भेजते हैं स्कूल! क्लास रूम न हुआ, बेडरूम हो गया!!" मास्टर भूलनराम और भी बकझक करते रहे···फिर उन्होंने झल्ला कर कहा—'जाओ, तुम सब भी मैदान में कबड्डी खेलो! अब हमारा मूड ऑफ हो गया!" सारे बच्चे क्लास से बाहर मैदान में खेलने चले गए। वह आखिरी पीरियड था। उसके बाद क्लास नहीं लगी। कुछ देर बाद छुट्टी की घंटी बजी और सब बच्चे अपना अपना बस्ता संभाल स्कूल बस की ओर लपके। जो पैदल ही अपने घरों को जाते थे, वे पैदल ही चल दिए। लम्बी छुट्टी की खुशी भी लम्बी थी। सो क्लास की एक बेंच पर गहरी नींद में डूबे राजू का खयाल किसी को न रहा। मास्टर भूलनराम तो भूलनराम ही ठहरे, सो उनके खयाल करने का सवाल ही न था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्कूल के सब क्लास रूमों, सब कमरों में ताले लगा दिए गए और सारा स्टाफ अपने अपने घरों को रवाना हो गया। बेचारा राजू अकेला क्लास की बेंच पर पड़ा सोता रहा।

शाम के चार बजे तक सब बच्चे अपने-अपने घरों को हर हाल में पहुंच जाते थे। पर जब साढ़े चार बजे तक भी राजू घर न पहुंचा तो उसके मां बाप कुछ परेशान नजर आए। उन्होंने सोचा, स्कूल से लौटते हुए राजू कुछ सामान तो खरीदने न लगा ? या अपने किसी दोस्त के साथ उसके घर चला गया ? पांच बज गये और राजू घर न पहुंचा तब मां बाप की परेशानी बढ़ गई। परेशानी बढ़ती गई और बढ़नी स्वाभाविक भी थी। मां बाप उन सब स्कूली बच्चों के पास पहुंचे जिनके घर राजू के जाने की संभावना थी। पर राजू का पता न चला।

राजू के माता-पिता ने स्कूल के मास्टरों के दरवाजे खटखटाये। कुछ मास्टरों के घर वालों ने अपने वतन जाने की तैयारी पहले से ही कर रखी थी, अतः उनमें से अधिकतर पाँच से छः बजते बजते उन शहरों या गांवों को जाने वाली गाड़ियां पकड़ चुके थे, जहां के वे रहने वाले थे। मास्टर मूलनराम भी अपने परिवार के साथ अपने गांव के लिए रवाना हो चुके थे। जो मास्टर इसी शहर के थे या जो अपने वतन रवाना नहीं हुए थे, उनसे राजू के माता पिता ने पूछा। सब ने यही जवाब दिया कि स्कूल से छुट्टी पाकर सब बच्चे तो सीधे घर ही जाते हैं। हां, कुछ बच्चे खेल कूद में लग जाते हैं या अपने सहपाठियों के संग उनके घर या कहीं और। अब राजू स्कूल से निकल कर किधर गया, यह कैसे कहा जाए ?

शाम के सात बजते बजते अंधेरा छाने लगा और साथ ही राजू के माता पिता के दिलोदिमाग में भी अंधेरा छाने लगा। आखिर राजू गया कहां ? कहां जा सकता है वह ? हर जगह तो तलाश किया उसे। अब कहां तलाश करें ? किधर ढूंढ़ें ? उन्होंने ढूंढ़ ढूंढ़ कर थक जाने के बावजूद राजू को ढूंढना नहीं छोड़ा—सात से आठ बजे आठ से नौ—यहां तक कि रात के बारह बज गए—पर राजू का कहीं कोई सुराग न मिला। उन्हें तरह तरह के ख़याल सताते—कहीं अपहरण तो नहीं कर लिया गया राजू का ? उन्हें जितने तरह की आशंकाएं घेरतीं, उतना ही ज्यादा वे परेशान हो उठते—मां बेचारी का तो रोते रोते बुरा हाल था।

इस तरह एक मास बीत गया। अखबारों में 'तलाश गुमशुदा' का इश्तहार देने और हर संभव प्रयत्न करने के बावजूद राजू न मिला।

उधर राजू पर क्या बीती ?

राजू जब घर से स्कूल आ रहा था तो उसकी मां बाथरूम में थी अतः उसने घर की महरी को कहा था कि मुझे बाथरूम से निकलने में देर हो सकती है और राजू अभी लैट्रीन में है, उसे स्कूल रवाना होने से पहले वह दवा दे देना जो टेबिल पर रखी है। महरी ने टेबिल पर दवा की शीशी देखी। एक गोली निकाली, कुछ सोचने लगी। फिर उसने पानी के गिलास में उसे डाल दिया और राजू को यह कहकर पिला दिया कि दवा की गोली घोटने में जरा तक्लीफ होती होगी न, सो मैंने इसे पानी में घोल दिया—ताकि आसानी से निगल जाओ। राजू कुछ झिझका, फिर उसने गिलास को गटागट खाली कर दिया। पर यह गजब हो गया, क्योंकि वह शीशी नींद की गोलियों की थी जिसे राजू के पापा इस्तेमाल किया करते थे और राजू को गले की खराबी की वजह से जो गोली दी जाती थी, वह कागज की पुड़िया में बंधी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थी और वह पुड़िया टेबुल से गिर कर रद्दी की टोकरी में पड़ गयी थी जो बाद में कूड़ेकरकट में जा मिली। इस तरह पहली गलती तो राजू की मां की ही थी, जिसने अपने हाथ से दवा न दे कर महरी के हाथ से दिलवाई। दूसरी गलती महरी की थी, जिसने दवा को राजू के हाथ में न देकर पानी में घोल दिया। दवा पानी में न घुलती तो राजू देखकर पहचान लेता और न खाता। खा लेने के नतीजे में राजू पर नींद जो हावी हुई तो वहां तीसरी गलती हुई मास्टर भूलनराम से और यह गलती ही सबसे भयानक साबित हुई।

मास्टर भूलनराम की भूल यह थी कि उन्होंने जैसे ही राजू को झपकियां लेते देखा था, वैसे ही वे उसे उसके घर भिजवा देते। आखिर चेहरे से वह थका, निढाल और बीमार लग ही रहा था। उनकी दूसरी भूल यह थी कि उन्होंने राजू को क्लास की बेंच पर सोता देखकर भी स्कूल के चपरासी आदि को यह हिदायत नहीं की कि देखो, फलां क्लास में एक बच्चा सो रहा है, स्कूल बन्द होने लगे तो उसे जगाकर —उठाकर ही क्लास रूम बंद करना। खैर, इन तमाम भूलों के नतीजे में राजू क्लास रूम में उस वक्त तक बंद रहा, जब तक स्कूल बंद रहा।

गहरी नींद से जब उसकी आंख खुली तो घुप अंधेरा था! वह एक दम से परेशान हो उठा! उसे समझते देर न लगी कि स्कूल बंद हो चुका है और साथ ही वह भी! पर स्कूल तो एक मास बाद खुलेगा, तो तो क्या वह एक मास तक यहीं इसी क्लास में बंद रहेगा? यह खयाल आते ही वह रोने लगा। क्लास में इधर उधर टटोलते टटोलते वह दरवाजे तक पहुंचा। वह रोता जाता था और दरवाजा पीटता जाता था—"दरवाजा खोलो! दरवाजा खोलो!" पर वहां कौन था, जो दरवाजा खोलता? वह खिड़की की तरफ जाकर पुकारने लगा—"मुझे बाहर निकालो, मैं अंदर बंद हूं। मुझे बहुत डर लग रहा है, मुझे बाहर निकालो।" पर वहां कौन था, जो उसकी आवाज सुनता? स्कूल तो आबादी से काफी दूर स्थित था। वह अपने पापा मम्मी को पुकार पुकार कर बेहाल हो गया। उस पर बुरी तरह दहशत छा गयी और वह बेहोश हो गया। सुबह उसकी आंख खुली तो सूर्य का कुछ किरणें रोशनदान से छन छन कर अन्दर फैलती नजर आयीं। उसने महसूस किया कि मारे दहशत के उसका पूरा शरीर तेज बुखार में तप रहा है—उसने उस हाल में भी उठकर किसी तरह खिड़की खोलने की कोशिश की। पर एक तो चिटकनी ऊपर से लगी थी, जहां उसका हाथ पहुंचना भी मुश्किल था, दूसरे जंग लगी चिटकनी इतनी जाम थी कि काफी ताकत लगाने के बावजूद टस से मस न हुई—वह फिर रोने लगा इस बेबसी में! रोते रोते फिर अचेत-सा, कतई निढाल हो गिर पड़ा बेंच पर—बेंच से जमीन पर। इस तरह तीन दिन और तीन रातें गुजर गयीं!

वह भूख, प्यास, बुखार और दहशत के मारे बेहद कमजोर हो गया। वह अब किसी को पुकारने की भी शक्ति नहीं पा रहा था अपने में। उसकी पुस्तकों और कापियों का जो बस्ता था, उसमें से उसने टटोल टटोल कर चाक निकाला और घिसट घिसट कर दीवार तक गया। कमजोर हाथों से जो और जितना लिख सकता था, लिखा—"मम्मी, मैं भूखा हूं।" "पापा, मैं प्यासा हूं।" "मम्मी मैंने तुम को और पापा को बहुत पुकारा। कोई मुसाफिर भी नहीं गुजरा इधर से, जो मेरी आवाज सुनता। मम्मी मुझे पहले दिन बहुत डर लगा। दहशत से बेहोश हो गया। अब तो डरने की भी शक्ति नहीं रही।" इस तरह कापियों पर भी जहां तहां लिखा राजू ने—जो कुछ उस पर बीती और जितना कुछ लिखने की उसमें शक्ति रही।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर एक दिन ऐसा भी आया जब उसके शरीर में हिलने डुलने की शक्ति भी न रही और…

और जब स्कूल खुला गर्मियों की छुट्टी के बाद तो सब ने जो दृश्य देखा, देखते ही होश उड़ गए सब के ! वहां क्लास में एक बच्चे की लाश का पिंजर भर पड़ा था—हड्डियों का ढांचा ! मांस चींटियों और कीड़े मकौड़ों ने खा लिया था। पास ही एक बस्ता पड़ा था जिस पर लिखा था—राजेश कुमार राजू। दीवार पर कागज के टुकड़ों पर जो बातें लिखी थीं उन्हें पढ़ कर कलेजा मुंह को आता था…सारे स्कूल ही में नहीं सारे शहर में कुहराम मच गया। जब राजू की मां वहां रोती कलपती पहुंची तो उसके हाथ में एक मास्टर ने कागज का जो टुकड़ा दिया उस पर लिखा था—"मम्मी, मेरी प्यारी मम्मी, मैंने कई दिन कागज फाड़फाड़ कर खाए, पेंसिल चबाई, पर फिर भी मेरे होंठ सूख रहे हैं, मम्मी भूख प्यास से मेरे कंठ सूख रहे हैं…मेरे प्राण…उफ मम्मी…" राजू की मम्मी और न पढ़ सकीं, वे राजू की पिंजर-रूपी लाश पर गिर गयीं और गिरते ही बेहोश हो गयीं !

और क्योंकि सबसे बड़े खतावार थे मास्टर भूलनराम, सो उनके दिल-दिमाग पर इस घटना का इतना गहरा आघात पहुंचा कि वे अपना मानसिक संतुलन खो बैठे।

राजू ने जो भी लिखा था अपने प्राण त्यागने से पहले, उसे मास्टर भूलनराम ने हर समय रटना और रट-रट कर रोना शुरू कर दिया।

अंत में मास्टर भूलनराम को पागलखाना भिजवाना पड़ा !

राजू की इस दर्दनाक कहानी से मिलती जुलती दो घटनाएं १९७९ में रांची क्षेत्र में घटी थीं और इससे पहले भी न जाने इस तरह की कितनी घटनाएं घटती रही होंगी।

बिहार विधान सभा में दरभंगा मिशनरी स्कूल के एक नन्हे छात्र की इसी तरह मृत्यु होने की चर्चा छिड़ी थी ('रांची एक्सप्रेस' १४/७/८१ के अनुसार)। गर्मी की छुट्टी के बाद जब स्कूल खुला तो क्लास रूम बन्द रहकर मर जाने वाले मासूम बच्चे के हाथ से ब्लैक बोर्ड पर यह लिखा नजर आया—"मम्मी, मैं पेपर खा रहा हूं। मैं चाक चाक खा रहा हूं !"

शिक्षक (देवेन्द्र से)—बताओ, अकबर का जन्म कब हुआ ?

देवेन्द्र चुप रहा।

शिक्षक (क्रोध से) इतिहास की पुस्तक निकालकर पढ़ो।

देवेन्द्र पुस्तक खोलकर जोर से बोला—सर, १५४२ में।

शिक्षक—क्या तुमने यह नहीं पढ़ा था ?

देवेन्द्र—पढ़ा तो था, असल में मैं समझा था कि यह अकबर का टैलीफोन नम्बर न हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi